

हनुमान्नाटक भाषा

अर्थात्

श्रीवरविलास

जिसमें

श्रीरामचन्द्रजी की जन्म से लेकर राजगद्दी पर्य्यन्त कथायें अतिमनोहर दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैयादि छन्दों में वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलहसिंहजी साहब की आज्ञानुसार रतलामनिवासि महन्त श्रीरामाजी चतुरदास ने काव्यानुरागियों के अनुरागार्थ रचना किया ॥

चौथी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् १९१[illegible] ई० ॥

८ जुज़ ५ वर्क़

अथ हनुमन्नाटक भाषा का सूचीपत्र।

इति ॥



श्रीमतेनिम्बार्काय नमः ॥

अथ हनुमान्नाटक भाषा

अर्थात्

श्रीवरविलासः प्रारभ्यते ॥

शालिनीछन्द ॥

वन्दे रामं कोटिकामाभिरामं । मेघश्यामं सर्वदापूर्णकामं ॥ गोविन्दोहंसच्चिदानन्दकन्दं । देवाधीशंजानकीशंजनेशं १ ॥ अनुष्टुप्छन्द ॥ श्रीवरस्यविलासोयं ग्रन्थोरामयशोङ्कितः ॥ हनुमन्नाटकच्छायां गृहीत्वा तन्यते मया २॥ अथ ग्रन्थावतरणिका ॥ शतगुनीस बत्तीस सह १६३२ मेंचक्र श्रावणमास ॥ बुधबासर एकादशी, श्रीबरबदत बिलास ३ पाय कछुक परसंग मम, आगमपुर पिपलोद ॥ दूलह नृप दीन्हों हुकुम, सुनि मन भयो प्रमोद ४ ॥ मत्तगयन्दछन्द ॥ एक समै पिपलोदपुरी प्रति गौन गोबिन्द तुरन्त तहां है । मन्दिर में गणनायकके निज मन्त्रिनयुक्त जनेश जहां है ॥ नाटककी चरचानि चलाय सुनाय दिये बर बैन वहां है । औ नृप दूलहकी उपमा सम पावत सो नृप कौन कहां है ५ श्रीमत रावत साहब दूलह हेरनमें दरशैं नित हाटक । बिप्र गोबिन्द दई उन आय सहीय कृपा-

टनकी उदघाटक ॥ सोहत नाटक रत्नमें मणिमाणिक सों हनुमान सुनाटक। ग्रन्थ नवीन बनै उहि पन्थ न श्रोणपरैं अत्र ओव उचाटक ६ ॥ दोहाछन्द ॥ कारक जगमें मताततै, समझैं सकल रहेश ॥ फाटक हियरेके खुलैं, नाटक पण्डनिशेश ७ आयसु पति पिपलोदकी, लीन्हीं शीश चढ़ाय ॥ पुर शोभा पुरपतिप्रभा, कछु वरणत चितचाय ८ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ थानक थानक होत कथानक बानक मङ्गल आनक बाजैं। मन्दिर मन्दिर अन्दर सुन्दर सेवन देव महोत्सवछाजैं ॥ गेहन गेह सनेह सनै तुलसी थिरथान बिशेष बिराजैं। मोद प्रमोद बिनोद भरी पिपलोदपुरी भुवि पैं भल भ्राजैं ९ ॥ अथ नृपतिवर्णन अमृतध्वनीछन्द ॥ लइजय बल्लि मतल्लिमहँ बंश बल्लिरावल्ल। दुल्लह रावत खुल्लि तित मल्ल बिदल्लीढल्ल ॥ ढल्लल्लखि प्रतिमल्लल्लह नहफल्लल्लजजित। फुल्लल्लोक बिफुल्लल्लोयन बुल्लल्लवतित ॥ तुल्लल्लगाकि अतुलल्लल्लिय जसगुल्लल्लघुवय ॥ दुल्लल्लखत नगुल्लल्लगत प्रबल्लल्लहिजय १० ॥ अथ सिंहआखेटक वर्णन ॥ लखिबे में नवहत्थके, पञ्चानन बड़मत्थ। लत्थ पत्थ लोहन किये, दूलह नृप दुइहत्थ ॥ हत्थिरत्थटिमहँ मत्थत्थितदुइ चित्तत्थिरतुर। सत्थत्तुवक अकत्थत्थिति समरत्थत्थलउर ॥ तत्थत्तित प्रहरत्तत्ताकि तकिजित्ततसनखि। कत्थत्तवन कवित्तत्थुइ सर्वत्तत्तवलखि ११॥ अथ गजवर्णन ॥ कटकटात अटकत नहीं, सोहत बारन शुद्ध। लखि कुञ्जर गलगुञ्जरत, उर उद्धत अविरुद्ध ॥ रुद्धद्धुर अतिकुद्धद्धुर जुरियुद्धद्धरअट। धद्धद्धिन्ना धद्धद्धिन्ना धद्धद्धुवरध ॥ धद्धद्धाकट धद्धद्धाकट धद्धद्धाकट। धुद्धुद्धुधुकट धुद्धुद्धुधुकट धुद्धुद्धुधुकट १२ त्वरवच उचरत महावत सुरजबोलगलगज्ज। रावतदूलह करिनकर गिरिकज्जल छबिसज्ज ॥ छज्जच्छितिधर गज्जज्जल-

धर कज्जजयकर । झुज्झज्झुकिज्झुकिखिज्जिज्झटिति सुलिज्ज-ज्जशबर ॥ भज्जज्जवसुर गज्जज्जवशिर रज्जज्जिनधर । लज्जज्ज-लत्रि निमज्जज्जडधि सलज्जज्जियत्वर १३ ॥ अथ हयशालावर्णन ॥ दिनदुलहा दुलहानृपति, यशजाहिर दशदिश्श। होतरहतहयशा-लजिहिं, संगीतकअहनिश्श ॥ निस्सस्सरिगम धस्सस्सरिगम प-स्सस्सरिगम। गस्सस्सरिगम मस्सस्सरिगम रस्सस्सरिगम ॥ तत्त थ्यइपुनि तत्तथ्यइपुनि तत्तथ्यइतिन। अस्सस्सकज्ज नृपस्सस्सबल बिलस्सस्सबदिन १४ ॥ राजकुमारवर्णन दोहाछन्द ॥ भावत मनरा वत कुँवर, उपजावत आनन्द॥ तीनिहुँमनु त्रिभुवन तिलक,उपमा अखिल अमन्द १५ कलित केसरी केसरी, सोहत सदुपम शेष॥ हिम्मतहिय किम्मतकरन, सकुचत सुकबिअशेष१६॥ सोरठाछन्द ॥ कुँवरकनीयरसाल,राजत अति रघुनाथहरि॥ तीनहुँगुणगणमाल, चितचीनहु सब सुरनर॥ १७॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थावतरणिका वर्णनन्नामप्रथमोल्लासः॥ १॥

तदुक्तंनाटिकावतारे ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वापि नान्दीद्वादशभिःपदैः। आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापितन्मुखम् ॥ इति नान्दीमङ्गलवचनं दोहाछन्द ॥ रावत नरपति हुकुमगहि, धिय धरि अमितहुलास॥ टी-कमसुत गोविन्दद्विज, श्रीबरबदतबिलास १॥ मनोहरछन्द ॥ मङ्गल निधान कलिकिल्बिषहरनहार, पावन पदार्थनको पावनप्रकामहै। नान्दीसत्वर परनपद प्रापतिको प्रस्थितजे, मनुज मुमुक्षु राहखर्च अभिराम है॥ कबिबरबैन बिसरामधाम एकवही, सज्जनको जीवन जरूर बसुयाम है। धर्मबृक्ष बीजहोहु सकल बिभूतिप्रद, रावरसदैव गुणग्राम रामनाम है २ कमला कुचनपत्र रचना बिचित्ररची,मकरी

की मुद्रामञ्जु अङ्कित हृदय है । देवसर्वजगदीश मधूवधूबक्रकञ्ज, मुदित करनहेतु इन्दुसों उदयहै ॥ क्रीड़ाकाज कियो क्रोडकलित कलेवरहै, द्विजचन्द जैसी श्वेतदंष्ट्र समुदयहै । तापैदिपै भूमिकढ़ी प्रलय पयोधि मुस्ता,थ मसालसत ऐसोराम सोसुदयहै ३ शैवशिव धारे ब्रह्म बदत बेदान्तवारे, बौद्धमतवारे बुद्ध बुद्धि में बिचारे हैं । कर्त्ताकहैं नैयायिक जैनी अरहन्तरटैं, मीमांसक कर्म एक ईश्वर उचारे हैं ॥ गावत गोबिन्दहोहु बाञ्छितफलद प्रभु, रैन दिन रावरे सुधारे काज सारे हैं । वह है त्रिलोकीनाथ सीतानाथ रघुनाथ, न्यारे न्यारे लोक न्यारे रूपते निहारे हैं ४ राम वह रावणारि दशरथसूनु लसैं, लक्ष्मण अग्रजात सुगुन समेत है । पूज्यपृष्ठ पूर्णअंघ्रि अन्त लौं प्रतापजासु, सकल सुहाग सिद्धि बिद्याको निकेतहै ॥ आनँदको कन्द कलि किल्बिष पटलध्वंसि, सौम्यदेव सेवातम सर्वको संकेतहै । त्रिभुवन शरण अशरणको शरण सदा, नित्यनिकलङ्कताहि प्रणवौं सहेत है ५ अवधपुरी को भूप दशरथ होतभयो, सूर्यबंश केतुशूर शत्रुन सँहारी है । बली बीर बिक्रमी करीही पुत्रइष्टि ताने, नारायण तबै तासु आश निरधारी है ॥ दुष्ट दैत्य कष्टभूरि भारभयो भूतलपै, तिनके सँहारहेतु चार मूर्त्तिधारी है । जेष्ठ श्रेष्ठ राम लषण भरतरु शत्रुहन, चारों भ्रात मात तात आयसानुसारी है ६ असुरन भूरि भयभीत मुनि बिश्वामित्र, अवध अधीश अङ्गजात युग याचेहैं । औनिप यशस्वी निज चित्तमें दुचित्तहोय, दीन्हे सुत दोय राम लक्ष्मण राचे हैं ॥ सुन्दासुर सुन्दरी प्रहारी ताटकाभिधान, कौशिकहुजानी नृप बालशूर सांचे हैं । बिद्याहृद्य दीनीसद्य अति अनवद्यतदा, काढ़िगे समस्तजे मनोर्थमन काचे हैं ७ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ कौशिकनन्दन आश्रम आय कियो मखतूरन आप अवै हैं । धूम

निहारत आसुर ओघ सुबाहु मारीचिसमेत सबै हैं ॥ श्रीरघुनन्दन कन्द कियो क्षण छांड़ि मरीचि सुजान जबै हैं। कारजलैन कछूक-रयो जिहिते तिहिको तजिदीन तबै हैं ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ सीताको स्वयंबर सुनत श्रौन कियोगौन, मारगमें शिलारूप अहल्या उधा-रीहै। जनकपुरी में जाय सर्ब सतकार पाय, महत महीपनमें पाये शोभ भारीहै ॥ गावत गोबिन्दलखि कोशलकिशोर छबि, चित्रसे भये हैं यत्र तत्र नर नारीहैं। इन्द्रहै कि इन्दुहै कि दिपत दिनेन्द्र किधौं, दशरथनन्द रामचन्द्र बलिहारी है ९ ॥ दोहाछन्द ॥ निरखत निमि नृपनन्दनी, उर उमँग्यो आनन्द ॥ निज मनमधि संकलप कछु, करनलगी स्वच्छन्द १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कच्छप पीठ कठोर यहै शिवचाप है। कोमल मूरति श्रीरघुनन्दन आप है ॥ इनते होय अधिज्य कौन यह बात है। परहां। प्रणदारुण अति कीन अहह तुम तातहैं ११ ॥ मनोहरछन्द ॥ लक्षमणलाय लक्षमणते कहत राम, पेखहु पृथीप पुञ्ज पुञ्ज प्रकटान है। जम्बूद्वीप आदि द्वीप द्वीप के महीप आये, कन्या अरु कीर्तिलाभ मानत महानहै ॥ बङ्कितकि-योकाहु टङ्कित महेशचाप, नमितकियो न कियो उत्थापितथानहै। चढ़ी नाकबान कछु कढ़ीना जबानमुख, मेरे जान बीरताबिहीन भो जहान है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ किय अनन्द रघुनन्दहिय, निज भुज बल बरणन्त ॥ प्रौढ़ी बचन प्रत्यक्षपढ़ि, लच्छ बच्छ हुलसन्त १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ बहुत कहनमें कहा, नाथ सच बचन उचारत। दास रा-वरो खास, लक्षमणधिय यह धारत ॥ गिनौं न गिरिवर मेरु, प्रमुख धनुकीका गिनती। अतिशय जीर्ण पिनाक, करौं प्रभुते यह बिनती ॥ मुहिंहोय हुकम मम लखहु बल, कौन कौन कौतुक करौं। धुकिधरौं मरोरौं मूलजिमि, गहि शतयोजन अनुसरौं १४ ॥

सोरठाछन्द ॥ सुबचनसुनि श्रीराम, नीति निलय निज अनुजके ॥ रघुकुलमणि गुणग्राम, किय निषेध दृगसैनकरि ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामलक्ष्मणसंवादो नामद्वितीयोल्लासः॥ २॥

दोहाछन्द ॥ लाग्यो रावण पुरोहित, बतरावन निमिनाथ ॥ नितप्रति दुहिता रावरी, चितचाहत दशमाथ १ ॥ मनोहरछन्द ॥ देनी है अवश्य मयदुहिता कहूं न कहूं, लेनीचहै लङ्काधीश चितमें बिचारिये। जाके गुणगावें महामुनि मरिच्यादि प्राच्य, धरनीकी रेणुते बिशेष धियधारिये ॥ परमप्रचण्ड दोरदण्डन प्रतापनते, त्रिभुवन तोक लोक मच्छरनिहारिये। ऐसे अवलम्ब आहि कीजिये बिलम्ब नाहिं, अद्य अबिलम्ब आप कारज सुधारिये २ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ असुर पुरोहित पठत राम प्रति बैनहै । धियधारी लङ्काधिराज सिय लैनहै ॥ चितचाहत जो श्रेय निजेच्छा छण्डिये। परहां। त्रिभुवन बिजयी संग बैर नहिं मण्डिये ३ बदत बचन वैदेह पुरोहित पेखिये। यह माहेश्वर धनुष दृष्टिदे देखिये ॥ करिहै याहिं अधिज्य सुता सो पायहै। परहां। अपर सबै खिसियाय आय जिमि जायहै ४ पढ़त पुरोहित सुनो जनक महराजजू। अवलोकत भुज बीस कितक यह काजजू ॥ क्षणमधि चूरण करत धरत नहिं धीरहै । परहां। निज गुरु शिवधनु हेरि सुबिकल शरीरहै ५ बिहँसि बदत मिथिलेश पुरोहित जू रहो। शम्भु बास कैलास लियोकर किमि कहो ॥ गृह उखेरती बेर कियो अबिबेक है । परहां । अब भय क्यों गुरुभाव गही धनुटेकहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥ जिमि लीनो कैलास करि, तिमि धनु कीजे सज्य ॥ नातर निलय सिधाइये, उर आशय संत्यज्य ७ इमि कछु बचन बिदेह बदि, निज उर करत बिचार ॥ अब आगे हूहै

कहा, समझि परत नहिं सार ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ क्षुद्र सकल क्षिति-पाल सुअखिल असक्त है ॥ अष्टयाम दशग्रीव ईश अनुरक्त है ॥ धनुषारोपण शुल्क मुल्क जाहिर कियो । परहां । कसहू है सिय हाय कहत नृप भरि हियो ९ ॥ श्रीवैदेहीवाक्यं ॥ कोमल मूरति कोशलराज किशोर है । शम्भु शरासन कमठ सुपृष्ठ कठोर है ॥ केहि बिधि होय अधिज्य असम्भव बात है । परहां । अति दारुण प्रण कियो अहहु तुम तात है १० ॥ दोहाछन्द ॥ बैदेही बर बचन सुनि, नीर भरे नृप नैन ॥ तबै पुरोहित क्रोध करि, कहन लग्यो कछु बैन ११ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ संयुत शम्भु शिवागणनायक स्कन्दननन्दि गिरिन्द्रउठायो । बिक्रम बेश पराक्रम पुञ्ज दशाननको क्षितिछोरन छायो ॥ भूप बिदेह बिचार करौ हिय चाप चढ़ावन वाहि बतायो । आवत मोहिं अचम्भ महा इहिमें तुमका पुरुषारथ पायो १२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ उपरोहित आक्षेपकरि, उरउमंग अधिकाय ॥ जनक सुनावत सब नृपन, तब निज भुजाउठाय १३ ॥ जनकउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ शम्भुशरासन मध्य महागुरुताराई । बीस भुजनकी शक्ति जहां कुण्ठितभई ॥ ऐसेको इत आहि याहि सज्जितकरे । परहां । त्रिभुवन बिजय बिभूति सीय ताको बरे १४ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनिबिदेह नृपबोल, श्रीरघुनन्दन उमँगिउर ॥ लखत सुलोचन लोल, जटाजूट ग्रन्थीदई ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेपुरोहित विदेहसंवादोनामतृतीयोल्लासः ॥ ३ ॥

तदुक्तंवसन्तराजे ॥ चक्षुर्वामंमृगदृशोजयकारिभूशंत्वरा तदेवपुरुषस्यारात्स्फुरितंभयशंसनमिति १ ॥ कविरुवाच ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ पुलकित परमस्मेर सहित मुखारविन्द, सियाके कपोल में बिलोकत

हैं बारबार । कोणप कदम्बन में होयरह्यो कोलाहल, तिनके प्रपञ्च बोल श्रवणनि धारधार ॥ पञ्चानन तुल्य आप पञ्चानन बैनसुनि, मञ्चते उतरि पञ्चानन को धनुनिहार । आनँद अखूट जोर जटाजूट ग्रन्थिदई, लोगनकी लूटिलई शोभा शुचि सारसार १ ॥ दोहाछन्द ॥ वामदेव कोदण्ड दृढ़, जब करलीन्हो राम ॥ जामदग्नि जनकात्मजा, तब फरके दृगबाम २ करनलगे धनुसज्ज तब, भ्राता लक्ष्मण तास ॥ उरवी अहि कमठादिको, देनलगे बिश्वास ३ ॥ रोलाछन्द ॥ थिराहूजिये थिराधराधरिये भुजंगम । महि अहिधारहू कमठ राम कर शिवधनु संगम ॥ दिक्कुञ्जर दृढ़होय त्रितय धारहु इहि अवसर । सज्ज करत हरचाप आप रघुबंश बिभाकर ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ भूमी भई बिनम्र, नम्र फणिपति फणमण्डल । भयो मेचकित भूरि, बुद्धि बिपति आखण्डल ॥ किलमिलात किलकमठ, क्षोभ पायो बरुणालय । दिग्गज दिशिभट सहित, भये कायर करुणालय ॥ बहु बार बार बृंहितकरत, धराधार धूजनलगे । जब सज्ज कियो शिवधनुष, तब इमि लक्ष्मण कूजन लगे ५ ॥ मनोहरछन्द ॥ इतमें उठायो धनु तितै बिश्वामित्र तनु, पुलकि उठ्यो है अङ्ग अङ्ग प्रेम पाथ है । इत में लवायो रघुनन्दन महेशचाप, तितैन में देश देश भूपनके माथ है ॥ इतमें भ्रमायो भूरि कोशलकिशोर यह, संशय गँवायो तितै निमिपुरनाथ है । कारमुक खैंचतमें खैंच्यो मन मैथिली को, जामदग्नि मान औ कमान भग्नसाथ है ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ जब जारोयण किये कर्णलौं खैंचतशङ्कर । तबै त्रिपुर तिय तोम भीमभासंत भयङ्कर ॥ कर्णोत्पल ग्रन्थी जुतिनौंकी भ्रष्ट होत हैं । सदा लगाये रहत सुनत निज श्रोत्रश्रोतहे ॥ जब ज्या उतारि त्रिपुरारि तित आस्फालन धनु अनुसरैं । तब है निराश निशिचरबधू आस्फोटन

कङ्कनकरैं ७ ॥ दोहा ॥ उग्रदेव अत्युग्रधनु, उत्थापनते काम ॥ किहि कारण भञ्जन कियो, गुणगाहक श्रीराम ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ ब्रह्मबध पातक समेत मन्मथारि अरु, मातृबधकारि क्षत्रियारि जियजानिकै । इन द्वैके संगरयो दोष संसरगलयो, अपर अनेक अघखानि उर आनिकै ॥ गावत गोविंद गिरा सकल सुजानसुनो, महत महेश धनु यह मनमानिकै । पापनकी भई हान ताते ताने तजे प्रान, राम पाणिपद्म पुण्य तीरथ पिछानिकै ९ टूटतहि भीमधनु कीन्हों है कठोरनाद, विस्मय भयो है ठौरठौर ठामठामहै । रविवर बाजि राजि ऊबट गमन कियो, शम्भुशिरकम्प धुवधूज्यो धौलधाम है ॥ दिग्गज गिरन तथा चलन कुलाद्रिनको, अर्णव मिलन सप्तऊरध तमामहै । मैथिलीमदन मद अन्धन कदन ओघ, आसुर अदन शूर सदनभिरामहै १० सष्टाके बरिष्टवर अष्टहू श्रवणरुके, अष्टमूर्त्ति मूर्त्ति अष्ट कष्टभयोभारी है । मुखरित अष्ट दिशा दलन कुलाद्रि अष्ट, अष्ट कुली नागपांति बधिर निहारीहै ॥ लक्ष्मण भ्रात अतिस्वच्छ मन लक्षलाय, गोविंद प्रत्यक्ष दक्ष बदैं धर्मधारी है । तोर दोरदण्ड जोर चण्डिकेशको प्रचण्ड, खण्डनकोदण्ड नाद चण्डता प्रचारीहै ११ टूटतधनुष महि मच्यो महाकोलाहल, निठुर निनाद लोक लोकनमें छायो है । श्रौणसुनि शब्दके अमर्षवश मूर्च्छितहै, अति अविलम्ब ध्वान अध्वथकि धायो है ॥ जानकी निमित्तजान जान की रखी न भान, भञ्जि भवचाप आप बीरपद पायो है । क्रूर क्रोध अग्निप्रलै अग्नि सों निमग्न उर, निष्ठुरता मग्न जामदग्निमुनि आयो है १२ मस्तक मनोहर बिराजैंटोप कङ्कत्र, पीठिपैं निषङ्ग युग्म ख्यातखण्डखण्डहै । परमपवित्र भूति भूषितउरस्थलहै, मञ्जु मृगचर्म मुञ्जमेखला अखण्डहै ॥ बसन मजीठरङ्ग रञ्जित ललिततनु,

करमें धनुष अक्ष वलय घमण्डहै। दण्ड औ कमण्डलु ले उग्रअस्त्र मण्डलले, फरशा प्रचण्ड चण्ड चरित उदण्डहै १३ ॥ दोहाछन्द ॥ ब्रह्मसूत्र बायेंकँधा, दक्षिणदिश धनुधार ॥ धर्मदीधिती सोमसम, जिमि अहि चन्दनलार १४ ॥ मनोहरछन्द ॥ जबते जनमलियो तबहीं ते ब्रह्मचर्य, शिलास्तम्भ जैसे भुजदण्ड भासमानहै। अङ्कित ज्याघात पंक्ति सूचन करत यहै, बसुमति बिजय प्रशस्ति फहरानहै ॥ बक्षस्थल प्रबल घनास्त्र शस्त्रघात किए, कठिनकठोर पै सुधारे घावखानहै। क्षत्रिय बन बारन बिदारन करनहार, आयो जमदग्नि जायो जानत जहान है १५ मुदित समुद्र सप्त पुनि प्रतिपालकहो, अर्जुन सहस्रभुज दुष्ट दर्पदाख्यो है ॥ रेवातीर नीर के निरोधको करनहार, दोरदण्ड झुण्ड खण्ड खण्डन उछाख्योहै। गावत गोबिन्द ऐसे लक्ष्मण कहत राम, पितृबध पेखत अमर्ष उदघाख्यो है। वही जामदग्नि यह जाने गुरुद्रोही जान, कठिन कुठारते कठोर कण्ठकाख्यो है १६ त्रिगुणित सातबेर क्षत्रिय समस्त केर, बसा मांस रुधिर सनान बहुबारहै। निधन बिधान बीच परम प्रधान यह, तीयबृद्ध बाल नाहिं निर्दय निहारहै ॥ राजनके कन्धकूट कोटि कोटि काटनमें, साठौं घरी आठौं पैर परम प्रचारहै। बारबार बदत ध्रुवांक धिय धारधार, क्षत्रि क्षयकार घोरधार ये कुठारहै ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविद्यापितरत्नपुरस्थकविटीकारामाङ्गजगोबिन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेपरशुरामगमनंनामचतुर्थोल्लासः ॥ ४ ॥

सोरठाछन्द ॥ कहत क्रोध करि बैन, परशुराम संशय सहित ॥ तोख्यो धनुष त्रिनैन, काल कलेवा कौन कहु १ ॥ षट्पदछन्द ॥ निज पति आयुध जानि, पार्वती पूजतजिहिं नित। बासुकि कञ्चुकलाइ, नन्दि सादर आच्छादित ॥ धनुषधनञ्जय तुल्य, त्रिपुरतामधि हुव इन्धन। मोहिं अछत द्वैटूक, करे कानेकहियेजन ॥ जब काहु न

उत्तरदियो तब, उर अमर्ष अतिशयपगे। फुरकन्त ओठपुट रक्त चष, रामहिंसन इणरनलगे २॥ मत्तगजेन्द्रछन्द॥ फुल्लित गल्ल करैं फुतकार प्रफुल्लन सापुट कोटर आयो। ओघ अहंकृति पावकपुञ्ज हलाहल घूमतितें प्रकटायो॥ अन्धसमान किये सबलोकन अम्बर लौं क्षितिछोरन छायो। लोयनलाल करालकिये ततकाल महाबिकराल लखायो ३॥ मनोहरछन्द॥ रे रे रे अरे रे राम तेरे ये समग्र काम, निजकुल कञ्जपै तुषार तोमतैसोहैं। मोहिं पहिंचान्यो नाहिं रञ्च डर आन्यो नाहिं, जान्यो ना जरूर जामदग्निमुनि जैसो है॥ कीनो है अकाण्डमैं प्रचण्ड दोरदण्ड बल, खण्डनको दण्डकरि चण्डमान कैसो है। आडम्बर डिम्भते बिख्यातभयो खण्ड खण्ड, मण्डल महीप में उदण्ड मण्ड ऐसो है ४॥ चन्द्रायणछन्द॥ निखिल नरेन्द्रनिकाय कुमुदजिमि जानिये। तिनको मुद्रितकरन मिहिर मुहिं मानिये॥ कार्तबीर्यप्रति कहे यथा मम बोलहैं। परहां। सो सुनिलीजै राम श्रवण युग खोलहैं ५॥ दोहाछन्द॥ सहसबाहु नृपसैन्यसह, हौंद्विबाहु दुजएक॥ प्रकटप्रभाकर पेखिहैं, तवमम संगरटेक ६ यथाकही तैसी करी, कार्तबीर्य के साथ॥ सो जानत सारोजगत, ममबिक्रम रघुनाथ ७॥ मनोहरछन्द॥ कठिनस्वभाव मेरो जाहिर जगत बीच, बालबृद्ध तरुण तमाम तूर्ण मारे हैं। छाँड़यो नाहिं छौना नवसूतिका बिछौनाबीच, तिनके रुधिर सर्बपितृकाज सारे हैं॥ सप्तत्रय बेर क्षुद्र क्षत्रिय त्रियनकेर, गर्भथित अर्भन निकारि काटिडारे हैं। अहो अहो अहो महा आचरज आवत है, कहो कहो कहो राम तुम क्यों बिसारे हैं ८ कालसा कराल क्रूर कठिन कुठार यह, कार्तबीर्य कण्ठ भुज छेदनमें दक्ष है। घर्षण केयूर मध्य मणिगण रणत्कार, घोर शोर सुनैं शत्रु त्रसित तनक्षहै॥ तेजकरि तुल्य दिपै द्वादश

दिवाकर सों, क्षत्रीगोत्र काज प्रलै पावक प्रत्यक्षहै। लक्षमण लाय लख लक्षमण अग्रजात, लक्ष लक्ष लक्ष बच्छ भक्षण बिचक्ष है ९॥ षट्पदछन्द॥ सुनि सुनि बचन मुनीश, राम निज चेतसि चुनि चुनि। पुनि पुनि नयननिहारि, बैनबोले हिय गुनि गुनि॥ भुजबल बिदित न मोहिं, नाहिं शिवधनु प्रतापबल। रावर महिमा महा, कहा हौं जानिसकौं भल॥ करिये न क्रोध नाहक बिभो, धरिये धीरज धूवधिय। अज्ञात बालआचरण लखि, ह्वै प्रमुदित गुरुलोग जिय १०॥ दोहाछन्द॥ करकुठार यह कण्ठमम, करहु यथोचित सोय॥ रघुबंशिन को शूरपन, गो द्विजपै नहिं होय ११॥ मनोहरछन्द॥ लीजै मुनि विप्रवर्य हमको तिहारे संग, संगरुकी बातहू कियेते होत पापहै। सारेहीनबल हम तुम बलवाननके, शीश ये लसत यथा पत्रनपै छापहै॥ कैसे करिसकै कहौ रावरी बराबरी जु, भुजते भये हैं भूप ब्रह्ममुख जापहै। एकगुण संयुत धनुष धराधीशनको, नवगुणयुक्त ब्रह्मसूत्र लसै आपहै १२ त्रित्र भानुबंशजन्म क्षत्रिय कहावतहौं, श्रोत्रिय समस्त इभ्य अर्चन करतहौं। भगवत बिश्वामित्र महत अनुग्रहते, प्राप्त दिव्य अस्त्र पारधिय में धरतहौं॥ कोऊजन करौ यश अथवा कुयश करौ, हर्ष शोक नेक नाहिं रसना ररतहौं। धारतहौं शस्त्र शत्रु सघन सँहार काज, कालते डरौं न बिप्रबालते डरतहौं १३॥ दोहाछन्द॥ परशुराम रघुराम मुख, निकसे सुनि बरबोल॥ तिनको कियो न तोल कछु, उचरनलगे अतोल १४ बिप्र बिप्रकहि बदत मुहिं, रेशठ बारम्बार। जाबिधिको मैं बिप्रहौं, सो सुनिलीजै सार १५॥ घनाक्षरीछन्द॥ क्रोधकरि जाने निज जननी प्रहारी पेख, क्षत्रिय बिहीन मही कीनी इकबीसवार। क्षत्र अस्त्रमध्वा सब स्वादमें

अभिज्ञ अति, कुलिश कठोर घोर कठिन कुठारधार ॥ जाको बाण छिद्रमग भासैं क्रौंचपर्वतमें, हंसछलगिरें अजौ अस्थि अद्रिके अपार। ऐसो उग्र औज उग्रदेव सो उदग्र अति, प्रलयअग्नि जैसो जामदग्नि भार्गवनिहार १६॥ षट्पदछन्द ॥ क्षुभित निरखि भृगुनन्द, बचन रघुनन्द उचारत। त्रिभुवन तियमधि बीर, जनी जननी तव धारत ॥ निजभुजबशी बिशाख, बिलखि मुख बीड़ापाई। असमुत ह्वै मम उदर, उमाउरइच्छाआई। अतिधन्य मात अरु तात धन्य, बीर आप अतिधन्यहै। तिहुँकाल त्रिलोकी बीचकिहुँ, नहिं उपमा कछु अन्यहै १७॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ हारपरो गरमोर कि कठिन कुठारहै। कज्जल तिय चषबसौ कि जलकीधारहै ॥ सुखलखिहौं संसार कि यमको मुखलखौं। परहां। बिप्रनपै बीरत्वपनौ कबहुँ न रखौं १८॥ दोहाछन्द ॥ कहे राम अभिराम अति, अक्षर अखिल अमोल ॥ तदपि अभ्यसूयासहित, बोलत भृगुपति बोल १९॥ किरीटीछन्द॥ सागुरगह्यो सब शंकरकेकर जीरनचाप पिनाक कहावत। टूटिरह्यो पहिले तिहिं तोरि प्रबीरनमैं नहिं बीरसरावत ॥ बैष्णवचाप हमारयहै करि सज्ज विकर्षण जो दरशावत। शूरसमग्रनकी गिनतीमधि तौ रघुनन्दन रामगिनावत२० ॥ दोहाछन्द ॥ भार्गवमुनि के बचनसुनि, भये चकितचित राम ॥ इत पर्वत उत कूपहै, मिलत न कित बिश्राम २१ धनुषाकर्षन करनमैं, बिप्रधर्षणाहोय ॥ जो न करौं यह बाततौ, मिलत पराभवमोय २२ ॥ षट्पदछन्द ॥ अद्य प्रभृति ममभाव, बिप्र नहिं परशुराम है। पुत्र पौत्र रघुबंश, भूप नहिं यहै रामहै ॥ बीर कहौ अथर्वा, कुबीर कहियो समग्रजन । अब अवश्य यह बात, धारिलीनी मेरे मन ॥ सब सुजन कुजन मिलि भल कहौ, किंबा करिलीजौहँसी। द्विजदुष्टप्रबल मददमन, हित पीताम्बर कम्मर

कसी २३ इमिकरि मनसि बिचार, चारु रघुबंश बिभूषण । पुनरपि प्रबचन पठत, शान्तिमय बिरहित दूषण ॥ अर्णवमित भूमात्र, जीति इकबीसबेर यह । गहिगहि पुनिपुनि दियो, नाहिं रखिलियो आपवह ॥ हों डिम्भ बहुरि नव बाहुबल, घोरमहा अति बीरवृत । बिरमिये क्रोध ह्वैजै मुदित, जाति पूज्य भगवन्तकृत २४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ करत नाहिं द्वैबार बाणसंधानहै । आश्रितको द्वैबार देत नहिं थानहै ॥ अर्थिनको द्वैबेर न अर्पत दानहै । परहां । भाषत नहिं द्वैबेर राम अभिधान है २५ राम लियो वह धनुष सहेल सुजानहै । गुण योजन करि बाण अकर्षण ठानहै ॥ छबि मकरध्वज मध्य नमासत मेदहै । परहां । किय भार्गव मुनि स्वर्गगती उच्छेदहै २६ रामबाण संधान निरर्थक नहिं कदा । मुनि प्रति किये प्रहार ब्रह्मबध है तदा ॥ किये भूमि पर पतन भूत पीड़ा यदा । परहां । छेद्यो मुनिको मरण अमर कीनो सदा २७ चापाकर्षण ताटकारि आकर्ण है । लखतसीय सासूप नैन आकर्ण है ॥ पहिले भवधनुभञ्जि राम मोकोलई । परहां । अबै कन्यका अन्य लेन इच्छाठई २८ ॥ दोहाछन्द ॥ इहिबिधि साशंकित भई, करि कुतर्क कमनीय ॥ पुनिपुनि सिय पेखनलगी, रामरूप रमनीय २९ अब उदन्त सुनिलीजिये, परशुराम मुनिकेर ॥ गये गर्बके टेरसब, रहे रामतनहेर ३० ॥ षट्पदछन्द ॥ कार्त्तवीर्य भुजदण्ड, सहस उच्छेदन पण्डित । जामदग्नि युधबीर, उरसिउद्दण्ड अखण्डित ॥ लखत राम अतिउग्र, बिशिख करधर उहिंअवसर । अबिनयगयो बिलाप, हीय हुलसाय बिनयबर ॥ ब्राह्मण्यदैत्य प्रणईभयो, पिशुनभाव भार्गव भग्यो । श्रीरामचन्द्र अभिनन्दितब, अमलतबन उचरन लग्यो ३१ अहो रामगुणग्राम, धर्मध्रवधाम धुरंधर । दिनमणिकुल

कल कलश, प्रचुरपुहवीश पुरंदर ॥ जो न आप अवतार, अमल निरमल महिहोतो। तौ अवलम्बन अवनि, अवनि अधिपन नहिं हो तो॥ त्रैलोक्य ताप त्रासक तरल, निजनर मुद मंगलकरण। अपराध ओघ क्षमियो बिभो, सकल लोक अशरण शरण ३२ ॥ दोहाछन्द ॥ तब सुनि भृगुपति बरतवन, बदत बचन रघुनन्द। जामदग्निमुनि चरणयुग, करि अभिबन्दनबृन्द ३३॥ मनोहरछन्द ॥ जाये जमदग्नि पुनि पायेहौ पिनाकी गुरु, बीरज बिधानना बखानत बनन्तहै। कर्मकरि सारेहू जहानबीच जाहिरहौ, धरमधुरैया धीर महिमा मनन्तहै ॥ मुद्रित समुद्रसप्त सप्तद्वीपवती मही, दीनिहै त्रिसप्तबेर भूसुर मनन्तहै। सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवन्त आप लोक लोकोत्तर उपमा अनन्तहै ३४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जानि आप अवतार भये रघुनाथहै। परम प्रेममिलि गाढ़ नयनयुग पाथ है ॥ अर्प्यौ तेज महत्त्व क्षत्रिवध छंडिया। परहां। उत्तर दिशि कियगवन तपसिमन मंडिया ३५ ॥ षट्पदछन्द ॥ बहुबिधि बाजन बजत, मनहुँ घन गरजत मधुधुनि। गावत मङ्गलगीत, सुवासिनि चेतसि चुनि चुनि ॥ बिरदावली बदन्ति, बृन्द बृन्दन बन्दीजन। बेद मन्त्र बर बिप्र, उधारत अखिल मुदितमन ॥ श्रीराम सीय पाणिग्रहण, निरखत मुनि नर सुर असुर। आनन्द ओघ बर्त्ततभयो, उहि अवसर सब जनकपुर ३६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूलह दुलहिनि दिपत दुहुँ, रति रतिपती समान। मञ्जुमुहूरत जनकनृप, दीनों दुहिता दान ३७ ॥ हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामश्याम सुकाम अतिअभिराम पीतम पीयके। पाये परसिकर सकल सुखनिधि हीयहरषत सीयके ॥ आनन्द सतचितरूप भासत योगनिद्रगता यथा। कन्दर्प के बड़ दर्पके शर भिन्न भ्राजत हैं तथा ३८ बाल्मीकि गौतम कुशिक-

नन्दन जामदग्नि वशिष्ठहैं । ये ब्याह बिबिध बिधान बिरच्यो शता- नन्द बिशिष्ठहैं ॥ सम्पूर्णकिय परिपूर्ण तूरण सीय लक्ष्मण साथ हैं । कीनो गमन द्रुत आगमन निजपुरी प्रति रघुनाथ हैं ॥ ३६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहासिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतास्वयंम्बरोनामपञ्चमोल्लासः ॥ ५ ॥

अथ श्रीहनुमन्नाटके प्रथमोंकः ॥ मनोहरछन्द ॥ आवत अवधपुर जानकी लषणयुत, बन्दि गुरुलोक रामचन्द्र प्रेमपाये हैं । परमउछाह छायरह्यो गेह गेहनमें, दिव्यदेह देहमें सनेह सरसाये हैं ॥ पहिलो पहरबीत्यो मित्रन मिलनमध्य, बाकी तीनयाम अतिदीर्घ दरशाये हैं । दण्डकरि ताड़त तुरङ्गतत सीताराम, चित्र हयशालामें बिचित्र छोहछाये हैं १ ॥ दोहाछन्द ॥ पियताड़त हयशालहय, सियताड़त हयचित्र । उभयभये उन्मादथित, किहिकारण कहु मित्र २ ॥ तस्योत्तरं ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ परनिपधारे प्रातही ते पुत्र पुत्रबधू, अमित उछाह छायरह्यो औधमें अपार । आफताब गिरि मैं निहारि रवि रूपरम्य, दम्पति हृदयभांति जाको पेखिये न पार ॥ मङ्गलमनोहर निहारन न काजआये, अर्क अश्व उनजानि कहु धुनि धारधार । अस्ताचल ये हैं कम्ब ऐसे उरआन्यो तब, मेदुरमें मन्दुरामें तजैं तिन्हैं बारबार ३ ॥ षट्पदछन्द ॥ गये अस्तगिरि अर्क, उदय शशिधर दरसायो । रंगपक्क नारिंग, पिंग सुन्दर सरसायो ॥ गुरुजन आयसुपाय, गई निजमन्दिर अन्दर । सियरम्य रम्भोरु, पतिव्रत प्रेम धुरन्धर ॥ मुख मन्द मन्द मुसकन सहित, रसिकशिरोमणि स्वामिप्रति । आनन्दकन्द रघुनन्दजित, रमकाम अभिराम अति ४ प्राचीभाग सराग, तरणि बिरहिणि बिस्तारे । नीरजालि निद्रालु, कुमुदकुल बिकसितसारे ॥ बिगत बिकार चकोर, शोक सह कोक

लोकहै। सावकाश आकाश, शमित तमतती तोकहै॥ कन्दर्पदर्प अर्पित हृदय, प्रबल प्रसर्पण करिरयो। शर्बरी स्वामि अभिराम अति, सार्बभौम समुदयभयो ५ कैरवकोरक बिकसि, तरुण तरणी मनबिदलत। मीलत अलि अम्भोज, मान मानिनि उन्मूलत॥ प्रसरि जुन्हाई जाल, तोमतम कवल करतअति। ऊर्ध्वबेल अम्भोधि, आकुलित कोक कुलनतति॥ दिशिबिदिश सकल धवलिम धरत, हरत निखिल तनतापहै। बरबरस हृदय आनन्दनिधि, उदय सुधाधर आपहै ६ कुचगिरि शिखर उतंग, हीय सीमन्तिनि सरसत। अजौं मान यह मूढ़, तितै निबसत नित दरसत॥ कुपित कलेवर अरुण, रूप रोहिणिपति आन्यो। करपसारि चहुँ ओर, कुमुदकुल बिकसन ठान्यो॥ तितरुकी छुती भ्रमरावली, बांधिपांति निकसी लसी। मनु मान प्रहारण कारने, असित असी निकस्यो शशी ७ अस्तभये दिननाथ, वेष उहिको शशिलीनो। सहितराग अनुराग, कमलिनी सपरसकीनो॥ पायशीतकरपरसि, तथा मुद्रित मुख ठान्यो। परतियरत निजनाथ, कुमुदिनी कामिनि मान्यो॥ परहां। सकथन कौतुक किये तब, अति लज्जित ह्वै रयो। अरुणिमा गई सब अङ्गकी, इहिकारण पांडुभयो ८ दिक्षागुरु शृंगार, मुकुर प्राचीदिशि तियको। कुमुदन कौमुद करन, चकोरन हरषन हियको॥ प्रौढ़भये शीतांशु, रोदसी बपु सरसत है। राम कहत सखि करहु, तर्क अस कस दरसत है। यह किधौं पूर कपूर कृत, किंवा मलयज लिप्तकिय॥ पुनि॥ किधौं पखाऱ्यो पारदनि, अथवा फाटिक मणि खचिय ९॥ दोहाछन्द॥ सखीकहत करजोरि युग, सुनिये बिनय हजूर। भयो सकल संसार मधि, रावर यश परिपूर १० फाटिक नहिं पारद नहीं, नहिं चन्दन न कपूर। श्रीरघुनन्दनरावरो,

सुयश जगत परिपूर ११ तदनन्तर निरखतभये, चुगत चकोर अँगार । तिन प्रति रघुबर उच्चरत, शोधहु सारासार १२ सुधा सुधाधर स्वादगहि, पुनि अङ्गारक प्रीति । करत अन्यथा कौन कहु, रची विधाता रीति १३ ॥ षट्पदछं ॥ तरल तिमिर चय चमू चक्र संहार चक्र यह । चक्रबाक क्रीड़ा कृतान्त निष्कान्त कान्तिसह ॥ कान्ता कान्त नितान्त वृत्त संयोग सच्छिरह । गगन मानसर राजहंस राजत शशाङ्कमह ॥ पुनि ॥ शुचि संभोगारम्भमधि कुम्भ कुमुद तिय सुमुदप्रद । गीर्वाण नाहिं नीर्वाणप्रद पञ्चबाण निश्शाणहद १४ ॥ सोरठा छन्द ॥ बदैं सारिका बैन, सहचरि रानि सुनायकै । यह सूचनकरि सैन, अवसर ठहरन कौन अब १५ निज निज गईं निकेत, सकल सहचरी समुझि जिय । शोभा सकल सँकेत, सिय सिय पिय हुलसन्त हिय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकाराभाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसहचरीगमनोनामषष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामचन्द्ररु जानकी युग हृदय किय नीशाण है । जे चन्द्रमण्डल शाणतें उत्तीर्ण रतिपति बाण हैं ॥ तेपञ्चबाणक बाणते निकसे कसे आकर्णलौं । लागे अचानक आयके युगबक्ष थलवर बर्णलौं १ द्वाराग्रभागनि जाय प्रीतम प्रीतियुत गहिअङ्कपै । लीनी निमी नृपनन्दनी आनन्दयुत परयङ्कपै ॥ रोमाञ्चबपु अतिनम्र आनन नाहिं कछुतनु भानकी । संकोचकरि संकुचित हेरइ जानकी प्रियप्रानकी २ संसारसारो कहत स्मरशर पञ्चबानि प्रमानकी । कोशादिकनमें काव्यगणमें व्याकरण अनुमानकी ॥ बिख्यातहै सब ख्यातमें शरपञ्च इति अभिधानकी । मोगात मैं अगिनन्त किमि रोमाञ्चलखि कह जानकी ३ ॥ षट्पदछन्द ॥ गाढा

लिङ्गितहोय, स्वपिहि स्वामिनि पिय भाषत । नहिं नहिं नहिं इति बचन, जानकी आनन राखत ॥ कोमल कमल समान, स्वामि बक्षस्थलराजैं । मम कुच कठिन कठोर, चुभन संशय मनछाजैं ॥ पुनि ॥ पवन प्रवेशन होनहित, करतहत मैथिलि शिथिल । प्रभुप्राणनाथ प्रियप्राण सिय, किय आकर्षण बाहुबल ४ बाहुपाश अन्योन्य, ग्रहण रसभर भलभूषित । जयति युगलकिशोर, मुहुर्मुहु उपम अदूषित ॥ अति अभिमतफल, लेत उभय सुखदेत परस्पर । गर्भसार संसार, भयो नूतनइव रसपर ॥ महमञ्जुल मधुरालापकरि, हां हां हां रघुबर रटत । निमिनाथनन्दनी मेदगिरि, ना ना ना कहिकै नटत ५ खदिरसार घनसार, युगल चूर्णन करि आवृत । नागवेलि दल बिमल, बीटिका निज आननधृत ॥ कह्यो ललीसों लेउ, लियो सिय चार भागकरि । धर्मादिक फल चार पदारथ तुलित धीर्यधरि ॥ पुनि ॥ रामचन्द्र सानन्दहुइ, मैथिलिमुख निजमिलत मुख । अतिमधुर पाइ प्रभु अधररस, पाये ब्रह्मानन्दसुख ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जब कछु निद्रित नयनभये युग सीयके । तबै हृदय पर किये पानिपुट पीयके ॥ चित्तस्थित प्रभुरूप बिनिर्गम नहिंचहै । परहां । यह उरआशय अमल निरुन्धितही रहै ७ ॥ दोहाछन्द ॥ बैदेहीबर बक्षथल, यक्ष कर्दमाघ्राय । आयो अलि अवलोकि त्रिभु, उहिंबरणत चितचाय ८ ॥ षट्पदछन्द ॥ कान्ताकान्त नितान्त, कुचान्तर चन्दन चर्चित । मदन दहन तप शमन, हेत घनसार समर्चित ॥ सिया उरस्थल मध्य, मधुप निर्मग्न भयो जिहिं । यच्छ रहै वाहरे, करतउतप्रेक्ष पेखितिहिं । मनुभव्यो पञ्चशर विशिख हिय, रहे पुंख अवशिष्ट है । सो सुनत ब्याज निद्रित प्रिया, श्रवण सुधासम मिष्टहै ६ प्रथुल जघन घनभार, मन्द आंदोलन

आनै। मृदुचञ्चल अलिकाग्र, अवलि अलि आभाभानै॥ प्रकटितकृत भुजमूल, फुरत श्रुति कर्णपूर हैं। स्तनलीला लालित्य, बसत बपुपूरनूरहै॥ जानकी व्याज निद्रा यहै, प्रमुदित मानस पीयको। हीयको हरन हुलसन्तहै, जीवन जानहु जीयको १० लखि नारी निद्रालु, बसन पियहरिबे लागो। काञ्चीरव सुनि काम, ततक्षण आवत भागो॥ तस्कर लुकिबे लग्यो, ताहि मणि गणनि बतायो। काम चलाये बान, चोर अतिशय सतरायो॥ घनजघन जानि गिरिवर गुहा, तित तूरन कीनो सदन। लखि शम्भु युगल उर ऊपरै, ह्वै सभीत रुकिगो मदन ११॥ सोरठाछन्द॥ प्रकट पद्मिनी प्रीति, जिमि बरणत रसग्रन्थ मधि॥ सो कीनी सब रीति, अन्तर्यामी रसिकप्रिय १२ जनक जनकजामात, जगजननी जनकात्मजा। शुचि शृंगारकी बात, उचित नहीं बहुबरणिबो १३ तदनन्तर सुचरित्र, सुनि लीजै सज्जन सकल। पूरणपरम पवित्र, जब जागी जनकात्मजा १४॥ षट्पदछन्द॥ करतप्रेम करि स्पृहा, बालभावन करि भीती। आकुञ्चत निज अङ्ग, सुरत संगमपर प्रीती॥ अहह नाह नहिं नहीं, व्याजसह बच सरसावत। मधु रसमेर कटाक्ष आदि भावन दरशावत॥ पुनि॥ निधुबन घनकेलि करि म्लान भाव जिय भाजत है। अरु शङ्कातंकित चारु चितरमण रभसभय छाजतहै १५॥ दोहाछन्द॥ अधर दशन सीत्कार करि, कहत युगल करजोर। निर्विशङ्क मनहोय पिय, पिय पिय रसना मोर १६ ललितशालि आलाप करि, बिलसत बाकबिलास। अविरत निमि नृपनन्दनी, पिय हिय करतहुलास १७ रम्भा बीणानादते, मधुरसरस सुखबास। सुरभित सुरद्रुम सुमनसम, बरसिय बचन बिलास १८ रसिक शिरोमणि सांवरो, श्रीरघुबर रमनीय। सुनि बैदेही बचन

वर, कहत बचन कमनीय १९ ॥ षट्पदछन्द ॥ कानन गये कुरङ्ग, कुहरगिरि केहरिगयऊ। दिग्गजगये दिशान, कमल जल आश्रित भयऊ॥ चष कटि कुच बर बदन, बिनिर्जित पेखहु प्यारी। पायपराभव परम, भये अति लज्जित भारी॥ यह रीति सदा सतपुरुषकी, मानमलान जरूरहै। तव मान ततक्षण मरन मन, अथवा जावत दूर है २० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जल अन्दर जपकरत कमलकुल जापकै। अच्छमाल अलि अवलि परमपदु पायकै॥ चहत चित्त चषतौर तुलयते हौनहै। परहां। धारण कृत इहहेत बनज मुख मौनहै २१ ॥ सोरठाछन्द ॥ ऐणी श्रेणी भूर, बन बसि तृण भक्षण करत। चषसम हौनिजरूर, मृगनयनी तपकरतते २२ अयि ऐणी चष ओर, अहिश्रेणी बेणीलखत। तुलित होत नहिं तोर, इहिकारण छिपिरहत नित २३ चहत वतुनुसम तौन, अये चारु चम्पक तनी। सुबरण सुबरणहौन, दहनदेह किय दहनमधि २४ दाड़िम हीयदरार, दरकि दरकि दरशातहग। दन्तपंक्ति मणिमार, तव निहारि निमिनन्दनी २५ ॥ षट्पदछन्द ॥ क्षीरसिन्धु अरु पुहुमि, युगल जिहिं पलुवाकीने। ओषधीश अरु बदन, तोर तिनमें रखि दीने॥ अनिलदण्ड करि तुला, विधाता तिनको तोलत। यहै भूमिको भूमि, बहे गगनाङ्गन डोलत॥ तव तोल बराबर होनहित, तारागण तितमें रखत। तउरह्यो ऊर्ध्वको ऊर्ध्व वह, गुरुताई मुख में लखत २६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कह सीता करजोरि नाथ चित चहतहौं। चरण भावनाधारि गिरामुख कहतहौं॥ गुरुता भये न स्वाद स्वाद मधुराइमें। हरिहां। करिनिश्शेष अधिकगुण जाइमें २७ ॥ दोहाछन्द ॥ गिरा मनोहर सुनिसिया, पूर्णकाम प्रभु तूर्ण। अभिमत आलिङ्गन कियो, कृत मनोर्थसम्पूर्ण २८ शुचितन शोभा

सीयकी, हरत रमण हियताप । अवधछैल आभा सियहि, आनँद देत अमाप २९ ॥ मनोहरछन्द ॥ कविरुवाच ॥ कैसे वे जलज नील अतसी कुसुम जैसे,कैसे वे कुसुम जैसे नीलमणि धामहै। नीलमणि धाम कैसे शोभित तमालतैसे, कसे वे तमाल जैसे दूबदल श्याम है ॥ दूबदल श्यामकैसे यमुना प्रवाह जैसे, यमुना प्रवाह कैसे जैसे तनुरामहै । राममुनि श्यामकैसे नवघनश्याम जैसे, नवघनश्याम कैसे जैसे श्याम रामहै ३० पीतमणिमाल कैसी लतिका सुबर्ण जैसी, कैसी लता जैसी रङ्ग केसर अमन्दरी । केसर सुकैसी जैसी सोनजुही कैसी जुही, जैसी गिरा बारिबृष्टि बृन्दवर बुन्दरी ॥ कैसी ओप अम्बुकी सुजैसी यज्ञज्वालज्योति, कैसी ज्वाल जैसी पीत-पट छबि छन्दरी । कैसी पटज्योति जैसी सीयछबि कैसी सीय, जैसी बिज्जु कैसी बिज्जु जैसी सिय सुन्दरी ३१ कैसे नीलपीतपट पावन प्रकाशवान, जैसी श्रीतमाल स्वर्णमाल छबिधामिनी । कैसी बेस-माल जैसी नील पीत पङ्कजकी, मञ्जुल सुगन्ध प्रभा पूरित सुना-मिनी ॥ कैसे नीलपीत कञ्ज जैसी नीलपीतमणि, कैसी मणि जैसी गिरा कृष्णा अभिरामिनी । कैसी नदी जैसे घन बिज्जु घन बिज्जु कैसे,जैसे युग कैसे युग जैसे घनदामिनी ३२ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बिरह दीर्घ आगामि जानिजिय जानकी । चरणायुध धुनि सुनत भोर भइ भानकी ॥ पति बियोग जिनहोउ धारि जिय कञ्जरी । अरिहां । तासु शान्तिके हेत प्रपूजत मञ्जरी ॥ ३३ ॥

इति श्रीपिपलोदरत्तनाधिपालरावतश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गज-गोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीजानकीविलासोनामसप्तमोल्लासः ॥ ७ ॥

हनुमन्नाटकेद्वितीयोंकः ॥ षट्पदछन्द ॥ श्रीरघुनन्दन आप,सीय संयुत सुख सरसत । भोक्ताभोग सुअङ्ग, समय कतिपय हियहरसत ॥ नाहिं

प्रेमको नेम, निरन्तर हृदय लखावत। निरखि निरखि आनन्द, परस्पर परम पिखावत॥ अहुराते पै अबिलम्बअति, वहअवसर आवतभयो। जोदशरथनृप मृगयाकरत,मुनीशाप पावतभयो १ वैश्य तपस्वी यज्ञदत्तमुनि श्रवण तातहौ। वह निज तियासमेत, जरठ जात्यन्ध गातहौ॥ दशरथनृपके हाथ, मस्यो तिहिं सुत गजभ्रमते। शापदियो ऋषि अन्ध, तुमहुँ मरिहौ या क्रमते॥ अतिवृद्ध अवस्था बीचतुम, सुत बियोग द्रुतपाइहौ। वह तरलताप संतापसहि, आपहु सुरपुर जाइहौ २ मलिनकिरण दिनमणी, भूरिभूकम्पहोतहै। उलका दण्ड प्रचण्ड, पतन अम्बर उदोतहै॥ धूसरमो दिगभाग, ग्रहण रबि शशि बहुदरशत। शारमेयरुत अमित, फेरु परचार प्रकरशत॥ बहु रुधिरबिन्दु बरसन्त नभ,तमतारा दरशन्तदिन। उत्पात अमितचित काररव, प्रलयसरिस सरसात छिन ३॥ दोहाछन्द॥ तितलखि सब उत्पात अति, केकयि करत बिचार। आइगयो अवसर अबै, लीजै बर निरधार ४॥ कविरुवाच॥ षट्पदछन्द॥ पहिले भो संग्राम, अमर असुरन अतिभारी। सुरसहायता काज, गयउ नृपसंयुत नारी॥ कटी चक्रकी कील, सुरत तिहिं नरपति नाहीं। तबै अँगुरिया आप, दई केकयि तामाहीं॥ गहि बिजयलखी तिय अंगुली, है प्रसन्न द्वैवरदिये। ते थाप रखे नरनाथ महँ, जे चितचाहत अचलिये ५॥ दोहाछन्द॥ इकवर भरतहि नृपतिलक, द्वितिय रामबनबास। यह उर आशय आनिकै,गई पुहुमिपति पास ६ कहनलगी केकयसुता, सुनहु नाथ ममबात। जबते आगम सुतवधू, तबते अतिउतपात ७॥ षट्पदछन्द॥ वधू अमङ्गलरूप, भूपइहि जानहु जीमें। होत अमित उत्पात, अहर्निश अवधपुरीमें॥ शान्तिहेत सह सीय, रामबसिहैं सुगहनबन। भरतराज अभिषेक,कीजिये जो मानतमन॥ दीजिये

थाप बरदान दुहुँ, जगत महायशलीजिये। अति आपहोय निश्चिन्त अब, सुखीहोय इतरीजिये ८ सुनत बचन केकयी, महिप मूर्च्छाभइ भारी। पुनि कछुहोय सचेत, धीय निज यह निर्धारी॥ मुखनकार जो कढ़ै, घटै मिथ्या महपातक। सुत बिछुरनहू यहै, घोर मम बपुको घातक॥ मन मरण श्रेय मान्यो महिप, नाहिं भलो मिथ्याबचन। तियते तथास्तु कहिदियो तब, तिहि बिरची बिधि बिधि रचन ९ शीशजटा बिलसन्त, बसन बलकल तन रामजु। छत्र चमरढिग भरत, बिमन मन नहिं बिसरामजु॥ तात चरणयुग नमत, भ्रातयुग मनबचकायक। अहह तात हा मात, भरत बद बिह्वलवायक॥ सहिसकौं और संकष्ट सब, कछुहु न मुखते कहिसकौं। गहिसकौं सिंह अहि अगनिखैं, रामबिरह नहिं रहिसकौं १० ॥ चन्द्रायणाछन्द॥ कहत राम मोहिं पीर नाहिं बनबासहै। कोमलपद सियगमन तथा नहिं त्रास है॥ भरतभ्रात उर अरुचि राजपर रहत है। परहां। यह अति दारुणदाह देहको दहत है ११ सुनि सुमन्त्र बच भूप सुसुवन पयान है। शापसमयभो प्राप आप जियजानहै॥ राम राम रघुनन्द रामरट जासहै। परहां। फेर न लियो नरेश दूसरो श्वास है १२॥ दोहाछन्द॥ अति आतुर भरत ह्वै, बूझतहैं निज माय। कैकेयी कर्कश हृदय, दिय उत्तर समझाय १३॥ षट्पदछन्द॥ मात तात कितजात, भवन सुरपति के भ्राजत। किहिकारण सुत शोक, कस्य तव अग्रज छाजत॥ कहा भयो है वाहि, कियो बन बीच गवन तिहिं। कानन मधि क्यों गये, हुई अवनिप आयसु जिहिं॥ कहु काहि भूप आज्ञादई, नृप मम बाचाबद्ध हुवि। फल तोहिकहा तव राज्यपद, सुनि करि हाहा गिस्योभुवि॥ १४॥

इति श्रीकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरात्रिलासेदशरथनृप स्वर्गसंप्राप्तिवर्णनोनामाष्टमोल्लासः॥ ८॥

षट्पदछन्द ॥ रघुवर गहि गुरुगिरा, राज्यपद तृणइव तजिया। बन प्रति जाउत भये, बसन बपु बलकल साजिया ॥ सुरभि संग जिमि बाल बच्छतिमि लक्ष्मण सोहत। धारि धनुपशर तूण युगल सब जनमन मोहत ॥ जानकी पेखि शुकसारिका सासु चरणलगि हुकुमगहि। प्रिय प्राणनाथ श्रीनाथके साथ चली निज चित्तचहि १ रामगवन बनकिये भरतमूर्च्छा भइभारी। पाय चेतना कछुक गिरा सुनिजन धियधारी ॥ कीन्हों उत्तर कर्म निखिल निगमागम गायो। दशरथनृप निज जनक पुरन्दरपुरी पठायो ॥ पुनि भ्रात शोक परिपूर्णहिय नन्दीग्राम निवासकिय। शिरजटा मुकुट बल· कल बसन बसत सदा रघुनन्दजिय २ ॥ दोहाछन्द ॥ तिते निवसि पालत प्रजा, उर अन्दर असइच्छ। बनते प्रभु पग धारिकै, पैहैं प्रीति प्रतिच्छ ३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ त्रिचतु चरण चलि सीय पीय सों यों कहै। कानन कितनी दूर श्रवण सुनिबो चहैं ॥ देखि दशा मृदुअंगि नयन जलधार है। परहां। रामबिलोचन प्रथम अश्रु अवतारहै ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ कहत रामसुनु सिया, कृशोदरि प्रथम कहावत। पुनि कुच कचकेभार, निरन्तर नम्रलखावत ॥ चारुचरण चंक्रमण, चैत्यकरि श्रम सरसावत। दोलांदोलन समय, स्वेद बहु बूंद बहावत ॥ अति सरितस्रोत निर्झर निकर, भूमिगर्त गिरिभूर है। मृग सिंह भूत भैरवसहित, बन चलि हौ किमि दूर है ५ ॥ चन्द्रा· यणाछन्द ॥ पुनि पुहुमी प्रति पठत राम रमनीयहै। नवनलिनीदल अरुण चरण कमनीयहै ॥ पदपदपर प्रसखलत ललितगति तीय है। अरिहां। तव दुहिना बनगहन सिधावत सीयहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥ काश्यपि तव यह कन्यका, कोमलतन सुकुमार। तजियैं तुम्हरी कठिनई, धुर कोमलताधार ७ इमिकहि कछु कीन्हों गमन, त्रिभु-

वनतिलक ततश । पथिकवधू बूझनलगी, पथि पथि सीय प्रत्यक्ष ९ चन्द्रायणछन्द ॥ ससि कुवलय दलनील रावरे कौन हैं । यह सुनि स्मितकरि तितै गहत सुख मौनहै ॥ लखि लक्षण पहिचानिलेत ते वाम हैं । परहां । पीतम परमसुजान सकल गुणग्राम हैं ९ कमलकोश नवनीत सुकोमल चरण हैं । दर्भसहित अति कठिन क्रूर यह धरण है ॥ शीशत्राण पदत्राण सुवलकल कीजिये । हरिहां । सीख देत पथवधू सुमुखि सुनिलीजिये १० ॥ दोहाछन्द ॥ इमि सिखवत निजनयन भरि, नीर पथिकजन बाम ॥ क्रम क्रमकरि प्रापतभये, चित्रकूट अभिराम ॥ ११ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे श्रीरामचन्द्रचित्रकूटागमनोनामनवमोल्लासः ॥ ९ ॥

दोहाछन्द ॥ तितआये सानुज भरत, सहित सैन रनिवास । उमँगि उमँगि अकुलाय उर, सहत न बिछुरनत्रास १ मरन भलो बिछुरन बुरो, सब जानत संसार । वहै दुःख इकबारहै, यह दुख बारम्बार २॥ षट्पदछन्द ॥ जटाजूट शिरसोह, बसन बलकल बपु बिलसत । प्रणमत भरत परेखि, प्रेम पुलकावलि उलसत ॥ तारसुरनकरि रुदित, सकल कल बिकलभये हैं । बन बिहंग मृगदीन, नैन तितनीर छये हैं ॥ मनु आय बस्यो करुणाकटक, चित्रकूट कीनी फिकर । तिहि अश्रुओघ निकसन्त यह, नाहिं भरत निर्झरनिकर ३ ॥ दोहाछन्द ॥ देत सुमित्रा शिक्षसुत, स्वच्छ लच्छ मनलेख ॥ शुचिसेवन अवसर मिल्यो, उरअशेष अवरेख ४ मोहिं जान जनकात्मजा, जनक जनकजामात ॥ अवधसरिस अटवी लखहु, जाउ यथासुख तात ५ शिरधरि आयसु भ्रातकिय, भरत अवध प्रतिगौन । सीय लक्ष्मण सहित विभु, बिहरत गिरिवर तौन ६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ वैदेही

बच बदत सुनहु मम पीयहै। शिलाएक हुइ प्रथम सुगौतम तीय है॥ बिन्ध्यअद्रि पर अमित उपलपद परसहै। परहां। करि है मुनि तियवन्त कितक पियसरस है ७॥ षट्पदछन्द॥ नौकारोहण कियो, लियो सुख अमित जानकी। अरजकरी करजोर, कन्त करुणानिधानकी॥ गौतम मुनिकेशाप, आप अहल्या उद्धारी। यहकाहू मुनिसप्त, पोत पुत्री भइ प्यारी॥ लीजियेसँग याको अवशि, चरण परश नितदीजिये। उद्धारहोय तबलौं बिभो, मम आलम्बन कीजिये ८॥ दोहाछन्द॥ जलयानरु थलयान में, जानत नाहिं अयान॥ एक रही रनिवास में, दूजे शिशुता जान ९ देखि दैन्यता सीयकी, रघुबर दीनदयाल॥ गोदावरितट विपिन मधि, पटुकीनी पतिशाल १०॥ लक्ष्मणउवाच॥ षट्पदछन्द॥ जितै रघूत्तम कुटी, तितै वह पञ्चबटी है। पञ्चबटी परेख, पाथ सुख एक घटी है॥ तरल पुरस्कृत तटी, भीति संश्लेष बटी है। गोदा यत्र नदी, युतरञ्जित सरल तटी है॥ कल्लोल लोल चञ्चत्पुटी, दिव्या मोद कुटीरटी। संसारसिन्धु शकटी सदृश,स्वल्प धर्म नरदुष्कटी ११॥ जानक्युवाच॥ मनोहरछन्द॥ क्रीड़ाअवतार कल्पबटसे बिराजमान, प्रकटीकृत बिश्वबट पिष्ट अण्डघट है। बिश्व अम्बुजन्मबट भञ्जन शकट ध्वस्त, संकट छमी के क्रांति धोवत कपटहै॥ लंपट अधरसीय भिन्न शत्रु कुम्भीघट, खण्डन शकटबन्दौं राम दुरघटहै। शीश जटाजूट पट बल्कल राजमान, कोटि कोटि कटैं बेग बिपदा बिकटहै १२॥ दोहाछन्द॥ बिगत परिश्रम होय सिय, पिय अभिवन्दनकीन॥ पेखिकुटी प्रमुदित भई,गईताप बिधि तीन १३॥ षट्पदछन्द॥ बीस नयन मदनान्ध, सदन मारीच सिधायो। ह्वै बिनीत युत प्रीति, बिदित यह बचन सुनायो॥ तुम मञ्जुल मृगरूप, धारि दण्डकबन बिचरहु। जित

मृगनैनी जनक, सुता सोहत तित प्रचरहु ॥ अति अद्भुत अङ्ग बिलोकि मृग, सिय पिय प्रति याचन करहिं । अभिलाष अङ्गना पूरि वे, रामतोर सँग अनुसरहिं १४ हौं यह अन्तर पाय, सीय गहि जैहौं निजपुर । तव अधीनहै काज, करहु ममआनि बिनय उर ॥ जो यह इच्छित मोर, सुनहु मारीच न करिहौ । तौ इतमें बिन मौत, तुरत मेरे कर मरिहौ ॥ है रावणते मरतव्य इत, रामहाथ मरतव्य तित । मरतव्य अवशि मारीच लखि, श्रीरघुबरकर होहिं हित १५ ॥ दोहाछन्द ॥ यह बिचार चितचारु चुनि, मृगतनु गहि मारीच ॥ हरित दूब चुनि चुनि चरत, बिचरत बन २ बीच १६ ॥ षट्पदछन्द ॥ दशरथनृप कुञ्जदीप, पर्णशाला मधि सोहत । सह सौमित्री सीय, महामुनिजनमन मोहत ॥ स्वच्छ सलिल पटु पान, करत सुन्दर सरितासर । ललित कन्दफल मूल, गहतबीते बहु बासर ॥ अब ये ते पै आयो उतै, मृगबपु बनिमारीच है । पठयो जुनीच दशकण्ठको, बिचरत कुटी नगीचहै १७ सुवरण सकलशरीर, हरित मणिमय शृङ्गद्वय । बिद्रुममय खुरचार, रदच्छद माणिक मणिमय ॥ नील तारका नयन, पटुल पेखन अति चञ्चल । सर्व रत्नमय रम्य, रूप सिय लख्यो दृगञ्चल ॥ मृग महामनोहर मञ्जु लखि, मैथिलि मन प्रमुदित भई । उर साभिलाष अति होयकै, पिय बिनती करती भई १८ निशाचार मारीच, सांग मायाकुरङ्ग वह । निकट निधन जिहिं के, रस चारत धावत छिनमह ॥ गहन गहन मधि फिरत, ताहि चह गृहन जानकी । कोटिकाम अभिराम, रामप्रति गिरा गानकी ॥ शरनिशित धनुष धारण किये, मृगपाछे प्रभु अनुसरे । बहुबेर भई जियजानिकै, तदनु लक्ष्मण संचरे १९ ॥ सोरठाछन्द ॥ सियसंरक्षण हेत, लक्ष्मण धनुरेखा

रची। हियहुलसत बिभु हेत, तदनन्तर तित संचरे॥ २०॥

इति श्रीपिपलौदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-रामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे मणिमयमृगमारीच-गमनोनामदशमोल्लासः॥ १०॥

श्रीहनुमन्नाटकेतृतीयोङ्कः॥ षट्पदछन्द॥ आंदोलत शर एक, अपर कर धनुष धुनावत। पुहुपलता लखि ललित, जटा ग्रन्थी सरसावत॥ कोटिराम अभिराम, राम शुभ उपमालायक। बिपिन वीथिकाबीच, श्यामसुन्दर सुखदायक॥ अति अद्भुतगति मृगरूप, वह इत उत तित चितवत फिरत। मायाधिराज रघुराजमणि, इकक्षण नहिं कित थित थिरत १ कबहुंक धरपद धरत, कबहुं रसना तृणचाटत। कबहुं होत अस्पर्श, कबहुं गुल्मन उदघाटत॥ कबहुँक किसलय सूँघि, कबहुँ तनु त्रासित तापते। देखत दिशि दिशि कबहुँ, करत कण्डूति आपते॥ इमि कबहुँक धावत वेगते, कबहुँक थिरता गहत है। वह मायामृग मारीच इमि, अद्भुतगति चितचहत है २ रामकहतभो लक्ष, आप अवलोकहु आछे। ग्रीवभङ्ग अभिराम, मुहुरमुहु हेरत पाछे॥ धावनते धियध्यान, चपलचित चितवत चमकत। पर तनु बीच प्रविष्ट, पूर्बबपु धारत धमकत॥ मनमानि मोर शरपतन डर, ग्रासदर्भ मुख ते गिरत। कृत बहुतर बियति प्रचार है, किंचित पुहमी पै फिरत ३॥ चन्द्रायणछन्द॥ मृगबक्षःस्थल लक्ष कियो प्रभु आप है। दिव्य बाण सन्धान ठान दृढ़चाप है। परमप्रचण्ड प्रहारकस्यो जब इहिं इतै। परहां। होय तपस्वी गयो दशानन तब तितै ४ सुनि मृगया मारीच गये युगभ्रात है। इत आयो दशकन्ध तपस्वी गात है॥ भयसंयुत जिमि मृगी तथा सियनैन है। परहां। ते लखि हौं यह ठानि कहत मुख बैन है ५ धर्मिणि भिक्षा देउ अहो इत आइकै। लक्षण लक्षण लंघिदेत सियजायकै॥ धूरत धुन धिय धारि

धरी धरणीसुता । परहां । परम पतिव्रततीय तोमततिनितनुता ६ जब गहि चल्यो जरूर जानिजिय जानकी । तब रघुनन्दन पीउगिरा गुणगान की ॥ अहह राम हा लक्ष दुष्टलेजात है । परहां । सिंहभाग शश गहत यहै का बात है ७ ॥ षट्पदछन्द ॥ अति आतुर सियबोल, सपदि सुनि युगल श्रवणते । जरठ जटायू गृद्ध, क्रुद्धकह बीस श्रवणते ॥ रे तस्कर परदार, अरे अतिद्रुत क्यों जावत । तिष्ठ तिष्ठ मतिमन्द, तोरत्रासक हौं आवत ॥ तज सीय परम पतिदेवता, नातर जैहौ शमनपुर । मम चण्ड तुण्ड करि खण्ड तब, गिद्धपियेंगे रुधिर उर ८ जन्म ब्रह्मकुल बीच, करउ कृन्तन करि करिकै । कियो समर्चन शम्भु, शीश आगे धरि धरिकै । शक्रहु पै है शक्ति, चण्ड उद्दण्डन दण्डन । कन्दुकइव कैलास, धारि कीन्हें करमण्डन ॥ ह्वै परम पराक्रम पुञ्जयुत, यहै कर्म अनुचित करत । हरिधर्मपाति रघुबीर की, तनक न मन लज्जा धरत ९ रावण सुनि वह बचन, धीयलागो निरधारन । यहै किधौं मैनाक, करत ममभार्ग निवारन ॥ शक्र वज्रते डरत, काहि मम सनमुखआवत । नाहिं गरुड़ निजनाथ, सहित मोहिं न बिसरावत ॥ अब जानि लियोशठ जरठ यह, गृद्धजटायू नाम है । इत आवत निजबधकाज जड़, जैहै द्रुत यमधाम है १० पुत्रिसीय जनि डरहु, दुष्टजैहै नहिं आगे । रे रे निशिचर नीच, काहि मम भयकरि भागे ॥ गहिरघुकुलमणिदार, कितै जैहै रे तस्कर । करिकै चञ्चु प्रवेश, तोरिहौं धमनी धसकर ॥ द्रुत दशहुदिशा दिग देवदश, करौं सद्य संतृप्त सब । दशमत्थ काटि दशमत्थ तब, ऊरन नृपदशरत्थ अब ११ करत अक्ष विक्षेप, दलत ध्रुज चक्रचूर्ण कृत । मर्दत युगहय हनत, रक्षपति किय व्रण आवृत ॥ गर्जत तर्जत रुंधि, तिरस्कृत करत ताहि अति । मग रोकत क्षणमध्य,

क्षणक ताड़त गिद्धनपति ॥ इमि क्षण आकरषतशस्त्र तिहिं क्षण अवलुम्पत बस्त्रवर। पुनि प्रचलतनमतरु ऊर्ध्वगत, अति अद्भुत कीन्हों समर १२ गृद्धराज जब युद्ध, निरखि सह क्रुद्ध निशाचर। चुनि चपेट शिलसदृश, गहन पीस्यो पक्षीवर ॥ कछुक प्राण अवशिष्ट, पक्षि परियो उरवीपर। राम राम श्रीराम, होत धुनि गिरि गुरवीपर ॥ चितचहत चारु रघुवर दरश, तिहिते तजत न प्रानहै। ध्रुव ध्यान धरत बिभु चरणयुग, नहिं अभिलाषा आन है १३ जिय किय शोच जटायु, कछु न मोते बनिआई। सुधा गयो मम जनम, प्रथिप प्रीती न निभाई ॥ नहिं रक्षन बैदेहि, बीसभुज भुजा न तोड़ी। एकहु मुड़्यो न मत्थ, सावती पांचहु जोड़ी ॥ निरख्यों न नयन भरि राममुख, नाहीं कछु कीन्हों सुकृत। हौं भाग्यरहित का करि सकौं, को मम गिनिसकिहै कुकृत १४ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि मूर्छित करि गृद्धको, कियो गौन लङ्केश। बिबिध भांति बिलपत सिया, ब्याकुल हृदय बिशेश ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे जटायुमूर्च्छावर्णनं नामैकादशोल्लासः ॥ ११ ॥

षट्पदछन्द ॥ अहह राम हा रमण, नाथ हा रघुपति सुन्दर। हा जगबीर सुजान, प्रचुर पुहमीश पुरन्दर ॥ हा दशरथ नृप नन्द, सच्चिदानन्द बृन्दनिधि। हा प्रिय पीतम परम, रम्य बिपरीत भयो बिधि ॥ हा कृपासिन्धु संकटहरण, दीनबन्धु अशरण शरण। बर बिदित बिमल बारिज बरण, चरण चारु मङ्गलकरण १ ॥ दोहाछन्द ॥ क्रन्दत निमिनृपनन्दिनी, जगत बन्दनी सीय। कुररी इव कूकन करत, धरत न धीरज धीय २ अति अबिलम्बित गगन मग, लिये जात लङ्केश। लखि बानर गिरि शिखरपर, निज आभरण अशेश ३

सैरध्वजी उतारि द्रुत, अलंकार निजअङ्ग । डारिदिये गिरि शिखर पर, उच्चरत गिरा अभङ्ग ४ मारुति प्रति इमि उच्चरत, ये आभूषण लेउ । राम पीउ देवर लषण, तिन्हैं तात तुम देउ ५ ॥ कविरुवाच ॥ मायामृग मारीचहो, तिहिं मनाकमधि मारि । पुनरागमनकरन्त तब, कछुक कुचिह्न निहारि ६ दाहिनिदिशि द्रुमडित्थ पर, करटर-टत खकूर । प्राणप्रयाण समान कछु, है संकष्ट जरूर ७ लषणभ्रात अनुजात युद्ध, लखि अपलषनकरूर । करत अमित अनुमान मन, हरणहार मुदमूर ८ क्षण क्षण क्षण मधि विश्रमत, धरत धीय नहिं धीर । पर्णशालमधि भ्रातयुत, पहुँचे श्रीरघुबीर ९ सिय न लखत बिलखत हिया, किया कोणत्रय शोध । सूर्यकोण तिन तजिदिया, किया हृदय अवरोध १० शोकभीति धूजत हृदय, सदय सदा रघुबीर । कोण चतुर्थहुजौन सिय, ताकस धरिहौं धीर ११ ॥ अत्र श्रीहनुमन्ना-टके चतुर्थोऽङ्कः ॥ षट्पदछन्द ॥ महाघोरतर समय, प्राण उत्क्रमण अ-धिक है । सिय वियोग अधिगम्य, असवतनु तजत न धिकहै ॥ पर्णशाल सब अन्त, राल आलोकन कीन्हो । कतहुँ न पतिब्रत सहित, सीय अवलोकन लीन्हो ॥ हा हृदय विदीरण होतहै, इहिं अधा अशु कढ़त किन । मम प्राणनते प्यारी प्रिया, तिहिबिन नहिं सहिसकत छिन १२ ॥ दोहाछन्द ॥ एतेपै अवलोकि उत, उत्तरीय शुचि सीय । सुधि रमणी रमणीयमन, करि करि प्रिय कमनीय १३ पुनि पुनि पट जोवनलगे, रोवनलगे अधीर । नयननीर धोवन लगे, लगे निचोवन चीर १४ ॥ षट्पदछन्द ॥ द्यूतसमय उद्योत, होत इहिको पण कीन्हो । प्रणय केलिमधि कण्ठ, पाशइहिं करि करि लीन्हो ॥ बरव्यञ्जन सुरतान्त, समय श्रमहर शुभ सरसत । शय्या सरस निशीथ, समय याहीदृग दरशत ॥ इत विधि वशते प्राप्तभयो

उत्तरीय रमनीय अति। कमनीय कलेवर सीयके, बश्यामानि मुहु मुहुगहति १५॥ चन्द्रायणाछन्द॥ नहिं अन्दर पद चिह्न न बाहरधारिये। पर्णशाल यह मोर कि अन्य निहारिये॥ मैं यह वहहौं राम कि अथवा औरहै। परहां। सिय बिन जिय नहिं सकत जु अवधकिशोरहै १६॥ षट्पदछन्द॥ केहरि हरिले गये, करीस्मित हिमरुचि लीन्हो। दृगहरिगये कुरङ्ग, कान्तिचुनि चम्पक चीन्हो॥ कलरव कोकिल गह्यो, गमन युगभाग कियो है। अर्द्ध गह्यो मातङ्ग, अर्द्ध हरि हंस लियो है॥ कांतारबीच पशु हनि यथा, सब बिभागकरि लेतहै। कान्ता तथैव ममभैथिली, लई हाय दुख देतहै॥ १७॥

इति श्रीवरविलासेरामविलापारम्भोनामद्वादशोल्लासः॥ १२॥

दोहाछन्द॥ युक्त यही केकयसुता, मुहिं पठयो बनबीच। यह मम मति कित कनकमृग,श्रवणन नयन नगीच १॥ षट्पदछन्द॥ अत्रालिङ्गित ललित, कमल कोरकचषवारी। पीताधर अति मधुर,सुधाकर समसुखवारी॥ कलक्रीड़ाबिरभाव, मञ्जु मकरन्द विमर्दित। शुचि यह सुमनसमूह, देवदयिता बिन दर्दित॥ कितगई बचन बदरसमयी, गजगमनी मृगलोचनी। हा सिये प्रिये मम बल्लभे, संतत शोचबिमोचनी २ गाहि गाहि कान्तार, बनांतर बिपुल बिलोके। बल्लीदर्पक भल्लि, सदृश सब चप अवलोके॥ स्मारस्मार गइदूर, प्रिया बहुबारबारहै। गिरिवर ऊपर अटत, बिलोचन वारिधार है॥ हा सिये प्रिये कितमें गई, कछुहु न सुखते कहिगई। ममसर्बससुख सँग लेगई, अति दारुणदुख देगई ३ भूरज रञ्जित सर्ब, वपुष बिधु बिलसत कैसे। दह्यमान बिरहागि, धरालिङ्गितकिय जैसे॥ मन्यु बिदारित चित्त, डुचित है उचरत बानी। हा सीते हा जनक, नन्दिनी सिय सुखदानी॥ लखतेरो आनन चन्द्रमा, मेरे

नयन चकोर है। पुनि मेरो हृदय पपीहरा, स्वाति सलिलवपु तोर है ४ इहि विधि बिलपत बिबिध, पर्णशाला चहुँओरन। फिरत धरत धुवधीर, बीर श्रीअवधकिशोरन॥ हा जानकि कलकमल, नयनि सीते सुखदेनी। मम मनवारिज बिपिन, राजहंसिनि अहि बेनी॥ बहु बिरह बह्निअति दग्ध उर, दीनभयों दृग जलभरौं। किहिठौर जाय कासोंकहौं, किहिदिशि अवलोकन करौं ५ गिरि शिखरस्थित वृक्ष, लताबरबायु न बीजित। कौनगयो गहि सीय, लखी काहू कहु तुम इत॥ चारुचपी बिम्बोष्ठि, बिपुल जघनारसना रटि। सीता नीता केन, बद्धनागेन्द्र काचिकटि॥ तेतरु बूझत तुम कौनहौ, आप कहतहौं रामहौं। नृपअवध ईश दशरथतनय, शोक अनलधिय धामहौं ६ हे गोदावरि पुण्य,वारि पुलिनेते देखी। कमललैन मृगनैनि, इतै आवत न बिशेखी॥ बरबिनोद कछुकरन, बिमल बारिबिच बिलसी। ऐसे बूझत फिरत, रई सूरति हिय खिलसी॥ इमि प्रतिपादप प्रतिनग पठत, प्रत्यापग प्रत्यग रटत। पुनि प्रति बराहिण प्रत्येण प्रति, जानकियाचततित अटत ७॥ दोहाछन्द ॥ पुनि लक्षमण प्रति प्रायुहै, बिह्वल बचन बदन्त॥ बिपुल बिरह उन्माद बश, बावरसम बिलसन्त ८॥ षट्पदछन्द॥ कोहो तुम कहु कहा, यहे हे नाथ नाथतर। दासलक्षमण नाम, आप मैं कौनआर्यबर॥ आर्य कौन श्रीराम, बिजनबन कहाकरतइत। देखत देवी दिव्य, कौन देवी सियसंभ्रित॥ सियनाम श्रवणसुनि बिकलहै, बिबिध भांति बिलपन लगे। हा जनकराजतनये प्रिये, बिरहपयोनिधि मधि पगे ६॥ दोहाछन्द॥ इमि बन बन ढूंढ़त फिरत, सह सौमित्री राम॥ बिलखत बिलपत चकितचित, नहिं जिततित बिश्राम १० येते पै निरखत भये, गृद्धजटायु अचेत। अरु रावणरथ भग्न लखि,

उचरत रामसचेत ११ दशरथ नृपको मित्रवर, शत्रुनिपूदनहार॥ ताप्रति प्रभु उचरनलगे, मूर्छित नयन निहारि १२ पूछतप्रभु पक्षीन्द्र प्रति, करी घोर घनघात॥ कौन कुटिल बृत्तान्त सब, मोहिं सुनावहु तात १३ तब बिलोकि बिभुबदनबर, बदत जटायूबैन॥ बरणत अब ऊदंत सो, सुनिये नीरजनैन १४ निशिदिन शशि रवि अर्द्ध सब, रावण निज चितचीन॥ सामलपक्ष सिताष्टमी, बैदेही हरि लीन १५॥ किरीटछन्द॥ देवनको दिन अर्धलखे यह लेख किये चितचेत चितावत। पितृनकी निशि अर्द्ध कहैं जिहिते अघपक्ष प्रतक्ष पिखावत॥ आठकला युत अर्द्धशशी पुनि मध्यदिने रवि अर्द्ध लखावत। निर्मलपक्ष भये भृगुबासर अष्टमिघोस हरी सिय गावत १६॥ दोहाछन्द॥ चैतशुक्ल तिथि अष्टमी, भृगुबासर बरतन्त॥ मध्यदिवस मधि मैथिली, रावणहरी असन्त १७॥ षट्पदछन्द॥ यह सुनि बोले राम, भग्न किमिकियो महारथ। बज्रांकुर इव क्रूर, तुरड धनुखड़े गिरेपथ॥ हे सीरध्वजराज, पुत्रि तू धन्य लखावत। पञ्चानन पक्षीन्द्र, दशानन कुञ्जरयावत॥ अतिभयो भूरि संग्राम इत, सो तैं निरख्यो नयनभरि। संचार दशानन मत्थपर, भोजटायु समत्थकरि १८ पुनि जटायुप्रति कहत, रामभो तात सुनहु मम। तुम्हरे तेज प्रताप, स्वर्गपद पावतहौ तुम॥ भले सिधावहु स्वस्ति, सहित पै एक कहतहौं। कान्ताहरण बृत्तान्त, तातढिग न कहु चहतहौं॥ है रामनाम जो मोरतौ, कछु थोड़ेसे दिननमें। तित रावण ससुत सबंधुजन, ऐहैं कहिहैं छिननमें॥ १९॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेजटायुस्वर्ग संप्राप्तिवर्णनंनामत्रयोदशोल्लासः॥ १३॥

षट्पदछन्द॥ तदनन्तर श्रीराम, बिपिन बिचरत मृग देखे। इन

दुष्टन के बपु, प्रपञ्च मारीच बिशेखे ॥ प्राणबल्लभाश्लेष, बिपुल बिश्लेष कियो है। मृगी चक्रबध ठानि, चहतमृग बिरह दियो है॥ अतिमम अमोघ नालीक सब, दूरघात नित करतहै। पै प्रिया सदृश सोहत नयन, इहिकारण जिय डरतहै १॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ एते पै गिरि अस्त, गये रबि आपहै। उदय भयो शशितस्य, सदृशबपु थापहै ॥ देनलगे संताप, कमलदल नैन हैं। अरिहां। उचरत हैं श्रीरामलक्ष प्रति बैनहै २॥ षट्पदछन्द॥ चलतरुतल सौमित्रि, तरणि ते तनुतापत अस। लक्ष कहतभो नाथ, निशामधि मिहिरकथा कस ॥ चन्द्रोदयहै यहै, सुनत प्रभु पुनि बचबोले। बच्छलक्षमन ललित, कथं वक्षःस्थल तोले॥ सौमित्रि बदत सुनिये बिभो, लखि कुरङ्ग लक्षन लसत। हाहा कुरङ्गलोचनि सिये, चन्द्रानिनि तव बिन त्रसत ३॥ चन्द्रायणाछन्द॥ मन्दरगिरि करि मथितभयो नहिं पातकी। जास्यो नहिं तम तुच्छ तोहिं घनघातकी॥ हौं तेरे शत टूक करौं इकछनकमें। परहां। जो होतौ नहिं बदन बिदेही बनक में ४॥ षट्पदछन्द॥ दाव दहनतरु शिखर, निवारहु निर्भर जलकर। नाहिं दवानलनाथ, उदयगिरि समुदय हिमकर ॥ बच्छ सुधाकर स्वच्छ, धूमधारन किमि कीन्हो। नाथ नाहिं यह धूम, छौनि छाया चित चीन्हो॥ हा धरणिसुते सीते प्रिये, कान्ते कुत्र गता असी। तव बिरहानल संदग्ध हिय, तदुपरि जारत यह शशी ५॥ दोहाछन्द॥ रामचन्द्रकरुणासहित, बदत बचन अति रम्य। प्राणप्रिया पट्टप्रेयसी, परमप्रेम अधिगम्य ६॥ चन्द्रायणाछन्द॥ अङ्क कहत कबिकेपि, कहत केउपङ्कहै। कित नेकहत कुरङ्ग, बिंब निशङ्क है॥ प्रवदत बिदुष कितेक, छाय यह भूम है। परहां। हौं जानत जिय बिरह, दहन धुवधूम है ७॥ षट्पदछन्द॥ रे रे

निर्दर दुर्निवार, कन्दर्प मनोभव। पङ्केरुह प्रोत्फुल्ल, बाणसंबृणु संबृणुतव॥ तजहु धनुषधरि धीय, कहा पुरुषारसमोप्रति। कांता संग बियोग, जात हुतभुक ज्वालाअति॥ बपुहोयरह्यो संदग्ध अति, ताहि प्रहारतहै कहा। सब शूरपुरुष पावत नहीं, मृतक मारिकै यशमहा ८ आपुंखाग्र निमग्न, तोरशर पंचपंचशर। मद-नाग्नी निर्दग्ध, यहै बपुहोहु निरन्तर॥ निपट निरायुध काम, जीति सकिहै न अपरजन। सुखी हूजियो सर्व, दुखी इकहौंहिं रहहुमन॥ अति उत्तमते उतम सब, यहै बात अवलोकिये। इत एक आपसं-कष्टसहि, दुख त्रिलोकको रोकिये ९॥ दोहाछन्द॥ तरु अशोक वि-कसित बिमल, तिहिंतल गहि बिश्राम। चुपरहि कछु किञ्चितसमय, बदत बचन श्रीराम १०॥ षट्पदछन्द॥ तू नवपल्लव रक्त, रक्तमैं प्रिया गुननकर। आवत अनिश अभङ्ग, शिलीमुखगन तो ऊपर॥ तथा कामधनु मुक्त, शिलीमुख मोप्रतिआवत। कान्ता पदतल हती, हीय उभयन हरसावत॥ समभाव मोर तव सकल है, भिन्नभाव इक यह बसत। लख मुहिं सशोक बिधिने कियो, तव अशोक अभिधा लसत ११॥ सोरठाछन्द॥ हियपर धस्यो न हार, सिय बियोग भय मानि जिय॥ तरुवर सरित पहार, अब अनन्त अन्तर बसत १२॥ षट्पदछन्द॥ चन्द्रचण्डकर सहश, पवनमृदु गति पवि ओपम। मलयजलेप कुलिंग, सुमन ममसूचि अग्रसम॥ रात्रि कल्पशत तुल्य, प्राण भासन्तभारइव। यहै बैदेही बिरह, समय संहार काल-मित्र॥ हाहन्त कितक संकटसहौं, कौनसुनै कासों कहौं। हिय हटकत हटकत फटत है, अटत रटत जकि थकिरहौं १३ बपुभृश कृशता पाय, मोस बिरलाय गयो है। नैननिरन्तर नीर, चलैं वारी नरयो है॥ दीर्घ दीर्घ निस्सांसालिये, सब श्वसन अस्यो है। हरण

होतही तीय,तेज तरतोमचथ्यो है ॥ इमि चारतत्त्व भोगवन तनु, रह्यो शून्य अवशिष्ट है। यह कहा राम जीवन तजउ, कुलिश कठिन अतिक्लिष्ट है॥ १४॥

इति श्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रविरहदशावर्णनंनामचतुर्दशोल्लासः॥ १४॥

षट्पदछन्द ॥ लक्ससहित श्रीराम, महाबन बिच बिचरत उत। गौर गवय मातंग, शरभशार्दूल कोलरुत ॥ कोलाहल आहूत, भूत बैतालपाल है। समुत्ताल कङ्काल, काल बिकराल जालहै ॥ चय-चक्र बालनालकृत, तुमुल घोर चिकारमिल। वहलान्धकार करि-कलितगुह, अन्तराल बिलसन्तकिल १ अबिरल परिमलबहल, सरल चञ्चल बहु बिगलित। बृन्दबिमल मकरन्द, बिन्दुकीलाल जालजित॥ आलबाल बरवृक्ष, सुपिच्छिल लसत ललिततिल। प्रमत्तालि गणमाल, लुलित मारुत आन्दोलित ॥ बाचाल बिपुल फुल्लित लसत, बकुल मुकुल कुलजाल है। धूसरितधूलि कोकिल बधू, कूकमाधुरी मालहै २॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ तरल शिलोच्चय शिखर शिखी समुदाय हैं। नर्तनलीला सानुकूल मुदपाय हैं॥ प्रचलत चक्रचकोर पक्षिगण लश हैं। परहां। गुञ्जत मञ्जुलशब्द बिपुल प्रतिवृक्ष हैं ३॥ षट्पदछन्द ॥ अम्बर चुम्बनललित, लक्ष उर अन्दर दरसत। आलम्बनफल बिपुल, भार आलम्बित सरसत ॥ सकल जन्तु संतोप, पोप निर्दोप बिभूषित। सुधास्पर्द्धि बर्द्धिष्णु, सरस रसमय निरदूषित ॥ हिंताल तमाल रसालतरु, ताल प्रियाल बि-शालफल। मालूरशाल मलशल्लकी, पुनि शिरीष कृतमालभल ४ असन शमी शिंशपा, शाक चम्पक अशोकचुन। कर्णिकार सुरदारु, अवर बहुसार श्रवणसुन ॥ कोबिदार जम्बू कदम्ब, अरु निम्ब उदुम्बर। सो भोजनरु करञ्ज, बकुल निचुलक खजूरबर॥

पुनि बीजपूर जम्बीर, भाण्डार बहुरि वानीरहै। अरु कर्मरङ्गनारङ्ग, चन्दन कदली काश्मीरहै ५ धात्री पाटल कुटज, चील कङ्कोल विभीतक। बटअङ्कोल मधुक, हरीतकि अरु भल्लातक॥ आम्रातक केतक, जयन्ति वैकङ्कत कङ्कत। अरु अश्वत्थ कपित्थ, तित्तिणी जपा अलंकृत॥ बन्धूक नागकेसर प्रमुख, अरण्यानि दुस्तर अटत। बाराहकन्ध आरूढ़ उत, बाम करत उत्कट रटत ६ पुनि दक्षिणदिशि पेखि, दक्षिणाचलपर प्रचलित। मलय मालती तगर, जाति दमनक लवङ्गतित॥ मरुवक अरु कंकोल, कमल कुलमुकुल कुमुदिनी। शतपत्रादिक ललित, कलित कह्लार प्रमुदिनी॥ तिनमञ्जु परमपरिमल मिलित, चुंबित चारु अपार है। काबेरी ताम्रपर्णी सरित, तुङ्गभद्र जलधारहै ७ नीरधार गम्भीर, सान्द्र परिपीत तरङ्गन। मैत्रावरुण सुतीय, ललित लङ्का शशाङ्कभन॥ रम्यरुद्र पादाद्रि, सरल सिंहल सालकजन। श्रीगोपालक पाण्ड्य, अचल विद्रुम मण्डलघन॥ पुन्नाटककेरल चोलचुन, कुन्तल कर्नाटक कलित। करहाट आंध्रकल कामिनी, कृतसनान जित अति ललित ८ पीनस्तन बरबदन, जघनघन भल भुज मूलन। तिष्ठित धुत्र धम्मिल्ल, भार अन्तर्गत फूलन॥ मृगमद अगरु कपूर, कलित कुंकुम श्रीखण्डन। रचित यक्ष कर्दम, बिमर्द्द बर्द्धित बपुमण्डन॥ वह बिबिध गन्ध परिमल बहुल, कुसुम मिलित मारुतचरत। प्रोत्थित भुजंग प्रफुलित फणन, खंजरीट क्रीड़ा करत ९ स्वच्छ क्षीर नीहार, कलित काश्मीर फटिकसित। शुद्ध शंख कर्पूर, कुन्द अवदात अपरिमित॥ महाभुजंगम परम, स्फीत फुत्कार प्रफुल्लित। फणामणिन मधि खंजरीट क्रीड़न्त बिलोकित॥ हुव बाम नयन सकरुण सजल, इतरस बिस्मय मोदमय। उभचिह्न

अशुभ शुभ सूचना, भये संगमन प्रीतिभय १० संस्थितकोल कपोल, काकरव बामभाग हुव। कहत व्यसन अति दुखित, उथित संतत सब जनभुव ॥ बरततहै दिन रैन, कहा अब अग्र दिखावहि। पुनि दक्षिणदिशि, खंजरीट शुभलक्ष लखावहि ॥ अधिरूढ़ भुजंगम फणनपर, क्रीड़त यहहै राज्यप्रद। मम एकसंग दोनोंभये, हैं यह अति आचरजपद ११ ॥ सोरठाछन्द ॥ भरेनयन युग नीर, क्षण बिश्रामकरि चिन्तवन ॥ सकरुण श्रीरघुबीर, बूझन लगे भुजंगसों १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ तरुपल्लवइव लोल, जिह्व बन्धूक सुमनसम। तेरे नीरजनयन, भूरि भ्राजन्त भुजंगम ॥ हौं बूझत हौं तोहिं, पवनभुक कछु करुणाकरि। कोमलांगि शरदेंदु, मुखी देखी कोउ सुन्दरि ॥ इमि सुनत बचन रघुबीरकर, रचनरम्य सुकरुणसने। बोल्यो बिनीतह्वै बैन शुभ, भुजंगराजहियहित घने १३॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ गई गई बपु चम्पवर्ण पीनस्तनी। कुंकुम चर्चित अङ्गि करुणरसमें सनी ॥ शीतलांगिका आश गङ्गइव भ्राजिता। हरिहां। तारागण मधि चन्द्ररेख समराजिता १४ कहत राम इहिं व्यसन अधिकका औरहै। कहाहोयगो अग्र अभ्युदय मोरहै ॥ मरण शरण बरमोहिं नाहिं चह राज है। परहां। वह लक्ष्मण को होउ सुसुखद समाज है ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेशुभाशुभशकुनाऽवलोकनोनामपञ्चदशोल्लासः ॥ १५ ॥

षट्पदछन्द ॥ बाम तिरस्कृत कियो, कियो दाहिनो पुरस्कृत। धन्य सुवन्यशरन्य, अरन्यानी गाहनभृत ॥ किष्किन्धाद्री रौद्र,रुद्र अवतारमारुती। दीनी सकल सुनाय, ताहि निज उरसि आरती ॥ लेगयो सीयहरि कोउ कित, तुम ताको देखी सुनी। कपि हृष्टहोय

संकष्ट हर, बदवानी चेतसिचुनी १ सुनिये कृपानिधान, कपिरामा अम्बर मग। हौंथित हौ तिहि समय, अहो इतमें याही नग॥ पाप रजनिचर प्रबल, किये आकर्षण अतिद्रुत। जावतहो जिहिं बेर, श्रवणधुनि आई अद्भुत॥ हाराम प्राणपति जेहिरिपु,मुखउचरत डारत भई। मणिभूषित भूषण भव्यते,अवलोकन करिये सई २॥ दोहाछन्द॥ आञ्जनेय इमि कहि गिरा, भूषण भव्य समग्र। अविलम्बित उत आनिकै, रखे रामके अग्र ३ रामसजल चष सह करुण, गदगदगिरा गँभीर। भूषण निरखे नयनभरि, बाढ़े पुलक शरीर ४ ये भूषण बैदेहिके, निश्चय मेरे जान। तुमहूँ लक्ष्मण निरखिये, करिलीजै पहिंचान ५ ॥ लक्ष्मणउवाच ॥ नाथ न जानत और मैं, कुण्डल कङ्कन आदि। पहिंचानत नूपुरनको, अनिश अंघ्रिअभिवादि ६॥ कविरुवाच षट्पदछन्द ॥ सियआभूषण अखिल, राम निज हृदय लगाये। युगल नयन भरिनीर, बयन गदगदगिर गाये॥ इतर आभरण धरत,हुती नहिं हार हीयपर। इतकहुँ अन्तर सहि न, सकत जानकीजीय पर॥ फल पंक्ति भेदको प्रापभौ, यह कीन्हो निरधारहै। अब हारन की गिनती कहा, अगणित परे पहारहै ७ मुद्रा मुख मैथिली, लखे बिन गमन चहतचित। परमहंस यह जीव, तदपि नहिं जायसकत कित॥ बैदेही बहुबिरह, बह्निज्वाला बिदग्धतनु। तेहिते भो पर वश्य, पंगु प्रचरत न बनतजनु॥ पुनि पवनपुत्र प्रापत किये, आभूषण अवलोक उन। थुविगये प्राणन पाय न किय, आंजनेय आलाप सुन ८ अनुनय सहहनुमान, विनयबर बचन उचारत। पुहुमिपाल श्रीराम, हीय नहिं हूजे आरत॥ त्यज निज दयिता शोक,एकलंकेश लोकसह। जीतनको समरत्थ, कछू संशय नहिं यामह॥ यह गिरि सुग्रीव निवासथल, तितमें प्रभु पगुधारिये।

रघुवंशनाथ नरनाथ उत, बानरनाथ निहारिये ९ ॥ कविरुवाच ॥ तदनन्तर हनुमान, लक्ष्मण रामसहित तित । गवनकियो अवि-लम्ब, सभय सुग्रीव हुते जित ॥ तीनहुँको कपिनाथ, लखतभो उत में कैसे । मूर्तिमन्त मनु अग्नि, अङ्गधरि आवत ऐसे ॥ है गार्हपत्य इक अनल अरु, दक्षिण दहन द्वितीयहै । अभिधान अमल बिल-सन्त, उहिं आहवनीय तृतीयहै १० अनिलज आनन अकनि, राम कान्ताहृति वृत्तं । बानरेंद्र बरनन्त, प्रबल बाली कृतकृत्तं ॥ बिद्य-मान पतिहोत, यहै अति अकृत कियो है । मारणकारण ताहि, राम-पन तुरत लियो है ॥ श्रीरघुबर कियो अधिज्य धनु, सुबहुल रोषा-नल प्रबल । कान्तापहरणकी ताप अति, हुती अनुभवित भांति भल ११ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नमन ससंभ्रमकियो अवधके इन्द्रको । आलिङ्गनकरि प्रचुर प्रेम सुकपीन्द्रको ॥ हुतभाविनि कन्दर्पकेलि सविलासहै । परहां । बिस्मृत पुनरभ्यास करत मनुतासहै १२ ॥ दोहाछन्द ॥ कपिपति बूझत मारुती, दशरथनृप सुतचार । ताटक अन्तक कौन कहु, बोले पवनकुमार १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ राम भरत अरु लषण, शत्रुहन सुवन चारचुन । दशरथनृपके बिदित, बिश्व कपिराज श्रवणसुन ॥ दिनकरकुल सन्तान, बल्लिबर गुच्छ सुमधु-कर । राजपुत्र सुबिराज, मान तिन मध्य धीयधर ॥ ताटका काल रात्री हुती, रामचन्द्र प्रत्यूष यह । जिहिं चरित कथा कल कन्दली, मूलकन्दसम स्वादगह ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीराम सुग्रीवसमागमोनामषोडशोल्लासः ॥ १६ ॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ सुनत प्रतिज्ञा परम, रामसुख वारिज बिकसी । बालीपठये सप्त, ताल अवलीउन निकसी ॥ दैत्य सात

तरु ताल, सात अन्तर्गत अतिद्रुत । प्रकृति कुटिल करि क्रुद्ध,युद्ध कारण आये उत ॥ सौमित्रि किये ते सरल जिन, शेषपृष्ठ थित मूलकिय । निज चरणभार करिलक्षमण, दिव्यअस्त्र रघुराजलिय १ सोरठाछन्द ॥ सुनिये कृपानिधान, वदत लषण साशंकबच । इनपै शरसन्धान, सावधान है कीजिये २ कीजै सात निपात, एकसाथ इक बिशिखकरि । करत प्रहारक घात, यामें है जो अन्यथा ३ जनि शङ्किये सुजान, रामकहत सावश्यहै । हरत असज्जन प्रान, सज्ज भये सज्जन रहत ४ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ रामलियो कर बाण, बानि मुखलगे उचारण । कियोहोय दृढ़भाव, कुशिकनन्दन पद धारण ॥ अरु पुनि जो मैं होउँ, तिरस्कृत बिप्रशेष बिन । अन्य अङ्गना मध्य, गयो ममसन न एकछिन ॥ तौ सप्ततालको भेदिकै, प्रबिशहु शर पातालमहँ । इमि कहि करि धनुषहि सज्जकरि, कियो बाणसन्धान तहँ ५ कदली बाल प्रकाण्ड, भङ्गसम सत्त्वर कीन्हो । एक बाणमधि सप्त, ताल तरु बेधन चीन्हो ॥ सप्तसप्ति गज सप्त,सप्त मुनि सप्त सरित्पति । सप्तदीप अरु मातृ, सप्त भयभीतभये अति ॥ संख्यान साम्यता तालसम, हनि तिनको हमकोहने । जे सात सात जितनेहुते,ते सब घबराने घने ६ छूट्यो बाण कमान,ताल तरु सात फोरिकै । धँस्यो धरातलले प्रमाण, तिहिं तुरत दौरिकै ॥ भङ्ग भुजङ्गम भूरि, भीत अम्बर पुनि आयो । पुंष धुनाय धुनाय, भाव त्रिधि को दरशायो ॥ कीन्हों न पराक्रम प्रबल कछु, रह्यो शेष अवशेष है । निश्शेष बसुन्धर दारिबो, यामें कहा बिशेषहै ७ सुनतश्रवण संग्राम, रामहत सप्तताल सब । निरपराध बधकियो, तरुन अस जियजान्यो जब ॥ कोपानल प्रज्वलित, हृदय निकस्यो वह बाली । गिरिचत्वर बिचचल्यो, निरन्तर संगरशाली ॥ फरकारी पुच्छ अति

उच्छलत,कटकटात किलकिल करत। उच्छाह छक्यो बहु बक्षथल, अति अधीर धीर न धरत ८॥ कविरुवाच॥ ताराभई सहर्ष,मोद मनमें नहिं मावत। पुरुषोत्तम श्रीराम, परम कृपया पुनि पावत॥ चिर बिरही सुग्रीव, बक्षथल लुठिहौं तूरन। प्रियतम प्राणसुजान,काज सिधिहै सम्पूरन॥ इति मन्यमान गिरिशिखरपर, आरोहन कीन्हों कलित। संग्राम राम अरु बालिको, लोयनभरि लखिबे ललित ६ शैलशिखर संचरत, मनोरथ बितरत तारा। पारागत शोकाब्धि,बीर सुग्रीवसुदारा॥ प्रसुनारत नाराच, प्रबल धाराधिपधारा। हारावलि संत्यक्त,स्रस्त धम्मिल्लनभारा॥किलकिला शालि बालीमहा,कुटिल कुचाली कूरहै। प्रियसन्तापी पापी परम,यमपुर जलदि जरूरहै१० गिरीगरिम गम्भीर, महा महिमालखि बाली। कहत लक्ष्मन राम-बच्छ निरखहु बलशाली॥ बहल कलकला करत, बानराली प्रति-पाली। शिव शिव तुमुलोत्काल, चलित अति कृतघृणिमाली॥ लांगूलबल्लि प्रोद्यत शिखर, कवलित कौशिक कुलिशक्रिय। दो-र्दण्डशैल प्रहरण निपुण, किहिं करिकै योद्धव्यजिय ११॥ दोहा छन्द॥ रामधीरता धारिधिय, नारायणनाराच। सज्ज कलित को-दण्डकरि, सुरचन बचन उवाच १२॥ चन्द्रायणछन्द॥पुरामूर्द्ध अभि-सिक्त सगुणबर विप्रहै। वेदमन्त्रकरि कियो कलित तब छिप्रहै॥ तिनके तेज प्रताप करहु उच्छिन्नहै। परहां। दारुण परतिय हारि प्राणवपु भिन्नहै १३॥ दोहाछन्द॥ पौरन्दरि परदारको, हरण पराभव श्राप॥ ब्रह्मतेज परिपूर्ण पटु, लसत रामशर आप १४॥ षट्पदछन्द॥ पायो बीर प्रमाण, बाणरघुपति बर बिलसत। पावक प्रलय समान, रोचि बिजुरी जिमि उलसत॥ हृदय भेद कृत बालि, तबै पौरन्दरि उचरत। सबके शिरपर काल,यहै वासर निशि प्रचरत॥ मम पिता

पुरन्दर तासु रिपु, रावण अनिहत इतरयो। यहशल्य हृदय शालत प्रबल, हौं सशल्य परपद गयो ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित कवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेबालि हृदयभेदनोनामसप्तदशोल्लासः ॥ १७ ॥

षट्पदछन्द। कविरुवाच ॥ ह्वै सकरुण सबिषाद, राम उचरत लक्ष्मण प्रति। सुन सौमित्रे यहै, काज कीन्हों अनुचित अति ॥ गिरिगह्वर मधिबिहित, योनि निज मानि महतसुख। अनपराध अनुभवत, ताहि दीन्हों महानदुख ॥ किय महाबीर बालीहनन, तासु प्रबल परिताप है। हौं मन्दभाग्य ह्वैहै कहा, अब मुहिं सियसुख प्रापहै १ शिरधुनाय पछताय, रामकह पौरन्दरप्रति। तू ऊरनरन तात, बात यह जग जाहिर अति ॥ मेघनाद शस्त्रोघ, प्रसर हरिदुर्यश दीन्हों। गौतममुनि के शाप, नियन्त्रित भुजबल कीन्हों ॥ किय जनकजास रावनत्वया, कक्षागर्त कुलीरहै। ह्वैजै बिशल्य तव शल्य हर, जाग्रत अङ्गद बीर है २ ॥ दोहाछन्द ॥ मेरी पाय सहायता, अङ्गद हनिहैताहि। ह्वै बिशल्य कीजै गवन, रावण रहिहै नाहि ३ ॥ बालिरुवाच ॥ कहाबालि सुग्रीव जो, कारज करिहै तोर ॥ सो हौंक्षानहिं करिसकत, निरपराध बधमोर ४ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ रामनयन भरिनीर, बिमलबर बोलेबानी। सुनहु पुरन्दरनन्द, कहतहौं तोहिं बखानी ॥ निरपराध सुखअर्थ, तोरबधभयो मोरकर। हनहु अबैतू मोहिं, शुद्धिह्वैहै ममसत्वर ॥ मत होहु जनकजा बिरह अब, अबिरत उर इच्छत यही। सुनिबैन कमलदल नैनके, बाली तब बोल्यो सही ५ ॥ दोहाछन्द ॥ जबलौं हौं हनिहौं न तुहिं, तबलौं शमनसकास। ह्वै निवास तजिदीजिये, स्वर्गवास अभिलास ६ इमि कहिकै श्रीराम प्रति, बाली छांड़े प्रान। तिहि बचको सचकरन बिभु, रघुबर परमसुजान ७ कलुककाल सेवित शमन,

संयमनी पुरवीच। प्रहरि पुरन्दर पुत्रको, निबसे नयननगीच ८ पुनिबिषाद परिहारकरि,कियपौरुष अवलम्ब। परम सुहृद सुग्रीवको, दियोराज अविलम्ब ६॥ षट्पदछन्द॥ आदिकियो अभिषेक, सुहृद सुग्रीव राजपद। यौवराज्य अभिषिक्त, बालिसुत कीन्हों अङ्गद। पवनतनय ले आदि, कपिन सेनापति कीन्हे। बिनशं का प्रस्थान, ललित लङ्काप्रति चीन्हे॥ तव बर्षाकाल व्यतीतकी, कपिभट मन्त्रिन बिनय किय। सुनि माल्यवान गिरिप्रबरपर, बर निवास जानन्त जिय १०॥ चन्द्रायणाछन्द॥ नाहिं रामते इतर शूरतर कोयहै। तिय हतिसम नहिं अन्य पराभव होयहै॥ तदपि न कीनो सपदि समुद्र प्रवेशहै। हरिहां। बन्धनसेतु करन्त आप अवधेशहै ११ नाहिंरामसम बली सकल संसार है। दारहरण सम अहंकार न निहारहै॥ तदपि प्रतिक्षा शरद सेतु दृढ़बंधिया। परहां। तदनन्तर तित जाय निशाचर रंधिया १२॥ दोहाछन्द॥ माल्यवान गिरिशिखर थित, लषणसहित श्रीराम। सुमिरिसीय कमनीयता, बदत बचन गुणग्राम १३॥ षट्पद छन्द॥ इन्दू अञ्जन लिप्त, गलित दृष्टी इव हरणी। बिद्रुम अरुण मलान, श्यामछबि सुबरण बरणी॥ सियास्वल्प सुरलेश, कोकिला कण्ठ परुषसम। बरहिनके बरबरह, गरह युतहेरत हियहम॥ इमि बरणि अङ्ग सादृश्य को, जानकि गुण कीर्तनकियो। लखिताण्डव आडम्बर तड़ित, कहनलगे पुनि भरिहियो १४॥ किरीटछन्द॥ लोचनचारु समान सरोज तिन्हैं यहवारि डुबावत पावत। तोर मुखच्छबिछाय छटासम छज्ज छपाकर मेत्र छिपावत॥ तो गति तुल्य हमेश चलैं जगहंस हमैं दृगदूर दिखावत। यावत तावतमात्र बिनोदन वस्तुसबै लखि दैवदुरावत॥ १५॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री दूलहसिंहजी विज्ञापितरत्नपुरस्थकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवराविलासे वालिवधोनामाष्टादशोल्लासः॥ १८॥

अत्रश्रीहनुमान्नाटकेपञ्चमोंकः ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ श्रीरघुबर कह बचनबर, बानर भटन सुनाय। शुचि सैनिक सुग्रीवके, चित्त सुनत लगाय १ महतव्यसन प्रापतभये, थिर न रहत कोउ लोग। लखि निशङ्क लङ्कापुरी, को इत आवन योग २ ॥ षट्पदछन्द ॥ ह्वै सहर्ष हनुमान, भुजन आस्फालन कीन्हों। निज प्रचण्ड दोर्दण्ड, परम पौढ़त लखिलीन्हों ॥ देव पश्य ममअङ्ग, अष्ट अंगुलमय दरशात। द्वादश अंगुल पुच्छ, बाहुअति लघुतर सरसत ॥ अति अमित अगाध अपार है, रतनाकर किहि बिधि तरत। यह सुनतराम बिस्मित भये, जाम्बवान तब उच्चरत ३ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ देव मारुती यहै रुद्र अवतार है। करहु रुद्र को तवन धीय निजधार है ॥ सुनत यहै बच स्वच्छरामनुति कीन है। हरिहां। कारज मोर अशेष आप आधीनहै ४ मुद्रितमन जनि करहु कहाबपु क्षुद्रहै। लसत रुद्र अवतार कितोक समुद्र है ॥ अघटित घटना घटन पटी यश पेखिये। हरिहां। लङ्का शङ्का कहा गिनतमें लेखिये ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सुनत बचन श्रीरामके, हिय हरषे हनुमान। मनसि महामुद मानिकै, बदत प्रबल बलवान ६ ॥ मनोहरछन्द ॥ कूरम है मूल आलबाल तूल पाथोनिधि, दशौंदिशि शाखा सर्व शोभाकी समाज है। पल्लव समान मेघ सुमन नक्षत्र सर्व, सूर्य सोम फल दोऊ विपुल बिराजहै ॥ कहै हनूमान स्वामि करुणानिधान सुनो, यहै ब्योम वृक्ष मोर क्रम गतआजहै। सुनि कपिराजकी अवाज सियशोध काज, आयसु उचारी अवधपुर अधिराजहै ७ हुकुम चढ़ाय शीशबोले पुनि हाथजोड़ि, इहिकी खुलासा खूब स्वामि सुनि पाऊँमैं। लङ्का इत लाऊँ जम्बूद्वीप लेइजाऊँ उत, अथवा अशेष अम्बुसागर सुखाऊँ मैं ॥ किंवा कैलासमेरु मन्दर बिन्ध्याद्रि आदि अादिन उखारि सेतु-

बन्धन कराऊँमैं । येहो परिपूर्ण प्रभू कीजिये हुकुम तूर्ण, सीय इत लाऊँ लङ्का चूर्णकरि आऊँमैं ८ राजन के राज महाराज अधिराज राम, रावरी रजायसु यथैव सुनि पाइहौं । शोषिहौं समुद्र क्षुद्र लङ्काको अलङ्का करौं, लङ्क अधिपाल बेगिबांधि इत लाइहौं ॥ पतिव्रत मानकीर्ण जानकी ले आऊँ नाथ, अंघ्रिप उखारि अद्रि ओघन उठाइहौं । सागर पटाइहौं हटाय बारिनिधी बारि, दुष्टन दटायकै अरिष्ट उचटाइहौं ६ कहिये कृपानिधान होतहै बिलम्ब मोहिं, मारतण्ड वंशके बिभूषण अखण्डहै । संयुत प्रकारसबिहार तोरणादिसह, लङ्का लाऊँ इतै के तितेई करौं खण्डहै ॥ युद्धकाज क्रुद्ध ह्वै समुद्धत सकल सैन्य, सबको उठाय तितजाय करौं मण्डहै । कछूह्वै असाध्य नाहिं सकल सुसाध्यमम, परम प्रचण्डचण्ड मेरे दोरदण्ड है १० ॥ सोरठा छन्द ॥ सुनि मारुत बरबोलि, श्रीरघुबर प्रमुदित भये । मञ्जुमुद्रिका खोलि, पवनसुवन अर्पणकरी ११ लङ्घन करहु समुद्र, सिय बिसास दे मुद्रिका । पुनि इत आवहु रुद्र, मोजीवत अविलम्ब अति १२ तब तथास्तु हनुमन्त, कहि गहि मञ्जुल मुद्रिका । किय बन्दन अगिनन्त, श्रीरघुबर सुग्रीवसह १३ पवनपुत्र बड़बीर, चपलचले बहुबेग ते । पतितरंगिनीतीर, त्रितवत किय चित चिन्तवन ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे पवनपुत्रप्रयाणो नामैकोनविंशोल्लासः ॥ १६ ॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ दूरतिक्रमक्रम मिलित, घूर्म ऊर्मी मर्मच्छिद । युतरज भरकादम्बककुभ रुन्धत गुरुगति भिद ॥ गाढ़ाम्रेडन रूढ़, घटाघन संघट्टनकरि । नील व्योम सुर सरित, अम्बुकण गहत धायधरि ॥ अति ऐसे झंझा बात ये, करत घोर घनघातहै । अवलम्बि धैर्यधिय श्वसनसुत, सज्जकियो सवगातहै १

प्रोद्यतकृत लांगूल, स्फालकेलीकरि व्याकुल। भये गगनचर अखिल पुच्छफटकार छटाकुल॥ स्तम्भित अक्षि प्रकाशज लधिजलचरवा चालित। भयेभूरि दिगभागवीर लङ्घत जलनिधिजित॥ जङ्घालचंड उड्डीन अति, खगपति अङ्गीकृतकियो। मनमगन गगन मगसंचरत, हनूमान हरषित हियो २ पुच्छकेतु उत्ताल, नभसि पृथुगति अङ्गीकृत। अभ्र द्विधा उत्पतन, पृष्ठ कृष्टोग्र सत्त्ववृत॥ उरूबेग उल्ललित, पयोनिधि ललित लहरकिय। अरुण अङ्गरुचिपूर, दूर सिन्दूर छटा लिय॥ अतितेजभाग करिकै सकल, दिक्करि कटितट अरुणकृत। ते सूर्य विद्ध अम्बुदसदृश, अति उत्तम उपमानभृत ३॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ उहि अवसर आयो उतै, हिमगिरि सुत मैनाक। कछु मो पर बिश्रामगहि, गमनकरो पुनि नाक ४॥ मनोहरछन्द॥ प्रेरित पयोधि रत्नाभ कलकांचनाग, सुवनहिमाद्रिमइनाक नाम धेय है। बचन उचारत भो आये दूर अध्व आप, सुन्दर शिखर मोर अत्रश्रम हेयहै॥ सुनि गिरिबाच अग्र अंगुली लगाय ताहि, चले अग्र उग्रगति मारुति अगेय है। भुजरय पौनपुञ्ज पूरित ककुभकरि, आञ्जनेय अरिन अजेय मग श्रेय है ५॥ चन्द्रायणाछन्द॥ माला शालतमाल तालगण जालहै। बेलातट मारुती लखत सुबिशालहै॥ बल्लभ कल्लोलिनी तूर्ण मुल्लंघयन्। परहां। उच्चशालधी बल्लिगगन मुल्लोलयन् ६॥ पद्पदछन्द॥ अथ दशरथनृपसूनु, अमल आयसु करिकायो। बन मक्षिकसम रूप, पुरीलङ्का लखि पायो॥ पवनपुत्र हनुमान, अन्तरत शिंशप अगहै। मात्रा परिमित देह, जाहि जान्यो नहिं जगहै॥ जानकी अग्र उत आयकै, अभिबन्दन अगणित करत। करअंगुलीय रघुनन्दकी, धरणिसुता सम्मुख धरत ७ जनकनन्दिनी जननि, कौनतू हो शाखामृग। कौन पठायो तोहिं, रामपठयो इततवदिग॥

यहै कहा तव हाथ, मुद्रिका तिनके करकी । तोहिंदई यह नाहिं, निशानी है निज बरकी ॥ जबलई जानकी प्रेमयुत, हृदय लगाई सहित हित । रोमांच कलेवर संचरे, नयननीर बरसत अमित ८ ॥ दोहाछन्द ॥ आंखिनते अबिरल गलत, अश्रुन ओघ अमाप । सुबरणकी जानी नहीं, तब मारुति कह आप ९ ॥ नगानिकाछन्द ॥ सुबर्णकी सुबर्णकी सुबर्णकी सुबर्णकी १० ॥ सोरठाछन्द ॥ अवनि अंगजा आप, कछु आशा उरआनिकै । पोंछे अश्रुकलाप, मुद्रिक सों बूझनलगीं ११ ॥ षट्पदछन्द ॥ अरी मुद्रिका कहहु, कुशल सह श्रीरघुनन्दन । कहु कुशली है लच्छ, स्वच्छ चितसरसत चन्दन ॥ सुन स्वामिनि युग भ्रात, कुशलपै तव चिन्तातुर । बिरह न दीजै देव, यहै अभिलाष रहत उर ॥ सिय तव बियोग जबते छयो, मुद्रिक अभिधा भजिगयो । प्रभु करमधि धारण करत, नित नामधेय कङ्कण भयो १२ इहिमुद्रिक मणि मध्य, पीउ प्रतिबिम्ब बिलोकत । करौं दरश अस आश, उरसि चितदे अवलोकत ॥ निज प्रतिबिम्ब निहारि, अमित उर अचरज आयो । प्रभु मनमेरो ध्यान, धरत सोही बपुपायो ॥ तद्रूपतनकहू ना लखत, पेखिपरत मद्रूपहै । भ्रमभूरिभयद भ्राजन्त मन, सुता जनकपुर भूपहै १३ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ पुनि कछु चेतन पाय कहत हनुमानते । अति कृश पिय बपु जान परत अनुमानते ॥ मुद्रिक कङ्कणभई अवर कहिये कहा । परहां । दारुण दशा बियोग रची है विधिमहा १४ तब बोले हनुमान युगल करजोरहै । पहिलेही कृश परम बिरह पुनि तोरहै ॥ प्रतिपद तिथि नर पढ़त तासु बिद्या यथा । परहां । पावत तनुताकन्तकलेवरहै यथा १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि बैदेही बदत, बिरह मधि कछु न सुहावत । दिनकर समदीधिती, सुधाकर दृग दरशावत ॥ पङ्कज

लगे फुलिङ्ग, कुलिश कर्पूर परसहै। शम्पासम शशिकला, वायु बड़वानल जसहै॥ मनुमलयज दावानललगत, बहुबियोग दुख गाइये। संदेश मोर गहि रामढिग, अविलम्बित उतजाइये १६॥

हनुमानुवाच। चन्द्रायणछन्द॥ कछु न राम शरदूरमात मनमानिये। हरियूथप दुर्गम्य कछु न पहिचानिये॥ कुपित सलक्ष्मण स्वामि रक्षकुलहै कहा। परहां। सानुकूल तव देवदेव प्रमुदितमहा॥१७॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेमारुतिमैथिली-संवादोनामविंशोल्लासः॥ २०॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ एते पै सम्रपञ्च, पवनसुत पूछनलागे। राजबाटिका कहां, मात कह पश्चिमभागे॥ धास्यो रूप प्रचण्ड, पुच्छ फटकारि गयेतित। लीलावन उत्पाटि, कियो मधुफल भक्षणजित॥ अभिधान अक्ष रावणसुवन, मास्यो परिघाघातहै। तिहि क्रोध अ-रुण लोचन किये, मेघनाद दरशातहै १ ब्रह्मदत्त ब्रह्मास्त्र, चलायो मेघनाद जब। रुद्ररूप मारुती, ऊपरै बृथाभयो सब॥ इन्द्रजीत उर आनि, अमित बिधि निन्दाकीन्ही। तबै बिधाता पवनपुत्र, नुति कृतिचितचीन्ही॥ पुनि चारुचतुर्मुख बिनयतें, आये बन्धनबीचहरि। बानर बिलोकि रावणतदा, बोलत रचना बचनकरि २ रे बानर तू कौन, अरेहौं तवसुतहन्ता। खण्डखँडन श्रीराम, दूत अभिधा हनु-मन्ता॥ मम दोर्दंड कठोर, ताड़नाद्भुत गतिसोहै। त्रिकुटाचल है कहा, मेरु का तू पुनि कोहै॥ कोदण्ड जगत दीक्षा गुरू, अवध अधिप अधिकायते। लङ्केश निशाचरनाथ तू, कहा कोटि कीग-यते ३॥ चन्द्रायणछन्द॥ कुपितहोय लङ्केश चलायो खग्गहै। कस्यो न कपिको केश सुमन जिमि लग्ग है॥ सज्जन मैत्री यथा नाहिं उच्छिन्नहै। हरिहां। तथा श्वसनसुत बपुप भयो नहिं भिन्न है ४

शणवेष्टितकरि बहल चलंचयतूल है। तैलप्लुतद्रुत कियो ललित लांगूलहै॥ दनुज करत देदीप्यमान दरसन्तहै। हरिहां। हेरिहेरि हनुमन्तहीय हरसन्तहै ५ सिया हिया अकुलाय कहत बरबैनहै। चित चिन्तातुर महातनक नहिं चैनहै॥ अरजी अनल चुनन्त अनिलसुत कारने। हरिहां। सुहृद सुवन जियजानि कृपाकफधारने ६ आज्य होमकरि कियो राम तुहिं तुष्टहै। परुषबचन सुनि बिप्र भये नहिं रुष्टहै॥ पतिभक्ती करि युक्त मोर जो चित्तहै। हरिहां। हूजोशीतल मद्य मरुतके मित्त है ७॥ सोरठाछन्द॥ शीतल भयो हुतास,सुनि सियकी पटुप्रार्थना। हनुमतहीय हुलास,चारुचन्दनालेप सम८॥ मनोहरछन्द॥ निपट निशङ्क लङ्कगढ़को दहन कियो, बानरके पुच्छ पायो जन्म अग्नि आप है। ज्वाला आसमानलौं बिकासमान भासमान, दशौं दिशि पूरिरहीं अम्बरअमापहै॥ आसुरी असुरबाल वृद्ध तरुणादि सब, व्याकुल बिशेषहाय अखिल अलापहै। मनो राम चापशर दापके संताप तप्त,स्वर्गभो पलायमान रावण प्रताप है ९॥ चन्द्रायणाछन्द॥ पलभक्षक पल भक्षिहुताशन प्रबलहै। परम प्राप्त संतृप्तिभयो अति चपलहै॥ गिस्यो अम्बुनिधि बीच जासप्रतिबिम्बहै। अरिहां। मानोपिवत अति तृषित तितै अब अम्बु है१० दशग्रीव उहिबार करत सुबिचारहै। हनूमान बरबिदित रुद्र अवतार है॥ हौं भ्राजत भव भक्तनगर मम किमि दह्यो। परहां। इहिको कारण यही चारु चितमें चह्यो११ दश शिरकरि दशरूप भये संतुष्ट है। एकादश अवशेष भयो यह रुष्ट है॥ पंक्तिभेद कल्याण कौनको देतहै। हरिहां। नगरदाह हनुमान कियो इहि हेतहै१२॥षट्पदछन्द॥ बड़वानलकरि सिन्धु,बिम्ब दिनमणि करिअम्बर। चपलाचयकरिलसत,कहा अति मेघाडम्बर॥ भालनेत्र भ्राजन्त,तथा नाहिं शशिभृत

करहै। प्रलयानल करि काल, इन्द्रधनुधाराधरहै ॥ इमि ध्रुवमण्डल करि मेरु गिरि, तस शोभा नहिं लहतहै । देदीप्यमान कपि पुच्छ करि,अनुपम उपमा गहतहै १ ३ मन्दमन्द गिरि कहत,निशाचर नगर निवासी। मरुतपुत्र इक यहै, पुच्छ ध्वज गगनबिलासी ॥ रक्षा मणि कपि कटक, अहह इत पीछो ऐहै । चीन्हि चीन्हि के सकल, दुसह दारुण दुख दैहै ॥ इहिं एक कियो उतपात अस, अगणित बानर आयहैं । अति हाय हाय घबराय, घट कहा कहा दुखपाय हैं १४ नभमण्डल थितहोय, कहत कपिवर दशमुखसों। हौं इकतू कोटीश, तदपि तुहि जीतों सुखसों ॥ जनकसुता जानकी, लेव जावो तित अतिद्रुत। सबप्रकार समरत्थ, स्वामि मुहिं दिय न हुकुमउत ॥ सुग्रीव अग्र रघुबीरबर, भुज उठाय ऐसे कही। क्षणमध्य छपाकर निकरयुत, रावणहौं हनिहौं सही १५ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि कहि लङ्का भस्म करि, बनिकाशोक बिहाय। अभिज्ञान याचन करत, श्रीजानकि ढिगजाय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामाविरचिते श्रीवरविलासे लङ्कापुरदहनो
नामैकविंशोल्लासः ॥ २१ ॥

कविरुवाच। चन्द्रायणछन्द ॥ काल ब्यालबर बधू सदृश बिलसन्तहै। धूमशिखा सम शत्रु शिखा सरसन्तहै ॥ शिरोरत्न सियलेय दियो हनुमानहै। परहां। अभिज्ञान यह एक सु प्रथम पिछानहै १ चित्रकूट गिरि काककलेवर धारिकै। शक्रसुवन मम गयो सुहृदय बिदारिकै ॥ ईषिकास्त्र करि कियो तस्य चखकान है। परहां। श्रीरघुबर को देउ द्वितीय अभिज्ञानहै २ मनशिशला मम तिलक सुललित कपोल में। कियो पाणितल मृष्ट करहु जिय तोल में। यह तीसर अभिज्ञान पीउप्रति भाषिहौं। अरिहां । जीवन अवधी

मासमात्रकी राखिहौं ३ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ जलयुक्तं गहि रत्न, प्रमुख अभिज्ञान अनूपम। अभिवन्दन किय जनकनन्दिनी पद बारिजसम ॥ आय उदधितट आप, अटन अम्बर मगकीन्हो। आडम्बर भुज प्रबल, पराक्रम अद्भुत चीन्हो॥ हनुमन्त महामति-मन्त अति, साधि स्वामि कारज सकल। अति सत्वर उत आवत भये, जित रघुवर बिलसत बिकल ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ मारुत चुम्बित चारु केसरा लसतहै। प्रमुदित ताराधीश अग्रशर दृशतहै ॥ बिर-हित रामालोक सुआतुरवन्तहै। हरिहां। आयो यहै बसन्त किधौं हनुमन्तहै ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सीतापति सम्भ्रम सहित, आलिङ्गतअव-लोकि। बिनवत युग करजोरिकै, बारम्बार बिलोकि ६ ॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द ॥ पियो नाहिं अम्बुधी, नाहिं लङ्काचुर नीता। रावणशिर लायो न, नापि सीता आनीता॥ आश्लेषार्पण पारि, तोष कारण किहिंपाऊं। लखि प्रभु प्रभुता परम, अनुग निज जीय लजाऊं॥ बिभुवार्त्ताहारक दूत मैं, युत सँदेश इतउत कहौं। किहि लायकहौं करुणानिधे, आलिङ्गन कैसे चहौं ७ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामकहत विकलपसहित, एरे कुटिल बिधात। कहा कहा करिहै अहौ, सो जानी नहिंजात ८ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ कितै अयोध्यापुरी, अवर पुनि रामभद्रकित । तेऊ दशरथ बचन, पाय आये दण्डकइत ॥ कौन दुष्ट मारीच, कनकमय मृग अति अद्भुत। कुत सीता अपहार कितै मैत्री कपिपतियुत॥ मुहिं कित सीताकी शोधको, पठयो श्रीरघुबर तितै। अति क्रूरकर्म सुबिधात यह, अघ-टित अघटित कृतइतै ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामररत बिदरत हदय, प्राणचहत परलोक। तूसन आवेदन करहु, जिमि जानकि अवलोक १० हनूमान सत्वर बदत, जगदानन्दक राम। तोर

प्राणगति द्वारकी, अर्गलकर अभिराम ११ इमिकहि अर्प्यो शिर रतन, तिलक मृष्टचखचूर्ण। चित्रकूटगिरि शिखरपर, सो बरण्यो सम्पूर्ण १२ रामराय अभिज्ञानत्रय, साधु साधु कह बैन। प्रियाकुशल पूछनलगे, जलभरि नीरजनैन १३ ॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द ॥ कृशता बरणनकरौं, शशिकला प्रतिपद थूला। पठिये पुनि पाण्डुता, मृणाली मेचकतूला ॥ अश्रुओघ उच्चरौं, अम्बुनिधि अलप लगत है। लखत सीय सन्ताप, हुताशन शीतपगतहै ॥ लावण्य शेष बपु लगत वह, हिय रावर स्मृतिमात्रहै। हनुमन्त कहत सुनिये प्रभो, केवल करुणापात्रहै १४ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ प्रभु पूछत हनुमन्त पुनि, लङ्कापुर के बीच। कहा कथा किय कर्णगत, कहहु उच्च अरु नीच १५ ॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द ॥ नाहिं कथा शृङ्गार, कुतूहल कथा नाहिं कित। नहिं साङ्गीतक कथा, कथा विद्यान जितै तित ॥ नाहिं करिन की कथा, तुरंगम कथा तथा नहिं। नाहिं धनुष की कथा, बिशिखआदिकन कथाकहिं ॥ सुन नाथ निशाचर नगर मध्य, स्वपनहुं मधिनहिं अन्यथा। भयभीत रावरे भूरिमन, प्रबल पलायनकी कथा १६ ॥ श्रीरामउवाच। दोहाछन्द ॥ त्रिदशन करि दुर्द्धर्ष अति, लङ्कापुरी महान। विद्यमान दशकण्ठके, किमि जारी हनुमान १७ ॥ हनुमानुवाच ॥ सीताके बिशवासकरि, कियो लङ्कपुर दाह। पहलेही वह दग्धही, कोपानल नरनाह १८ इक शाखाते कूदिकै, शाखान्तर पै जाय। शाखामृग को जोर यह, रञ्च न अधिक लखाय १९ सागरको उल्लंघिबो, तथा लङ्कपुरदाह। रावर पूर्ण प्रभाव भल, निरखिलेउ नरनाह २० ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कामधि शङ्का सहित, शरमाप्रति सियबैन। कीटभ्रमरके न्यायकरि, पिय बपु मोरबनैन २१ ॥ शरमोवाच ॥ तू गहि है जो पीयबपु, पिय बनिहै

तनुतोर । होहिं युगल बिपरीत रति, यामधि कहो निहोर ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे हनुमद्विजयो
नामद्वाविंशोल्लासः ॥ २२ ॥

हनुमन्नाटकेषष्ठोङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ पवनपुत्र जब जाय, कही कपिपति ते ऐसे । राज्य गर्बकरि बिसरि, गयो प्रभुकारज कैसे ॥ बालीदशा बिसारि, दई सब भूल्यो निजदुख । पूरण रामप्रभाव, अनुभवत इत सारेसुख ॥ सुग्रीव सुनत मारुत बचन, सकल सैन सह संचरत । परिहारि प्राणप्रिय प्रेयसी, समरबीरता धियधरत १ बिजय दशमि आसौज, बिशददल श्रीरघुनन्दन । कियो प्रबल प्रस्थान, निखिल निशिचरन निकन्दन ॥ बल अष्टादश महा, पद्म संख्या कस बलहै । यूथनाथ ये कहे, अपर कपिसंख्य प्रबलहै ॥ बहु व्याप्त भयो भूतल सकल, दिशाविदिश आकाश है । कपि कटक बिकट कटकटत रद, किलकिल शब्द प्रकाशहै २ हनूमान कह सुनहु, निखिल नरनाथ मुकुटमनि । आवत यह चहुँओर, अमित कपिकटक अनीकनि ॥ जिनके भाराक्रान्त, भूमिमज्जत तिहि भरकरि । दशन कटंकरि लिखत, शेष अहिकमठ पीठपरि ॥ उत्पतत पतत ज्यों ज्यों प्लवङ्ग, त्यों त्यों नमतरु उन्नमत । फणिराज प्रयाण प्रशस्ति लिखि, फेनपुञ्ज अविरत वमत ३ रुन्धित सन्धी सन्धि, श्वास उर्मिन करि अविरत । हारावलि गलछन्न, रत्न अदयालु अमितच्युत ॥ कीन्हों फल भञ्जिका, भङ्गक्रम परम परिश्रम । श्रवणाकाश निरन्तराल शिरस्तब्ध भुजंगम ॥ धुव धारत धरणीधीर धरि, भुग्न भयो भासन्तहै । बानर सुबीर बिक्रमनभर, तरलताप त्रासन्तहै ४ रटतरामभो मरुत, सूनुसुनि लीजै सत्वर । क्लेश करनको कूर्म, ककुभकुल थगित निखिलकर ॥ धराधरन धुजन्त, धूलिभर सिन्धु कर्दमित । रजकरि रुन्धतगगन,

कटक कपिकेर अपरिमित ॥ नासीर पुरप्पुर प्रचुरबल, बागाडम्बर बहुलसत। पै जानतहौं यह मोर सब, विजय तोर भुजबल बसत ५ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ अति अद्भुत कपि कटक लखि, भिल्लभामिनी भूर। बदत बचन परिहासयुत, निरखत सैनानूर ६॥ षट्पदछन्द॥ नाहिं शस्त्रकित लसत, न कछु अन्नन अवलोकत। नाहिं रथनकी कथा, वाहवारण न विलोकत ॥ नाहिं वृषभ नहिं सुतर, शिबिर नहिं नृपहु जटाधर। वितनाहिं बर बसन, नाहिंनृप रचन छटाधर॥ भाषत जरठ भिल्लीन सों, हम बैठी इतप्रातहै। सुनि कहत सकल समुझायकै, तिनकीते सब मातहै ७ लङ्कागढ़ जेतव्य चरण, तरणीय जलधि जल। प्रबल शत्रु पौलस्त्य, सहायक इतमरकटबल ॥ यदपि राम यह एक, सकल रिपु प्रतिबल दलिहै। निशिचर निकर निशेष, पराभव पावत पलिहै ॥ कहि क्रिया सिद्धि सब सत्त्वमधि, महतजनन की मानिये। आडम्बरहै उपकरनको, यह अवश्य उर आनिये ८॥ कविरुवाच ॥ अत्रान्तर वृत्तान्त, तत्र लङ्का लीजै सुनि। मन्त्रशाल उपविष्ट, मन्त्रिप्रोच्छाहित चित चुनि॥ बदत बिभीषण, बचन, सहित उत्कण्ठ भटनप्रति। स्वर्णपुंख शित बिशिख, बज्रसम मनो बायुगति ॥ जबलौं न गहैं शिर सबन के, तबलौं है कर्त्तव्य यह। द्रुत दशरथनन्दन दीजिये, निमि नृप नन्दिनि मोदमह ९॥ मनोहरछन्द ॥ त्रिवरग धर्म अर्थ काम ये कहावत हैं, मोक्षको मिलाय चतुर्बर्ग पहिंचानिये। धारिये धरम प्रातहीते मध्यद्योस जौलौं, उत्तर अहनि अर्थ संग्रह सुठानिये ॥ सायंकाल समै काम सेवन यथेच्छ कीजै, गावत गोबिन्द श्रुति बचन प्रमानिये। मोक्षहै महान जिय जानहु जहान बीच, आठौ याम सो अवश्यमेव उर आनिये १० ॥ सोरठा छन्द ॥ अर्पहु सीता राम, कहत बिभीषण भ्रातते। नय धारहु धिय

धाम, अनय किये बिनशत सकल ११ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि रावण प्रति कहत, यहै नर बानर जाती । इनते रहिये डरत, बड़े ये सब उत्पाती ॥ हयहय महिपति मनुज, बसे कारागृह अन्दर । निबसे जाकी कक्ष, वहे बाली हो बन्दर ॥ पौलस्त्य करतहौं प्रार्थना, रघुबर सीय समर्पिये । बन्धनागार थित बिबुधगण, तिन बिसर्जि सन्तर्पिये १२ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ किल नाशक कुलकीर्त्ति कोप तजि दीजिये । बहु बर्धन यश बंश धर्म धियश्री जिये ॥ ह्वै प्रसन्न सब बचैं काज सो कीजिये । हरिहां । दाशरथी श्रीराम मैथिली दीजिये ॥ १३ ॥

इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे बिभीषण
सम्भाषणोनामत्रयोविंशोल्लासः ॥ २३ ॥

रावणउवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ कह सकोप जानकीजीय जानन्त हौं । मधुसूदन रघुनन्द मनसिमानन्तहौं ॥ बधजानत दशबदन तदपि थिर थप्पिहौं । हरिहां । मेरे जीवत राम सीय न समप्पिहौं १ ॥ दोहाछन्द ॥ रावण ऐसे बचनकहि, कृतबामांघ्रि प्रहार । तबै बिभीषण गमन किय, लिये सचिव सँगचार २ महातङ्क लङ्कानगर, धूमकेतु निजबंश । छांड़ि बिभीषण तूर्णतिहिं, चल्यो हुलसि हिय हंस ३ बिबिध बिराजित नितहुते, श्रीरघुनन्दनराम । तितआति तूरन आयकै, चितपायो बिश्राम ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ लखत बिभीषणभाव, परस्पर बानर उचरत । करि है लङ्काधीश, प्रणति पदपङ्कज प्रचरत ॥ जिमि कीन्हों सुग्रीव, सकल मर्कटभट राजा । तैसे याहि अधीश, अरपिहैं असुर समाजा ॥ इहि साखी तुम हम सकल, है यामें संशय नहीं । अतिउर उदार दातार तर, श्रीरघुनन्दन हैं सही ५ ॥ दोहाछन्द ॥ जो बिभूति दशग्रीवको, शिरछेदे शिव दीन । राम बिभीषण कोदई, दरश होत लघुचीन ६ प्रणमि चरण बारिज बरण, पुनिबर

आयसु पाय। निकट बिभीषण थित भये,अविलखि उर न अत्राय ७॥ षट्पदछन्द॥ अथ सौमित्री मित्र, पुत्र दशरथ नरनायक। उत्तर तट अम्भोधि, भये थित जन सुखदायक॥ गर्भ दर्भ आकीर्ण, अमल उपवेशन ऊपर। बैठे रघुबरराम, अपर सब भ्राजत भूपर॥ आयो न अग्र जब अम्बुनिधि, तब अति कोपारुण बरण। आग्नेय अस्त्र आदत उन, सिन्धु सलिल शोषण करण ८॥ कविरुवाच। चन्द्रायणा छन्द॥ रामचन्द्र दशबदन नाश उद्यम कियो। मांसाहारीजीव महामन मुदलियो॥ मृग कपि बन अरु बैश्य तपोधन आदिकी। अरिहां। महाभित्रता मानिलईजु अनादिकी ९॥ षट्पदछन्द॥ होतो नहिं मारीच, हिरन बञ्चन को करतो। हनुमत कपिबिन कौन, कहै मनसंशय हरतो॥ सघन महाबन बिना, सीय हर रावण कैसे। बिन तपसी के शाप, सबै बानक किमि ऐसे॥ ये सुहृदवर्य हमरे सबै, परम कृपा इन प्रापहै। अब करिहैं अदन अघायकै, आमिष असुर अमाप है १०॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द॥ अति भयसंयुत सिन्धु, सुरबपु धरिआयो उतै। राम दीनजनबन्धु, तवन करत कर जोरि युग ११॥ समुद्रउवाच। षट्पदछन्द॥ पूर्व पितामह सगर, आप निश्चय अनुमान्यो। ह्वैहै हमरे गोत्र, नृपति दशरथ जगजान्यो॥ हयमख करिहैं वहै, आज्य आहुति बहु परिहैं। व्याकुल ह्वैहै कमठ, शेष किमि धरणी धरिहैं॥ तिन ताप शमन सागर सकल, सुरसरि संयुत प्रकट कृत। थिरथपे तिन्हैं उथपत अबै, अनुचित उचित न धीयट्टत १२॥ श्रीरामउवाच। दोहाछन्द॥ चापलयाउ सौमित्रि मम, शोषौं सागरनीर। चरणन ते चलिजायँगे, बिन श्रम बानर बीर १३॥ कविरुवाच॥ तबै बिनय किय तोयनिधि, जो है बन्धन सेतु। युग युग लौं जाहिर रहहि, जगमधि कीरति केतु १४ सुनि बारिधि के बचन

बर, हुकुम दियो श्रीराम। करत सेतु रचना रुचिर, बानर नलअभि-
राम १५ ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ तिरत देखि प्रस्तरन, मरुतसुत
बचन उचारत। बड़ अचरजकी बात, प्रभो प्रत्यक्ष प्रचारत ॥ पाहन
डूबत आप, अवर संगीन डुबावत। इहां तिरत सबतेपि, अपर सह-
चरन तिरावत ॥ यह ग्रावनको गुण है नहीं, बारिधि बानर को
तथा। रावर प्रताप महिमा लसत, इतरन की इत का कथा १६ ॥
चन्द्रायणछन्द ॥ प्लवग पुरोगम सिन्धुसलिल मय देखिया। तिन
पाछे कपिकटक पङ्कमय पेखिया ॥ उनहूँ के पश्चात् भाग बानर
रहे। हरिहां। जलधि हुतो इहिठौर बचन ऐसे कहे ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोबिन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसेतुबन्धनन्नाम-
चतुर्विंशोल्लासः ॥ २४ ॥

हनुमन्नाटकेसप्तमोङ्कः ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ गिरिसुबेल तट कपि
कटक, युत उतरे रघुबीर ॥ उर अनुकम्पा आनिकै, उचरत गिरागँ-
भीर १ ॥ श्रीरामउवाच ॥ महाबीर अङ्गदबली, तुम रावणढिग जाउ।
प्रथम साम कर्त्तव्य है, सो करि हुत इतआउ २ ॥ षट्पदछन्द ॥ उभय
बन्धु असमक्ष, होत तैंने हरिसीता। आधिपत्य अहंकार, मत्त अ-
थवा आनीता ॥ ताहि दीजिये तुरत, न तर लक्ष्मण मार्गन गन।
करहिं असुर उच्छिन्न, उच्छलच्छोनित क्षितिघन ॥ सह पुत्र पौत्र
परिजनसहित, अन्तकपुर प्रतिजायहौ। जउ बीसश्रवण चष बीस
तउ, बधिरऊअन्ध कहायहौ ३ ॥ कविरुवाच ॥ कहि तथास्तु युवराज,
पितृबध बैरबिसर्जित। चल्यो चपलगति लङ्क, उरसिरिपुशङ्क बि-
वर्जित ॥ गगनाङ्गन उत्पतन, करत किलकिलरव करि करि। प्रबल
पुच्छ फटकार, उच्च धाराधर धरि धरि ॥ उतपात केतु उद्भट असुर,
सिंहासन आसीनवहि। उपमान अमित अङ्गदलसत, निर्जरपति

सुत सुवनसहि ४ ॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ मालुमकरी प्रहस्त रामको दूत है। आवन चाहत इतै कोपि कपिपूत है ॥ आयसु असुराधीश दई अन्दरगयो। हरिहां। अवलोकत आकाश बचन उचरतभयो ५ ॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द ॥ रे कौनपकुल कहौ, कौन रावण अभिधाना। रतनरवीन्दू बंश, हरनकरि नष्ट निदाना ॥ त्रिजगदहन त्रयनयन, त्रिशिष शूलहुते अतुलित। प्रलयानल प्रभु राम, असुरहूहै पतङ्ग तित ॥ चितचाहत जो तुमरो भलो, उत्तमबात बतात अब। सीता समर्पि सन्तर्पिये, घटिजैहै घनघात सब ६ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ साभ्य सूय रावण रटत, अङ्गद उत्तरदेत। भय उक्ती प्रत्युक्ति युत, उत्तम उपमालेत ७ ॥ अन्योन्यभाषण। षट्पद छन्द ॥ रेकपि तू है वही, कौन जो पहिले आयो। जाकी जारी पुच्छ, तनय मम जाहि बँधायो ॥ ताने तो तित कही, निखिल लङ्का पुर जारयो। मारयो तव सुत अक्ष, सुधा कपिबचन उचारयो ॥ यह झूठ बात कै सत्यहै, कोप लाज भय युतभयो। अङ्गद बरिष्ट बरबैन सुनि, रावण मुख मुद्रितरयो ८ पुनि रावण बूझत, अरे कपिगुण कहतावक। रामराज लेख्यार्थं, दूरधापक बहुधावक ॥ लङ्कादाहक हनूमान, वह कहहु कहां अब। राक्षस सूनू बद्ध, श्रवण सुनि तित ताड़ित सब ॥ भासत जित सब्रीण अति, परम पराभव पाय कै ॥ वह कोजाने किहि ठौर है, कितमें रह्यो लुकायकै ९ जिहि कपिकिय पुरदाह, अवर कानन कृत भञ्जन। गिरि दरि असुरन भरी, अक्ष सुत कीनो गञ्जन ॥ तुम जानतहो ताहि, कछू वह करिहै बिनती। पै हमरे इहि कटक, बीच ताकी नहिं गिनती ॥ वह दूर दूर धावन बिषे, बिदित बड़ो मजबूतहै। सन्देश इतै उत भेजबे,ल्यावन कारन दूतहै १० लङ्का दई जलाय, अक्ष तवसुत संहारयो। अरु पुनि

असुरन ओघ, अमित क्षण बीच प्रहास्यो ॥ सम्भाषण सियकीन, अब्धि उल्लङ्घन ठान्यो । उहिं अविधा हनुमान, मान कानन भल भान्यो ॥ जबकामपड़े बड़युद्धको, तितै ताहि भेजत न कित । कछु दूरलेन सन्देश है, तब तितको प्रेषन्ति नित ११ ॥ रावणउवाच ॥राम सुन्दरीविरह,बिदित बैठ्यो बपुहारित । तासचिन्तया लच्छ,भयोभल बच्छ बिदारित ॥ बयोवृद्ध सुग्रीव, यथा निर्मूल कूलतरु । कौन बिभीषण गिनत, अतिथि अरिभयो दीनअरु ॥ रावण बदन्त अङ्गद सुनहु, और न कोऊ अनेकहै । लङ्कालगाय पावक परम, मोरवध्य कपिएकहै १२ ॥ अन्योन्यभाषण ॥ कोहै बनपति तनय, कौन बनपति तव संगी । कोसंगी इकदिवस, सप्तसागर कृतअङ्गी ॥ कक्षापुट तुहिंलिये, फिस्यो वह बानरबाली । हां जान्यों वह कुशल, कुशल तितकर्म कुचाली ॥ श्रीरामचन्द्र जबरुष्टहै, स्वस्तिमान को रहि सकत । अनरन्यभूप तर्पण करन, रम्य रुधिर तो तनुतकत १३ कहा करतहैं राम, प्रतीपन बिजय निरन्तर । किहिप्रतीप जयकियो, बिदितबाली सुदिगन्तर ॥ कोबाली का बिसरिगयो, पहिंचान कहा कपि । यहहू बिस्मृति तोर, अहो बड़मोह महानपि । परियङ्क बद्ध दश बदन तू, निज बालक कलकेलिकृत । लत्ता प्रहार ममबिसरिगो, अति अचरज ध्रुवधीय धृत १४ ॥ अङ्गदउवाच ॥ प्रथम तिस्यो दुर्लंघ्य, अम्बुनिधि बानर शावक । दैत्यन बहु दुर्मेद्य,भेदि प्रविश्यो पुरतावक ॥ बनरक्षक उच्छिन्न, भक्षिफल अक्षहननकिय । प्रदहन लङ्कापुरी कियो, अवलोकनहू सिय ॥ इतिबिभ्रमान दशबदन तव, एक अल्पकपि आचरित । मैं कौनकौन बर्णनकरौं, रामभूप अगणित चरित १५ ॥ रावणउवाच ॥ रावण करि आक्षेप, उचारत आनन ऐसे । भग्न भग्न सिवचाप, बालि आहतहत तैसे ॥ सप्त तालहत

हतक, वारिनिधि बद्धबद्धकृत। कहापराक्रम राम, अहंकृति करि उर आवृत॥ धुरधरत शैलभारगधरा, अहिपति अङ्गद शिवलसत। तिनसहित अचल कैलास धृत, बिरहित रुज ममभुज द्रसत॥१६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित कविटीकारामाङ्गजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गदान्योन्यसंभाषणंनामपंचविंशोल्लासः॥ २५॥

कविरुवाच। दोहाछन्द॥ सुनि सुनि रावणके बचन, करि करि कपिपति कोप॥ स्वामिभक्ति अभिनेय उर, बच उचरत साटोप १॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ करि कक्षागत तोहिं, बालि नामा बल वारो। कपिकुल तिलक सुसप्त, सिन्धु सन्ध्यार्चन सारो॥ कियो अखिन्न अविछिन्न, बलिष्ठ न उहिं सम कोऊ। श्रीरघुबर रणधीर, हन्यो इकशर करि सोऊ॥ सत्यज्ज्य अहंकृति अमितउर, वह बानर सुरपुर गयो। तजिदेउ गर्ब यह सर्ब तुम, निज हिय अन्दर जो रयो २ जिहिसँदेश हरिदूत, मरुतसुत तिरयो वारिनिधि। गोपद इव उर आनि, स्वामि किय सब कारजसिधि॥ निज आलय जिमिआय, प्रवेशन कृत लङ्कापुर। सिय सम्भाषण दर्श, कियो कानन भञ्जन तुर॥ तव भूरिसैन गञ्जन ससुत, पट्टपत्तन प्रदहन ठयो। किहि भांति राम बर्णनकरौं, प्रभु प्रताप सब क्षितिछयो ३॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ बालि तनय बर बचन सुनि, रावण भयो सक्रोध॥ अहंकार आरूढ़ ह्वै, उचरन लग्यो अबोध ४॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ हन्यो कनकमृग मात्र, तुच्छ तृणचर कानन मधि। प्लवग बृक्षते बृक्ष, करन शाली बाली बधि॥ बीर कहावत राम, मोर हियहास होत है। प्रबल पराक्रम पुञ्ज, दशानन जग उदोत है॥ बहु बह्नि मालज्वाला जटिल, अति दृढ़शर सन्धान है। जिय जबर युद्ध उद्योगयुत, मम समान नहिं आनहै ५॥ अङ्गदउवाच। दोहाछन्द॥

मोको दूतभयेसते, सन्धी बिग्रह होय । अक्षत सक्षत तनु पीठक्षिति, अवलुण्ठनहै तोय ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ रावण जानहु मोहिंदूत श्री राम को । महाबीर रणधीर सुगुणगण ग्राम को ॥ खरदूषण मृगभक्षि तृषित शरसूर है । अरिहां । पित्रहिं कण्ठ घट रन्ध्र रुधिर सुजरूर है ७ ॥ रावणउवाच । दोहाछन्द ॥ रेरेबानर अति अधम, कटुक प्रला· पत काहि ॥ श्रवणलाय सुनिलीजिये, यहिबिधि रावण आहि ८ ॥ षट्पदछन्द ॥ मृत्यु मृत्य पादांत, तपति दिनकर सुमन्दरुचि । लोकपाल पुनिअष्ट, मोरभय चकित रहत शुचि ॥ बन्दतनित पद- रेणु, इन्द्र आदिक निशिबासर । चन्द्रहास ममलखत, गर्भ स्रव सुर अहितियनर ॥ अति उग्रप्रतापी असुरपति,रहत सकल करजोरिकै । अब आये इत तपसी युगल, बानर सैन बटोरिकै ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ भूतल ताड़ित पानितल, भुज अस्फाबन कीन । अङ्गद होइ सक्रोधवपु, उचरत बचन अदीन १० ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ रेरे राक्षसवंश, घोरघातक पातकचय । समर मध्य श्री राम, करहिं तव सकल शीशक्षय ॥ दिशा विदिशि परिपूर्ण, निकर नाराचन करिहैं । रघुबर बीर सुधीर, जबै कर बर धनुधरिहैं ॥ तब तोर मत्थ भूपर परहिं, गृद्ध्र करहिं लुण्ठित लपटि । समुदाय शिवा कवलित करैं, भखैं काग भ्रुण्डन झपटि ११ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रावण बदत प्रपञ्चयुत, कटुबादी कपि तोहिं । हौं न हनत इहिहेतु तुहिं, धर्मशीलता मोहिं १२ दूत यथोक्त वादि है, नरपति हनत न ताहि । क्रूर कोपकरि करत हैं, बपु बिरूप कछु वाहि १३ ॥ अङ्गदउवाच ॥ परदारा अपहरण मधि, लई न रञ्चक लाज । अबै दूत परित्राण बिच, धर्मशीलता आज १४ ॥ रावणउवाच । षट्पदछन्द ॥ इन्द्र माल्य करमोर, द्वार प्रतिहार सहसकर । गृह सभार्यक वायु

बरुण चुन चन्द्रछत्रधर ॥ परि निष्टत पाचक्य, परम पावक पटुपाचक। राचक नारद प्रमुख, देवगुरु आदिक याचक ॥ मम भवन बिभव लखत न कहा, तवन करत रघुबर महा। वह मनुज मात्र बपु बिदित है, बर राक्षस भक्षण रहा १५ ॥ अङ्गदउवाच ॥ रे रे रावणहीन, दीन कुमती तव दरशात। रामहिं मानत मनुज, पूज्य याचक चय परशात ॥ कहां नदी सुरनदी, कहां गज ऐरावत गज। रबि हय है हय कहां, कहां परजापतिहै अज ॥ रम्भा कहां अबला कहां, युग गिनती कृतयुग कहां। किलकाम धनुषधारी कहां, का बानर हनुमत महां ॥ १६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गदयो
रुत्तरप्रत्युत्तरवर्णनंनामषड्विंशोल्लासः ॥ २६ ॥

अथ प्रश्नोत्तर ॥ रावणउवाच । षट्पदछन्द ॥ कोतू किहिको सुवन, यहां आयो किहि कारण। बिष्टपबिजयी पृष्ठ, ताहि तृणसम कियो धारण ॥ अङ्गदउवाच ॥ बाली तव बलमथन, पुत्र अङ्गद अभिधाना। आयो अचल सुबेल, दूत रघुबर जगजाना ॥ बहु बार बार समुझायकै, कहत तोहिं जड़मति अजहु। जानकी देहु जगदीश को, किंवा मस्तकतति तजहु १ ॥ रावणउवाच । सोरठाछन्द ॥ धिक धिक अङ्गदजान, जाने तव मार्‍यो जनक। बीरवृत्ति निर्मान, दूत होय अरि लजत नहिं २ ॥ अङ्गदउवाच ॥ युक्ति कियो श्रीराम, जानेमम मार्‍यो जनक। शास्ति त्रिलोकी धाम, कृत्यकाज सुदुरातमन ३॥ रावणउवाच ॥ राम कहा कृतकाज, यहै चित चाहत चीन्हो ॥ उत्तर दिय युवराज, अम्बुनिधि बन्धन कीन्हो ॥ रावणउवाच ॥ लङ्कानाक निकाय, वेरि बसती नहिं जानत। अरु अतरल बल मोहिं, मनाकहु नहिं पहिंचानत ॥ तब कहि अङ्गद जानत सबै, पै तुम्हरी नहिं बात है। लङ्काधिराज वह बिभीषण, बिदित बीर बिख्यात है ४ ॥

रावणउवाच ॥ बानर बांध्यो सेतु, लखी कौनसी बड़ाई । गिरिसमान बलमीक, पिपीलिक बिरचितपाई ॥ लङ्कदही हनुमन्त, याहुमें नहिं अधिकाई । दाहक अग्नि स्वभाव, बिदित जगजन सबठाई ॥ आश्चर्य शौर्य निज भुजनको, राम अपर किंचित कियो । युवराज वहै वर्णन करहु, सो सुनिबे हुलसत हियो ५ ॥ अङ्गदउवाच ॥ तिहि तिय निकट नितान्त, थिरीकृततनु चित बिलसी । सिय समान सुखलेन, बहिन रावर हिय हुलसी ॥ तिहिकी नासा वसा, खड्ग कीन्हो प्रभु पंकिल । खरदूषण त्रिशिरादि, रुधिर करिकै धोयो किल ॥ परियस्त नयन तव दर्प इव, स्वसानाक छेदन कियो । श्रीराम वहीबिसरतकहा, विश्व विदित जिहि यशलियो ६ ॥ रावणउवाच ॥ परिमित महिमा क्षुद्र, तितहु कृत क्षितिधरघटना । तरिकै तुच्छ समुद्र, लगाई अबिरत रटना ॥ अकलित महत महत्त्व, दुखद दुष्पार परमहै । विंशतिभुज दशबदन, बिंशती सागर समहै ॥ ते अति अगाध जिन थाह नहिं, बृथा परिश्रम करतहौ । सब सिद्ध करहु निज निज निलय, बिना मौत क्यों मरतहौ ७ ॥ अङ्गदउवाच ॥ रे रे रावण असुर, अवनि पर रावण केते । हमने बारम्बार, श्रवणपुट कीन्हे एते ॥ कार्त्तवीर्य दोर्दण्ड, चण्ड पिण्डीकृत इक है । दूसरगत दैत्येन्द्र, द्वार दासीदतधिकहै ॥ नाचियो नाच गहि कवल तित, तीसर लज्जाजन्य है । इन बीच कहहु तू कौन सो, अथवा इनते अन्य है ८ ॥ रावणउवाच ॥ कुम्भकर्ण मम भ्रात, अखिल अरिकुलसंहारक । कालरूप बिकराल, कलेवर भवभयकारक ॥ मेघनाद मम पुत्र, पुरन्दरबन्धनकर्त्ता । चन्द्रहास मम खड्ग, सकल शत्रुन संहर्त्ता ॥ ममहैं सहाय निशिचरनिकर, त्रिभुवनबिजयी शत्रु सुर । रावण लसन्त अभिधान मम, राजत राजा लङ्कपुर ९ भयेहुते बलवान, महा कपिपति

हैहयपति। दशकन्धरकी कन्ध, प्रतिष्ठा अब छाई अति॥ सद्य विपा-
टित कण्ठ, कन्दलीकी कसकण करि। अंसस्थलि अवकीर्ण, इभा-
जिन पल्लव निज धरि॥ धूर्जटी झटिति प्रस्फोटयत, आनन उचरे
धन्य है। सम बाली अर्जुन समयते, अब प्ररूढ़बल अन्य है १०
बक्षस्थली कठोर, मोर संगरभो सुरपति। ऐरावत गजदन्त, मुसल
उन्नत आहत अति॥ भग्नभयो सुखकरी, हृदय मम तनक न त्रा-
सत। अरु हेला उच्छित्स, अद्रि कैलास प्रकाशत॥ संत्रस्त अङ्गना-
लिंगने, प्रचुर प्राप्त आनन्द हर। लङ्काधिराज रावण विदित, रिपुन
ओर हैं अन्यतर ११॥ अङ्गदउवाच॥ रे रावण हरशैल, मथन प्रख्यात
पराक्रम। चहत रामते युद्ध, युक्त नहिं लखत तोहिं हम॥ रहनदेउ
रघुराम, लक्षमण कृत धनुरेखा। लंघितभई न तुच्छ, तबहिं तव बल
सब देखा॥ उन लघु किंकर लंघित जलधि, पुरी दग्ध अरु अक्ष-
हत। रण घनघमण्ड तजि दीजिये, मम बचकीजै श्रवणगत १२॥
रावणउवाच॥ हिरणकशिपु हिरण्याक्ष, दैत्य ईश्वर भस्माङ्गद। अ-
वर अमरद्विष सकल, बल कथा तुलित नचाङ्गद॥ बाहुसार मम
अलं, अलंकृत इन अवलोकत। समता लहत न कोपि, यदपि बहु
विश्व बिलोकत॥ जो रामचन्द्र रिपुहा कहत, भयो प्रिया अपहरण
अब। अरु संधिबात करबातहै, जानि लियो इहि बीच सब १३॥
अङ्गदउवाच॥ मत्थन करि मत क्रीड़, कहत कैलास सुभटसुन। शिव
गहि गहि पुनि देत, तथा रामन रावण चुन॥ अब्धी बन्धन देख,
स्वल्प सरइव सरसायो। कमल बन्धु कुलबधू, छण्ड चइ जो सुख
पायो॥ हम हितू हेरि हितकी कहत, यामधि न कर अचम्भ है। मम
जनक दिव्य दोर्दण्ड जय, कलित सुकीरति खम्भ है १४॥ प्रश्नोत्तर॥
चन्द्रायणछन्द॥ को तू बालीतनय दूत श्रीरामको। को रघुवर अरु

बानर बाली नामको ॥ बांधि तोहिं चतुसिन्धु सुहूरत मधि भ्रम्यो। हरिहां। वह बाली ममतात हीय ते किमि गम्यो १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ दोर्दण्ड परचण्ड तोर, प्रति हनन प्रबज्ञगति। सहसबाहु भुज सहस, सद्य छेदन कृत भृगुपति ॥ परशुराम गर्बापहारि, श्रीरामदूत हौं। अङ्गद मेरो नाम, पुरन्दर पूत पूतहौं ॥ जब भूरि भ्रमन मूर्च्छित लख्यो, जनक घृणा संयुत भयो। पुच्छाग्र बाल सुनिवास दिय, तदपि तुच्छ बिस्मितरयो ॥ १६ ॥

इति श्री पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्य कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गद प्रश्नोत्तरवर्णननामसप्तविंशोल्लासः ॥ २७ ॥

रावणउवाच। चन्द्रायणछन्द ॥ बाल तालतरु हने सार्द्ध त्वत्रतेहुते। जर्जर जीर्ण पिनाक भङ्ग नहिं अद्भुते ॥ हरक्रीड़ाचल कियो कन्दुकी क्रीड़ हौ हरिहां। सो सुनि सुनि सब बीर होत सव्रीड़ है १॥ षट्पदछन्द ॥ श्रवण पथन मधि पांच, शूर आवत मम कतिकति। साम्य शरणि उल्लंघ्य, जगति जागर्ति लङ्कपति ॥ जिहिं दोर्मण्डल गाढ़, परम पीड़न बरबशते। रक्तछटा घनघटा, मनोद्भव धातु दरशते ॥ अंकुरित करत शङ्का अजौं, शंकर गिरि कैलास है। अङ्गद अशेष मम भुजन मधि, प्रबल पराक्रम बास है २ मूरधनिज उत्कृत्य, हुताशन हुत जबते अति। स्फुरित बही व्याकीर्ण, भाल लिपि लखि लङ्कापति ॥ होहिं रामते काल, अस्य इति बर्ण बांचि तित। अधिक उमँगि शिर आप, असखलित होय चारुचित ॥ प्रभुपद पिनाकि पीड़ित किये, गिरा जासु गुणगायते। अस लसत लङ्क नगराधिपति, कवन तास बैरायते ३ इहिं दशमुख बड़बीर, धीर का बर्णन करिये। प्रबल पराक्रम पुञ्ज, प्रचुर भिय धीबर धरिये ॥ पूजन काज पिनाकि, करन चह मस्तक माला। सूत्रहेत हरकण्ठ,

विकर्षणकृत बर ब्याला॥ तव भृकुटीकी करि सूचना, प्रमथ गगन प्रतिबेध किय। लङ्केश मानि तिनको कथन, लियो अपरिमित हरष हिय ४॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ इहि अन्तर मधि आइ उत, पढ़त बचन प्रतिहार। सभास्तार संदोह मधि, अधिक उच्च सुरधार ५ प्रतिहारउवाच। षट्पदछन्द॥ नैष समय अध्ययन, मौन मुख धरहु बिधाता। स्वल्प स्वल्प संजल्प, गुरो जड़मति खलु ख्याता॥ नाहिं शक्रकी सभा, स्तवनगिरसंहर नारद। पूर्ण करहु स्तुति कथा, तुम्बरो गीत बिशारद॥ भल सीता रक्षक भल्लकरि, भग्न हृदय लङ्केश है। अश्वत्थपत्र इव स्वस्थ नहिं, व्याकुल बुद्धि बिशेष है ६॥ कविरुवाच॥ अङ्गद होय सक्रोध, कहत एरे रावण सुन। तव मत्थन करि करहिं, राम दिग देव बलीचुन॥ हौंहूँ मारन योग, तदपि तोको नहिं मा-रत। तात कक्ष अवशिष्ट, बिदित यह बात बिचारत॥ किलक्रीड़ित तवशिर कन्दुकनि, पद प्रहार अगणित किये। निज क्रीड़न की सामग्रि यह, भञ्जन करि लज्जत हिये ७॥ सोरठाछन्द॥ शत यो-जन बिस्तार, तिमि तिहिं निगलत तिमिंगिल। तिमिंगिल गिलहु निहार, ताहि गिलत राघव बिदित ८॥ षट्पदछन्द॥ अबिरल गल दल गलित, ललित लोहित रत धारा। धौत त्रिलोचन ईश, अंघ्रि अम्बुज बहुबारा॥ प्राप पिनाकिप्रसाद, सुधाजय महिमा जगमधि। अरु अद्री उद्धरन, गर्ब आरूढ़ हस्तअधि॥ दश मस्तक बिंशति करन को, केवल भार उठानभल। किलकर्त्तन फल बहु शिरन को, भार उद्वहन भुजन फल ९ मुञ्च मुञ्च मैथिली, रामपद पदपङ्कज भज। करहु राज चिरकाल, हविर्भुज होहु अमर त्यज॥ लङ्कापुरी प्रतच्छ, पराभव पावन जैसे। उर अन्दर निरधारि, काज बर कीजै ऐसे॥ नातर चपेट बानरन की, मुष्टि वृष्टिहू है अमित। अतिक्रूर

कीन कुकरम कठिन, तिन सबको फल मिलहिंतिन १० निरखे नहिं रघुनन्द, प्रथम नहिं सुने श्रवण पथ । कीन्हो क्यों न बिलम्ब, बिपिन बिच हुतो महारथ ॥ थँभ्यो नाहिं क्षणमात्र, मार्ग मधि भग्यो भयातुर । अजौं न थिरता गही, दृशत उर अतिशय आतुर ॥ अब अखिल मान तजि दीजिये, लियो श्रवण सुनि बालिवध । सीता समर्पि रख बंश निज, दास होहु अधिपति अवध ११ ॥ रावणउवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ हरिपबि पायप्रहार शोथ कछुहीलियो । उर उदग्र गुरुगगन प्रसभ सब पीलियो ॥ सुरश्रीकरणी काज मोर भुजबनकियो । अरिहां । अङ्गद दशमुख बीर तोहिं बिस्मृतरियो १२ मैंने मेरे हत्थ मत्थ दश छिन्न है । चन्द्रहास असि किये अखिल उच्छिन्न है ॥ गदगद गिर गलिताश्रु नाहिं स्मितवान है । परहां । याके मध्य प्रमान शम्भु भगवान है १३ छिन्धि मोहिं मुहिं छिन्धि छिन्धि मुहिं बोल है । पुनरुद्भूतन निरखि करत हिय तोल है ॥ नव भव आगे इन्हैं दशानन काट है । परहां । भूमि पतित शिरहँसन लगे अट्टाट है १४ मूल पञ्चशिर पुष्प रम्य रचना करी । तदुपरि लर दूसरी चार मस्तकधरी ॥ दशम कहा यह शङ्क दशम मस्तक भई । परहां । धर परिकरि कर परसताइ छेदत सई १५ लङ्केश्वर समधीर बीर अतिरम्य है । जिहिके गुणगण गूढ़ गिरादि अगम्य है ॥ मत्थ होमि लखि अनल मन्द शिख भीति है । परहां । श्वासानल सन्दीप्त कियो युत प्रीति है १६ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ बिक्रम मस्तक होम, कथा पौलस्त्य बहुत किय । सारो अङ्ग जलाय, देत वैधव्य भीति तिय ॥ अरु शिवगिरि उद्धरन, पराक्रम तुमहिय हेरे । रासभखर उष्ट्रादि, भारबाहक बहुतेरे ॥ कछु अपर परम पुरुषार्थ कृत, होय वहै बर्णनकरौ । बहु बार बार बिस्तार किय, अब यह

प्रकरण परिहरौ १७ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ बिदित बीस चष अन्ध, विंशति श्रवणन करि बधिर। चहन सन्धि सम्बन्ध, अङ्गद उर ऐसे तुली १८ स्वामी शौर्य सुनाय, पुनि अङ्गद चलिबो चहत। उचरत शीश धुनाय, बालिसुवन दशशीश सों १९ ॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द ॥ अर्जुन नृप तुहिं बद्ध, बिदित कारागृह अन्दर। मुनि पुलस्त्य तवहेतु, भये याचक जिहि मन्दर॥ तिहि भुजबन उच्छिन्न, कार अन्तक क्षत्रिय कुल। परशुराम प्रख्यात, पराक्रम बहुबल संकुल॥ श्रीराम तेज बड़वागिकृत, शौर्य सिन्धु तस किय चुलक। लङ्केश तोर बल तुच्छ सर, द्रुत सूखहि लङ्का मुलक २० रे रे राक्षसराज, मुंच सहसा बैदेही। धर्मपत्नि श्रीरामचन्द्र, सत्वर बैदेही॥ मिथ्या निज पुरुषार्थ, प्रचुर प्रागल्भ्य रखत उर। बानर भट बाहिनी, भयंकर भाषत तवपुर॥ इमिकहि कहि अति उतकट बचन, आतङ्कित लङ्काकरी। निष्क्रान्त भयो युवराज द्रुत, कछु दशमुख श्रवणन धरी॥ २१॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गद संवादोनामाष्टविंशोल्लासः ॥ २८॥

अथ हनुमन्नाटकेऽष्टमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ निज प्रताप परचण्ड, चण्ड समर उत्साह करि। परिपूरण दोर्दण्ड, बिलसत पुर लङ्कापती १ ॥ षट्पदछन्द ॥ सुनिकै दशरथसुवन, सुबेलाचल कटकोपर। रावण रण उद्योग, अमित उत्सव निज उरधर ॥ दशकर धनुटंकार, ककुभ परिपूरण कीन्ही। बहुरि शिलासित बिपुल, बिमल बिशिखावलि लीन्ही॥ अवशिष्टरहे दशहत्थतस, तिनकरि चित्राकृति करन। अभ्यशात अङ्गना कुचनपर, पत्रबल्लि रचना धरन २ तदनन्तर लङ्केश, राजमन्दिर शिखरस्थित। मञ्चोपरि आरुह्य,

लखत बानरबाहिनि जित ॥ यह बानर दग्धाग्र, पुच्छ लङ्काविकृती कृत। यहै बालिसुत विदित, तस्य आकृति इव बपुधृत ॥ शरधनुष धारि कामाकृती, श्याम होहिं सीतापती। प्रत्येक शत्रु अवलोकि उत, मञ्चस्थित उचरत अती ३ तस तिय मन्दोदरी, परमसुन्दरी बखानत। निशिचर बन स्वच्छन्द, दवानल राघव मानत ॥ पुनि निज पतिको परम, प्रेम सिय प्रति पहिंचानत। चहत विजय निज पक्ष, अजय प्रतिपक्ष प्रमानत ॥ वह कबहुँक गृह संचारकृत, कबहुँक पति ढिग प्रापहीं। क्षण पावत नहिं एकत्रथिति, अन्तरा-लगत आपहीं ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बृन्दारक बन्दारुबृन्द अभि-बन्दिते। अतिसुन्दर मन्दार माल मकरन्दिते ॥ मन्दिर मन्दिर मध्य म्लानता मञ्जिते। परहां। मन्दोदरि चरणारबिन्द रजरञ्जिते ५ ॥ दोहाछन्द ॥ रिपुबिद्रावण रावणहि, करि करि बहुरि निहोरि। मन्दोदरि अति सुन्दरी, कह अञ्जलिपुट जोरि ६ ॥ मन्दोदर्युवाच। षट्पदछन्द ॥ शशिशेखर गिरि आप, बाहु उद्धृत जगजान्यो। कुम्भकरण निज भ्रात, जगतभक्षक उर आन्यो ॥ बासवबिजयी बिदित, सुवन घन-नाद तिहारो। तदपि बालिजित बली, राम रणधीर निहारो ॥ इहिं अबला छलबलकरिहरी, नाथ जानकी दीजिये। निज मन्दिर मधि मन्दोदरी, रहसि बिनय सुनि लीजिये ७ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ मन्दोदरिके बचन सुनि, सुललित लङ्कानाथ। निज भुज आडम्बर किये, बचन बदत दशमाथ ८ ॥ षट्पदछन्द। रावणउवाच ॥ भामिनि क्यों भय करत, भीरु बहु निशिचरनायक। नशिहैं रिपु मम महत, लेखपति नहिं रणनायक ॥ घन मार्गनगण प्राण, हरहिं हेरहु तपसी के। जानहु नाहिं बिलम्ब, लम्ब निज उरमधि नीके ॥ सुनि स्वामि बचन बाक्षल सहित, भई सभय मन्दोदरी। कहि पाप

अमङ्गल शान्तहै, पुनि आनन गिरि उच्चरी ६ एक भृत्य सुग्रीव, प्रथम कपि इतमें आयो। बन बनपालक भञ्जि, अक्ष हति नगर जरायो॥ चल्यो गयो चुपचाप, लखि रहे वीरबर्ग सब। किहिते कछु-हुन बनी, सकल हे बिद्यमान तब॥ अब इत आयो कपिबल प्रबल, उल्लंघन जलनिधि कियो। वे इच्छत उर नहिं आन कछु, चाहत चित मैथिलि लियो १०॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ सुनि मन्दो-दरि कथन सभय रावण भयो। शुक शारण द्वै दूत पठावन मन ठयो॥ रामदेव के शिबिर जाउ आयसु दई। परहां। पुनि निज मन्त्रिन सहित स्वहित चिन्तत सई ११॥ विरूपाक्षउवाच॥ षट्पदछन्द॥ बिरूपाक्ष बर सचिव, सुहित बच उचरत ऐसे। संप्रति प्रतिभट उ-परि, नाहिं प्रोल्लासनजैसे॥ सीतारक्षण दक्ष, लक्ष्मण कृत धनुरेखा। नाहिं उलंघी गई, भई बिस्मयप्रद लेखा॥ कपिकटक सहित लङ्घित जलधि,राजन राम महानहै। उन बैदेही बैदेहि द्रुत,यामहँ कछुनहिं हानहै १२ जबलौं नाहिं निहार, राम दशरथ नृप नन्दन। जबलौं नाहिं निहार, नयन पाथोनिधि बन्धन॥ जबलौं नाहिं निहार,निर-स्त्रालक लङ्कापुर। कुलाङ्गारता प्राप्त, अनुज सुचरित पबित्रउर॥ तबलौं बिचारि असुराधिपति, अनघा सीता अर्पिये। इत होय न कोणप कुलकदन, यहि बिधि अरि सन्तर्पिये १३ ॥रावणउवाच॥ ये एते ममबाहु, शक्र दोर्दण्ड कण्डुहर। सोहं लङ्कानाथ, सकल संसार बिजयकर॥ बांध्यो बानरसेतु, हमहुँ श्रवणन सुनिलीन्हो। देखतहो निजनयन, लङ्कगढ़ आवृत कीन्हो॥ जो जन जीवतहै जगत मधि, कहा न देखत सुनतहै। ध्रुव धैर्य्य बीर्य्ययुत होय सो, तित चित अबिचल चुनत है १४ बिरूपाक्ष पुनि पठत, शक्र शिर पर प्रभु आयसु। सकल शस्त्रधर मत्थ, रहत रावरी रजायसु॥

भक्ति भूतपति शम्भु,रहन लङ्कापुर आस्पद। द्रुहिणान्वयसम्भूति, एकते अधिक एकहद॥ दुर्लभ हरेक इन गुणन में, सब जनको सर्वत्र है। बिलसत अशेषहू आयकै, आप बीच एकत्र है॥१५॥

इति श्रीवरविलासेरावणविरूपाक्षसंवादेएकोनत्रिंशोल्लासः॥ २९॥

रावणउवाच॥ चन्द्रायणछन्द॥ पण्डित मन्त्री शुद्ध बुद्धि बिलसन्त है। बिलासीन को रती सचिव सुलसन्त है॥ मानो मनुज महान पराक्रमसार है। परहां। तिनको मन्त्री महद एक असिधार है १॥ कविरुवाच॥ मन्त्रि महोदर असिध उचरत यों तबै। मुख सुख मधुरी बीच लगत प्यारी सबै॥ व्यासनाधीन धरेश धीय उद्योत है। परहां। तित निषेध के बचन सुदुख सह होतहै २प्रियारु मधुराबाच सदन मधि स्वच्छ है। कर्कश सुनय समेत बचन श्रीरच्छ है॥ प्रियबादी थिति बिभव सुभोजन दान में। परहां। साधु बादि नर रहे बिपतिके थान में ३ जिहिं नियरायो निधन मूकता गुणमहा। तदपि भक्तप्रभु मुखर होयके हमकहा॥ब्यसन पंकमधि मग्न स्वामि को करतहै। परहां। ह्वैन फेर उद्धरन मूकपन धरतहै ४ नटी पूरखल प्रीति लक्ष्मी लेखिये। बिन कारण द्वेषीन नियति पुनि पेखिये॥ अरु बनिता सुकुमार उरसि आनो अबै। परहां। अस्थिर यौबन जगति आप जानहु सबै ५ दत्तोच्छाह अकार्य मध्यहू जेरहैं। ठकुरसुहाती बात सकल सन्तत कहैं॥ चित्त गृहन मधि चतुर बिदग्ध बखानिये। परहां। मधुकर इव कर्णान्त महीपति मानिये६ दिनमधि पद्मनि प्रभा कुमुद्वति रैनहै। सन्तत रहत न चैन तथैव अचैन है॥ क्रमकरि सम्पद बिपद सबहुको प्राप है। परहां। यह उर अन्दर अवशि आनिये आप है ७ नीति शास्त्र यह त्रिविध धीय ध्रुवधार्य है। बर्णन किय गुर्वादि अखिल आचार्य है॥ यहां सुखद

है एक द्वितिय परलोक है। परहां। उभय लोकमधि तृतिय घना-
नँद ओक है ८ अतिउत्तम उभयत्र सुखद उर आनिये। पुनि उत्तम
परलोक मोदप्रद मानिये ॥ अधमाधम आनन्द प्रदायक अत्र है।
परहां। तिहिते कारज सरत नाहिं कछु तत्र है९ स्वामिनिधनकरि
सचिव शस्त्रविष आदि ते। अरु अपनो प्रिय परम करतराज्यादि ते॥
वहहै ऐहिक शास्त्र पाप सब मूरहै। परहां। तिहिं सुखपर बहुबार
डारिये धूरहै १० निगम मार्ग उच्छिन्न करत जो पाप है। आज्ञा
भङ्ग महीप किये सो प्राप है॥ ताके बध मधि लहत जु कलुप अपार
है। परहां। द्विसह सहसनाशेष पावत न पार है ११ बिन अपराध
प्रधान प्रभू पीड़ितकरैं। तनक न तिहिं वैरूप्य कदा धियमें धरैं॥
वह आमुष्मिक शास्त्र सुखद परलोक है। परहां। उत्तम उहिं उच-
रन्त बिदुष अवलोक है १२ राज्य ग्रहण सामर्थ्य सचिव मधि है
सही। तदपि स्वामि बध कदा मनहुं मानै नहीं॥ वह आमुष्मिक ऐ-
हिक बचन उचारिये। परहां। उत्तम उत्तम वहै धूव धिय धारिये १३
शुक शारण तब सचिव युगल ऐहिक कहे। गत बानर बपुधारि
अजों तितही रहे॥ आमुष्मिक बिरुपाक्षि महोदर दोयहैं। परहां।
सीय समर्पहु नतर संगचर होय हैं॥ १४॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमहोदरमन्त्रीवाक्य
वर्णनंनामत्रिंशोल्लासः॥ ३०॥

कविरुवाच॥ दोहाछन्द॥ रावण मय शिरकम्पसह, करत स्वबुद्धि
बिचार। नीति शास्त्र निज श्रवण सुनि, शोधत सारासार १॥
रावणान्तर्गतबिचार॥ कुम्भकर्ण भ्राताबली, राजलोभ मनलाइ॥ जो
कदापि यह मुहिं हनै, पहिले पठवौं याइ २॥ कविरुवाच॥ बिरुपाक्ष
अरु महोदर, बिभु अन्तरगत भाव। जानि लियो शिरकम्प करि,

पुनि पठ सचिव सुभाव ३॥ विरूपाक्षमहोदरावूचतुः॥ बदत धर्म नित नीति बिद, केवल नरपति अग्र। युवराजादिकके निकट, न कह कदापि समग्र ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ हा लङ्केश्वर नाथ, शुद्ध अधिकारी हम हैं॥ किय शङ्का अंकुरित, कहा वैरूप्य बिषम है ॥ नाहिं सर्पमुख रक्त, लखत नहिं दुष्ट कलेवर। तथा न धननृप निकट, न पुनि बित रहत प्रजाकर॥ बहु द्रव्य दुरधिकारी सदन, ते निजपति प्रति द्वेषकृत। हो स्वामि आपनहिं मूढ़धी, नाहिं उभय हम दुष्ट भृत ५॥ चन्द्रायणाछन्द॥ दुष्ट सचिव कर अर्पि राज सब भार है। महिपति रहत प्रमत्त सुस्वैर बिहार है। जिमि बिडाल के अग्र राखि पयपात्र है। परहां। सोवतते नृप मूढ़ सुसंशय नात्र है ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ किये अवनि उतखान, तिन्हैं रोपत औरै थल। कुसुमित तरु समचुनत, क्षुद्र लघु बर्द्धत नितभल ॥ बाहर कृत कण्टकी, सुतर संहत बिश्लेषत। नम्र करत अत्युच्च, नीच द्रुम उच्चसतत कृत ॥ जिमिमाली तिमि महिपालहू, करत रहत चित चिन्तवन। वह चतुर चक्र चूड़ामणी, नृप पावत आनन्द घन ७ ॥ दोहाछन्द ॥ संग्रह करत अशुद्धहू, यद्यपि महिपति शुद्ध। कछु कारज बश होयकै, मदत प्रदाइ बिरुद्ध ८ क्वचित प्रयोजन हीनहू, देत प्रयोजन पूर। इत प्रमाण निज इष्टसुर, शङ्कर जान जरूर ९ ॥ षट्पदछन्द ॥ सकल सुशक्ति समेत, सदा शङ्कर समलंकृत। यदपि जीर्ण किय जहर, तदपि मस्तक सुधांशुधृत ॥ किया भस्म कन्दर्प, तदपि गिरितनया धारत । सुरसरिता शिर धारि, भाल दृग अनल दबावत ॥ नित नृपति नीति मधि निपुण शिव, संतत तत्र रक्षाकरौ। जग बिदित बिरोधी बस्तु बहु, काज निरखि संग्रहधरौ १० दिपत दिगम्बर देव, धनुष धारण किहि कारण। धरो शस्त्र जो हस्त, क्यों न किय भस्म निवारण ॥ धरी

भासित तौकाहि,अंगना रखत निरन्तर। रखी प्रिया तो काहि, काम ते द्वैष करतहर ॥ अन्योन्य बिरोधी कर्म मधि, निरतनिरखि निज नाथको। वपु अस्ति शेष भृङ्गी भयो, गावत स्वामी गाथको ११॥ चन्द्रायणछन्द ॥ नृप दुर्योधन नाम भविष्यति अग्र है। ब्राह्मण मन्त्री बीर द्रोण सुउदग्र है॥तिहिंके बचन उलंघि वहै भविता पथा॥परहां। नाहिं निशाचर नाथ हूजियो तुम तथा १२ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ इमि कहिकै मन्त्री निखिल,निज निज गये निवास। रावण मन्दोदरि सहित, बितरत बिपुल बिलास १३ कीन्हो गवन अशोकबन, बसत जानकी यत्र। रावणसों मन्दोदरी,कहन लगी कछु तत्र १४॥ मन्दोदरिउवाच ॥ मम अरु मैथिलि बपुष बिच, भासत कितनो भेद। सो निज बुद्धि बिचार करि, उचरहु आप अखेद १५ ॥ रावणउवाच ॥ बरवैछन्द ॥ तव तनु गंध मनोरम मीन समान। परिमल सीय कलेवर कमल प्रमान १६ बिलग न मानहु प्यारी मम सुनि बैन। रूप अनूपम उभय न कछु भिद हैन १७॥ शब्दालंकारेयमकालंकारः ॥ सीता धर्मधुरीणारामन योग। सीता धर्मधुरीणारामन योग १८ ॥ कविरुवाच ॥ मन्दोदरि सब सुनिके रावण बोल। करनलगी निज जिय मधि लङ्का तोल १९ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ पाप कथा मधि मगन बिभीषण भ्रात है। कुम्भकरण प्रस्वाप बीच दिनरात है ॥ अभिमानी असुरेश निमग्न कलङ्कमें। परहां। लङ्का डूबत हाय अपरमित कम्प में २० ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ तदनन्तर तिहि ठौरते, भये सकल निष्क्रान्त। ठांह ठांह बरणन करत, असंभवित बृत्तान्त ॥ २१ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गज गोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमन्त्रिवाक्यंनामैकत्रिंशोल्लासः ॥ ३१ ॥

अत्रहनुमन्नाटकेनवमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ तदनन्तर लङ्केश, सानुचर मन्दिर सुन्दर। करि प्रबेश उच्चरत, उई इच्छा उर

अन्दर ॥ भौ अनुजीवी मोर, अखिल सुनि लेउ बचन मम। माया रचन प्रपञ्च, कियो चाहत है चित हम ॥ मन रुचै देव सो कीजिये, इमि असुरन उत्तर दियो। सो सुनि सुख सरसावन लग्यो,रावण हरषावन हियो १ तक्षण रजनिचरेश,राम सौमित्री मथहुइ। माया बिरचित किये, रूप ललिताइ परतछुइ ॥ गलद बिरलरतधार, प्रेत परियस्त नयनबर। जनकनन्दिनी निकट, कटिति धर कटे अग्रधर ॥ शिर युगल जोय युगभ्रात के, सजल नयन हुव जानकी। सुधिरई कछू न सयानकी, बिसरिगई गतिप्रानकी २ अहह निमी नरनाथ, नन्दिनी गदगद बयनी। चुवत चारु चषनीर, फुल्ल नवनीरजनयनी ॥ स्वामिमरण भयभीत, उच्चरत आनन सीता। हृदय दहन नहिं दहत, मृत्युनापिच नहिं नीता ॥ हा राम रमण संकट शमन, हा लक्ष्मण यहका भई। अतिशूरबीरता धीरता, रावर सब कितको गई ३ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ रामचन्द्र शिर कमल ढिग, बहुबिधि करत बिलाप। हा प्रभु पीतम हा रमण, बिश्वबीर बर आप ४ ॥ सीतोवाच। षट्पदछन्द ॥ सुललित सरयू नीर, तीर बानार कुञ्जमह। कामकेलि कमनीय, मध्यबर बदत बचन वह ॥ सुमधुर अधरमदीय, पान पीयूषभणततित। भयोशीर्ण परिपूर्ण, गयो सब उहिं प्रभावकित ॥ जिमि अम्बर बिनशत अर्कतम, तिमिकरिये अरिगणहनन। मम देखि देखि अति दुर्दशा, मनमधि कछु कीजै मनन ५ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ शिर बिलोकि सिय उर बिरह, शोक मोह अरु कोह। प्रेमाकुल व्याकुल व्यथित, दुसह दुःख सन्दोह ६ रावण मधुरालाप करि, देत बिपुल बिश्वास। तिन्हैं सीपतनकन सुनत, रही न जीवन आस ७ ॥ सीतोवाच। षट्पदछन्द ॥ चहत प्राण परित्याग, कहत करुणामय बचना। पीतम प्यारे प्राण,

नाथ कैसी यह रचना ॥ उत्तर क्यों नहिं देत, बदन बारिज मधु-बानी। नयन निहारत नाहिं, कहा मोको न पिछानी ॥ बर बिबुध बधू बल्लभभये, बिसरिगये सुधि मोरसब। आलिंगि मत्थ हंसा उड़हि, इहि अवसर अविलम्ब अब ८ ॥ कविरुवाच ॥ इमि कहि मस्तक कमल, जबै आलिङ्गन लागी। गगन गिरा गम्भीर, भई करुणारस पागी ॥ नखलु नखलु यह सीय, राम भूपाल मुकुटमणि। समर शिरसि नहिं बध्य, तोरप्रिय कदा काहुक्षणि ॥ मतपरसमात इहिं माथ को, धारहु धिय निरधार है। हाहर हर हर हरभक्त को, यह माया अवतार है ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ अस अकाश बाणी सुनत, रावण युत युग मत्थ। करि अम्बर उत्पतन द्रुत, किय निष्क्रमण अकत्थ १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ संयुत लज्जा हर्ष भई तब जानकी। इक शरमा राक्षसी पियारी प्रानकी ॥ तासों बूझति सीय यहै अद्भुत कहा। परहां। प्रत्युत्तर वह देत होय सकरुण महा ११ ॥ शरमोवाच। दोहाछन्द ॥ तू नहिं जानत जानकी, रावण माया ख्यात। भयजिन आनहु भामिनी, जीवत रामसभ्रात १२ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ काहल मर्दल आदि कुलाहल होत है। सज्ज तुरङ्ग महेशननाद उदोतहै ॥ आकर्णय आकर्ण बिलोचनि वार्त्त है। परहां। राम समागम शोर निशाचर आर्त्त है १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ बिरम बिरम कोपते, कहा अपमान बिचारत। रावण सतनय बन्धु, बिमर्दन रघुबर धारत ॥ इन्द्रनीलमणि नील, राम कोमल इन्दीबर। करिहैं त्वदधरपान, कोमलाङ्गी जु निरन्तर ॥ सुनि शरमा के बर बचन इमि, जियजानी पिय जियत है। तनु बिरह ताप मेट्यो सबै, लज्जित हिय क्षण कियतहै १४ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ पहिले लखि तस्यान्तमच, कढ़े न पापी

प्रान। अभिप्राय यह आनि उर, मैथिलि लज्जावान ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका रामाङ्कजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविज्ञखेमायामस्तक निर्माणंनामद्वात्रिंशोल्लासः ॥ ३२ ॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ भिन्नमार नाराच भयो असुरेश है। पुनि अशोकवाटिका कियो परवेश है ॥ परिवृत्त सुरसुन्दरी अमित सन्दोह है। हरिहां। हिय विकार सिय करन महामन मोह है १ ॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द ॥ अस्मत चण्ड चपेट, घात स्वर्दन्ति पतित है। कुम्भस्थल अतिथूल, रक्त मुतियततितितहै ॥ तिनकरि अचित अंघ्रि, उरस्थल अविरत इनके। तव पदपंकज निकट, नमत अलिनी शिर जिनके ॥ जानकी अद्य अवलोकिये, भामिनि भाग्यावलि भली। इकसंग अहो इतआपकी, सतीचरित बल्लीफली २ लख मैथिलि मम मत्थ, इन्हैं शङ्कर शिरधारे। पद संश्रितते भये, अवै इतआइ तिहारे ॥ कहा अवज्ञा करत, ररत करभोरु विनय सच। सुनि सुनि सभय सकोप, भई परतिय लम्पट वच ॥ बैदेहि बदतरे मन्दमति, शिवोत्तीर्ण निर्माल्य सब। धिक्तोहिं तोर आननन धिक, हे अतिशय अस्पृश्य अब ३ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ सिय साध्वी सुन्दर वचन, अक्षर अलग अमोल ॥ रक्षाकरि हेरावरी, टारहि बिघन अतोल ४ ॥ रावणउवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ हूहै भोरम्भोरु त्रिदश मुखम्लान है। स्थाता स्वामि राम न सङ्गस्थान है ॥ सैना शाखामृगी बिपद पुनि प्राप है। परहां। षष्ठाक्षर परलोपि अर्थ थिर थाप है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ काहि अवज्ञा करत, यहैं दशमुख तव पदनत। जबै किये शिरछेद, तबै भोपति इमि उचरत ॥ रेरेरे लङ्केश, छेदि हमको शंकरते। मत मांगहु बरदान, न कछूहै मङ्गन नरते ॥ अरु हरहूते ऐसी कही, गुहसोयन जिन देउ बर। जउतउ

सक्रुद्ध शिरधरे, शिव इहिविधि रावण असुरवर ६ राम अर्द्ध चित सीय, अर्द्ध चितरावण अन्दर। आधे में बिरहागि, अर्द्ध रोषानल मन्दर ॥ शीत दाहहै एक, अपर अति उष्णदाह है । दग्ध करेजा भयो, जानकी तोर नाह है ॥ अब तास आश उर छंडिये, मोमधि मानस मण्डिये । जिन देह दुसह दुख दंडिये, हिय दृढ़ हठ खलु खण्डिये ७ मुग्धे मैथिलि चन्द्रबिम्ब,सुन्दरमुखि सीते । औषध प्राण प्रयाण, प्राणरख प्राणपिरीते ॥ मन्मथ नदी मृगाक्षि, असुन ईश्वरी रक्ष अब । मुञ्च मुञ्च मुञ्चाशु, उरथित यह आग्रह सब ॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर, रामचन्द्रहै एकसुख । हौं असुरनाथ निज· थान थित, इत गहि हैं दशबदनसुख ८ ॥ जानक्युवाच ॥ चुपरहु चुपरहु असुर, मृषा जल्पित नहिं कीजै । मेरे निश्चय बचन, बीस श्रवणन सुनिलीजै ॥ उत्पल श्यामल कान्ति, रामभुज भिरहिं कण्ठमम । बिंशति पाणि कृपाण, करहिं कृन्तन निर्दयतम ॥ इन उभय बातते तीसरी, तीनकाल मधिहोहिना । बड़ बिंशति गल्ल बजाइ कै, बचन सुनावहु मोहिना ९ ॥ दोहाछन्द ॥ मोर निरन्तर ध्यानधरि, राम लियो मद्रूप । तैसे तवकुल कदनको, ममनिरखहि तद्रूप १० ॥ कविरुवाच ॥ रावण भो निष्क्रान्त तब, सुनि बैदेही बैन । निज मन्दिर अन्दर गयो, चढ़त न कित चित चैन ११ कछुक समय तित थितरह्यो, पै न चैन मनरञ्च । पुनिसिय ढिग जावन निमित, बिरचत महा प्रपञ्च १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ नाना बादित बजत, तुँरग स्यंदन गज गज्जत । कपि भटकटक सु भुजास्फाल कोलाहल छज्जत ॥ रघुबर बिजय बजाय, कियो पूरित लङ्कापुर ॥ रामरूप गहि बनअशोक, प्रति गयो उमँगि उर । लिय पञ्च पञ्च शिरकर युगल, निशिचरपति के पकरिकच ॥ जानकी हेरि

हरषित भई, मानि मनसि निज स्वामि सच १३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ लङ्का भट रघुनाथ वेषबर धरिलियो । जनकात्मजा समीप गौन तूरन कियो ॥ नामलेत व्यभिचार हीय जिहिं हटतहै । परहां । रूपधारि रघुबीर कि दुर्घट घटत है १४ निरखि निरखि निमि नृपति नन्दिनी नैन हैं । रघुनन्दन बरबेष बिराजत ऐनहैं ॥ भामिनि भय तजिभई सहर्षित हीय हैं । अरिहां । रुचि करि तासु समीप गई शुचि सीयहैं १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ निरखि राम साक्षात, झटिति कुचतटी भारनत । तदपि तूर्ण उत्थाय, अग्रचलि गई सीय तित ॥ प्राणनाथ हौं धन्य, रजनिचर मस्तक तजिये । शान्त होय बिरहागि, गाढ़ आलिंगन सजिये ॥ इमि मिलि न मनोरथ मैथिली, करन चही किंचित जबै । वह रामवेषधारी असुर, भयो क्लीब तत्क्षण तबै १६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ सीतासती समीप निशाचर खण्ड हैं । सत्वर भयो बिशीर्ण जासु मणिदण्ड हैं ॥ इच्छामात्र करन्त यहै फल प्रापहै । परहां । शिव शिव अन्तर्द्धान असुरपति आप है १७॥ कविरुवाच ॥ कह शरमा जानकी यहै नहिं रामरी । रावण असुराधीश सुमाया भ्रामरी ॥ सीय भई सबिषाद उचारत बैन हैं । परहां । परिहै किमि पहिंचान सु नीरजनैन है १८ ॥ जानक्युवाच ॥ हा हाहा आकाश धरणि हा बरुण है । हाहा वायो अर्क करहु मम करुणहे ॥ रहिहै कौनप्रकार आत्मगत धर्म है । परहां । परिहै किमि पहिंचान प्राणप्रिय पर्म है १९ ॥ कविरुवाच ॥ तब बाणी आकाश अमल ऐसीभई । चतुरशिरोमणि सीय सिन्दाणी यह सई ॥ राम सराहत राक्षसेंद्र रण सोयहै । परहां । सुम्बहि मन्दोदरी ताहि अति रोयहै २० तब परि है पहिंचान सिये तव पीय की । शमन होयगी दुसह दुःखतति हीय की ॥ ऐसे सिय समझाय गगन गिर चुपरई ।

परहां । मैथिलि मानस मध्य सकज़ दुविधा गई २१ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रावण निजकेली सदन, थितहुइ करत विचार । मया प्राप्त रामत्व पुनि, कियतस चरित प्रचार २२ ॥ रावणउवाच ॥ पापमूल प्रवृती विदित, निपट निरुन्धन कीन । कौन समयमधि क्लीबपन, दुष्ट दुसह दुखदीन २३ ॥ षट्पदछन्द ॥ जनस्थान मधि भ्रान्त, कनक मृगतृष्णा हतधिय । बचन सो बैदेहीति, साधु प्रतिपद प्रलपित किय ॥ कीन्हों लंकाभर्तृ, बदन परिपाटी घटना । मया प्राप्त रामत्व, कुशल वसु तासु निकटना ॥ इहि मध्य श्लेपत्रय चीनहै, प्रथम कीनरावण रचन । पुनि द्वितिय राम प्रवचन पठत, तृतिय काहु भिक्षुक बचन ॥ २४ ॥

इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहर्जाविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेरावण-
प्रपञ्चोनामत्रयस्त्रिंशोल्लासः ॥ ३३ ॥

अत्रश्रीहनुमन्नाटकेदशमोङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ गिरि सुबेल थित कटक, बीच रघुराज बिराजत । सहित भ्रात सुग्रीव, बिभीषण युत छवि छाजत ॥ लङ्काधिप प्रतिजाय,जबै अङ्गद उतआयो । बिभु बल्लभ बैदेहि, वाहि निज निकट बिठायो । युवराज दूत बर्णनकरहु, है संधी उपकारिणी । दशग्रीव निकट तुम्हरी गिरा, भइ अथवानुपकारिणी १ ॥ अङ्गदउवाच ॥ अङ्गदयुग करजोरि, अरज कीन्हीं यहि रीती । अनुपकारिणी भइ, पुलस्त्य पोते परतीती ॥ उदाहरण हरिणाङ्क, भाल तिहि गुरु भव भाषत । उक्षारथ अरु अस्थि, माल भूषण परकाशत ॥ अरु अङ्गराग भल भस्म जिहि, लसतबस्त्र गजचर्म है । एकालयस्थ धनपति सखा, जस गुरु तस शिष धर्म है २ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि बिहँसे रघुनन्द, हुकम पुनि ताहि सुनायो । भो अङ्गद युवराज, समरबर अवसर आयो ॥ सब सैनिक सुग्रीव,

दीजिये आयसु ऐसे। रहैं शर्बरी बीच, सकल सावध हुइ जैसे॥ पुनि प्रात प्रभाकरके उदय, संगर उत्सवहै महा। तब कहि तथास्तु तारातनय, कपिन कपिन कपिवरकहा ३ सरस शर्बरी समय, राम लक्ष्मण दोइ भ्राता। कियो कटकमधि शयन, तहां त्रिभुवनजनत्राता॥ रावण पठई प्रबल, प्रभञ्जनि नाम एकसी। छाई छलबल सकल, छकी मद अछक छाकसी॥ निर्भरशयान लखि राम को, तत्क्षण छुरिका करलई। गुरुभ्रमण सुदर्शन चक्र लखि, चकितबराकी तकिरई ४॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ तिहि अवसर प्रति बुद्ध सु अङ्गदवीरहै। प्रभञ्जनी अधिगम्य सुअधिक अधीर है॥ पुनर्गंतुमुद्यता गर्वगति गोपहै। परहां। तब अङ्गद उचरत बचन साटोप है ५॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ तिष्ठतिष्ठ निशिचरी, क्षणक रहिजाउ अत्र है। फिरि जावहु निज स्वामि, असुर अधिपाल यत्र है॥ आई अङ्गदबाहु, पाशमधि आक्रन्दत अब। हरिणी सिंहाधीन, तासको है त्रातातब॥ इमि कहि उहिं अभिमर्दनकियो, भैरवरव चिकार किय। सो सुनत सकलकपि कटकके, जागिउठे अकुलायहिय ६॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ अकूपार इव पार यामिनी पायकै। प्रात होत कविव्रात चले सब धायकै॥ दोर्दण्ड आस्फाल केलि अभिनीय है। अरिहां। उतपाटित साटोप शैल कमनीय है ७॥ दोहाछन्द॥ गिरिवर तरुवर धारिकर, करि कोलाहल चण्ड। लङ्का कीन्हीं आकुलित, बानर ओघ उदण्ड ८॥ चन्द्रायणाछन्द॥ लङ्कामधि लङ्केश उदय रबिहोतही। सुनिबानर बाहिनी कुलाहल श्रोतही॥ अमरष मूर्च्छित होय सुभट बुलवायहै। परहां। दीन्हों उतकट कटक झटिति पठवायहै ९ लङ्काचल शुभशिखर मञ्चथित आप है। मन्त्रिमहोदर पुरोभाग महि थाप है॥ रघुवर बरबाहिनी बिलोकन मानहै।

परहां। महिमा महद महान करत अनुमान है १० जलनिधि खेलत हुते इतै बानर सबै। यातुधान की फौज उतै आई जबै॥ लीन्हें झटिति उखारि वृक्ष बहु बृन्द हैं। परहां। क्षण मधि कियो निकन्द निशाचर कन्द हैं ११ सचिव बिभीषण डरन लगे कपि त्रासते। त्राहि त्राहि रघुबीर उचारत आसते॥ तब तूरण हनुमान जिते जावत भये। परहां। सकल हिये समझाय भेद गावत भये १२ लङ्कामधि लङ्केश महोदरते कहैं। कब आये इत राम समय सुनिबो चहैं॥ अविदित आगम दिवस मोहिं रघुराज को। परहां। बन्दोबस्त नहिं कियो समर के काज को १३ सीयसमर्पहि राम यही उरआनिकै। मन्त्रिमहोदरनाम सुकहत बखानिकै॥ बानर बरबाहिनी नयनलखिलीजिये। परहां। रामागम दिनकहत श्रवणगत कीजिये १४॥ महोदरउवाच। षट्पदछन्द॥ धरहिगई नम्रता, धराधर धूजनलागे। क्षुभित अखिल अम्भोधि, करण गिरि कूजनलागे॥ बरषागमसम बैरि, बधू बरषन्त नयनपथ। बाहिनि पदप्रक्षेप, धूलि आच्छादित रविरथ॥ लङ्केश आप जान्यो न किमि, रामजैत्र यात्रादिवस। ध्रुवधोलधाम धूजन लगे, शेषकमठ सँकुचित अवस १५॥ समस्या॥ सूर्योदय के समय रुदन चकई कियो॥ चन्द्रायणछन्द॥ जयप्रयान रघुनन्दभयो हौ जा समै। अतिशय धूलि कदम्ब उड़े हैं तासमै। शशिप्रभ छत्रनिहारि नैनफाट्योहियो। परहां। सूर्योदय के समय रुदन चकई कियो १६ दोहाछन्द॥ सहायार्थ सुरपतिदिये, छत्र तुरग गजआदि॥ तिनकरि शुभशोभित भये, रघुबर राम अनादि १७॥ कविरुवाच॥ पुनि रावण बूझनलग्यो, कहहु महोदर कुत्र। किहिं किहिं ढिग का का करत, रघुबर दशरथपुत्र १८॥ महोदरउवाच। षट्पदछन्द॥ कहत महोदर ग्रीव, लसत सुग्रीव गोदमें। अक्षनिहन्ता अङ्क, अंघ्रि बिलसत

बिनोदमें ॥ चारु कनक मृगचर्म, उपरि अखिलाङ्ग विराजत । अनु-
जार्पित धनुसज्ज, सशरकरवर छबिछाजत ॥ अति तीक्षण अक्षीण
कोणकरि, वीक्षमान तव लङ्कपुर । संदत्तकरण त्वदनुज बचन, राम
धीर रणधीर उर १६ बद्धसेतु भ्रूभङ्गबन्दि, आवेदित रघुपति ॥ तव
मातुलत्वचि विष्ट, अनुज मन्त्रनदत श्रुतिगति ॥ बाणदत्त दृष्ट्यर्द्ध,
लषण लखि कृतसस्मितमुख । ग्रीवबाहु सुग्रीव, गोदसमर्पित समस्त
सुख ॥ अरु अङ्गदके हनुमानके, अङ्कनमें अंघ्री उभय । लङ्केशनिहा-
रहु नयनते, लसत राम निज जन अभय २० ॥ दोहाछन्द ॥ गगनगि-
लित भूमीगिलित, गिलित दशहु दिशि देख । प्लवंग पुञ्जपीता स-
रित, सीतापति भटपेख २१ ॥ समस्या ॥ व्याघ्रसदनसम लसत नभो-
मण्डलइते ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ देव महा उतपात मध्य दिन पेखिये ।
क्वचित मीन कहुँ मेष दृष्टि दे देखिये ॥ कित लम्बित कृत्तिका, सार्द्र
मृगशिरकितै । परहां । व्याघ्र सदन सम लसत नभोमण्डलइतै २२ ॥
कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ साभ्यसूय रावण बदत, अहो महोदर पश्य ॥
नहिं प्रताप तप सहि सकत, आफताबहू यश्य २३ ॥ रावणउवाच ।
षट्पदछन्द ॥ मम प्रतापतति तीव्र, ताप संतप्त प्रभाकर । पूरब पश्चिम
जलधि, बीच डूबत निशिबासर ॥ प्रविशति बारिधि मध्य, नाथ
बैकुण्ठ निरन्तर । निवसत नित हिमगिरी, शान्तिहित सतत त्रिपुर
हर ॥ क्षणमात्र कमल छोरत नहीं, कमलासन आसन कियो ।
शिरछोनि छत्र लिये शेष, अहि कमठ तासु आश्रय लियो २४ ॥

इति श्रीमत्पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि-
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणमहोदर-
संवादोनामचतुस्त्रिंशोल्लासः ॥ ३४ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ इतने अन्तरमध्य सुविपिन अशो-
कते । शरमा चतुर लुकाइ लङ्कपति लोकते ॥ सिय तत्रस्थ

विमान बीच बैठायहै। परहां। पीतम प्यारे राम दिये दरशायहै १ निमि नृपनन्दिनि नैन कलित कमनीयहै। रामरूप अभिराम प-रम रमनीय है॥ उभय न भयो मिलाप सरस शोभाभई। परहां। तरु तमाल पर जाय यथा मधु करिछई २॥ दोहाछन्द॥ इमि पिय दरश कराय कै, शरमा चतुर सुजान। पुनि अविलम्बित जानकी, पहुंचाई निजथान ३॥ कविरुवाच। बरवैछन्द॥ राम कटक बानर भट लङ्क निहार। करि उतप्रेक्ष अलंकृति बचन उचार४॥ बानरभटाऊचुः॥ जवन कनक प्राकारा रतन दुकूल। त्रिकुटाचल बनिता जनु लङ्कातूल ५॥ कविरुवाच॥ रावण लङ्कामधि इमि बचन उचार। अहो महोदर मन्त्री सुनिये सार६॥ रावणउवाच॥ कुम्भकरण सोवत है जाहि जगाउ। निद्रा रसिक निरन्तर उहिं इत ल्याउ७॥कविरुवाच॥ कहि तथास्तु तित गवनेउ सचिव समस्त। कुम्भकरण सोवत जित निद्राग्रस्त ८ करि करि अति उच्चस्वर कूपुकार। कर्ण रन्ध्र मुख धरि धरि किय चिक्कार ९ तनक न सुनत निशाचर हारे हीय। तब तिन प्रति उचरत है ताकी तीय १०॥ समस्या॥ जिहिं गल-करन्ध्र मधि मशकइव, बानरयूथ प्रवेश किय॥ कुम्भकर्णाङ्गनोवाच। षट्पदछन्द॥ कहा करत उपचार, जगावन कुम्भकर्ण है। किये सुवारम्बार, शब्दकरि पूर्णकर्ण है॥ कछु लीजै विश्राम, याहि निद्रा न तजत है। यहहू आठौयाम, निरन्तर ताहि भजत है। अब अबैं कवन उपाय बढ़, सुनि करिलेउ बिबेकहिय। जिहि गलकरन्ध्र मधि मशक इव, बानरयुत्थ प्रवेश किय ११ गजाक्रमण अरु घोर, सचिव चिक्कार शब्दकरि। जब न जग्यो वह कुम्भकर्ण तब शङ्क सकलधरि॥ अब किहि बिधि जागिहै, अमित उर करत अँदेशा। बिना जगाये कूर, कोप करिहै लंकेशा॥ गन्धर्व यक्ष सुर सिद्ध बर,

किन्नर कामिनि कलितकृत। बरगायन गीतामृत सुनत, भौबि-निद्रचैतन्यधृत १२॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द॥ उत्थापन अवलोक, कुम्भकरण बड़ बिकटबपु। सभय भये कपिलोक, लखि मारुति आशिष बदत १३॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द॥ जिहि जृम्भा संभार, भीम भृकुटी तट भासत। कुम्भकर्ण अट्टट्टहास, व्याकोश विकासत॥ अद्भुत बदन बिलोकि, चकित चित प्राणि पुण्यपद। मृदुल मृणाली मिथिल, सुता सँग राजहंसहद॥ सिन्दूर पूर्ण गिरि शिखर शिर, शेखर श्रीरघुबर बिमल। भय बिकटयुक्त कपि कटक के, वर बिभूतिप्रद होहुभल १४॥ कविरुवाच॥ लङ्कामधि जब कुम्भकर्ण सुप्तोत्थित दरश्यो। कवलितकृत पल शैल, जाल तीव्रासव परश्यो॥ तृप्तभयो न तथापि, बचन मुख उचरत ऐसे। गङ्गा यमुना सिन्धु सुरापूरित हुवजैसे॥ तब तृप्तिहोय मेरी कछुक, इतने ते का होत है। जिमि तप्तायस जलबिन्दुइव, अधिक अधिक उद्योत है १५॥ कविरुवाच॥ निज कटकस्थित राम, निरखि बपु अद्भुत ऐसो। लङ्काशिरजिहिं जानु, अङ्ग अम्बरलौं तैसो॥ वातात्मज ते बदत, मारुतेयह कहा है। अष्टधातु संघटित, किधौं यह यन्त्र महाहै॥ तब युगलहस्त पुटजोरिकै, पवनपुत्र उचरन लग्यो। यह यन्त्र नाहिं महराजजू, कुम्भकरण सोवत जग्यो १६॥ चन्द्रायणछन्द॥ कुम्भकर्ण लङ्केश निकट जब प्राप है। सिय अर्पहु यह अभिप्राय उर आप है॥ जउ आयसु क्षितिपाल प्रचर सर्वत्र है। परहां। शास्त्रदीप संचार करत नृप अत्र है १७ भ्रातृ बचन सुनि कह यथार्थ लङ्केश है। निस्संशय बच शास्त्र सु इष्ट अशेशहै॥ तदपि न तजिहौं सिया यहै अभिप्राय है। परहां। बदत बचन सावज्ञ सुनावत ताय है १८॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ फटिकाचल उच्छ्रित, शिखर श्रेणी घृष्टाङ्गद।

प्राप्त प्रतिष्ठा परम, पीनतर भुज बिलसतहद ॥ समर सुरासुर भयद, कितहु पावत न पराजय। नरबानरहै कहा, क्षणकमधिहोय मोर जय ॥ अति तोर भुजाडम्बर बृथा, भई त्वदाशा शिथिलसब। अति निद्रा बाधतहै तुम्हैं, जावहु निद्रानिलयअब १९॥ कविरुवाच ॥ कुम्भकरण हुइभीम, भणत भारती भयङ्कर। बलवद्विद्विष शोक, शल्य संपूरण परिहर ॥ पावहुनाहिं निषाद, रहहु कल्याण समाश्रित। अहमहमिक या अहं तनक, नहिं तुहिं तजिहौं इत ॥ कह काल बिधाता है कहा, का अरिकुल भयकहा यम। यमदूत कहाको राम है, के कपींद्र रण कुपितमम २० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ सुनि रावण सानन्द बचन उचरत भयो। सुभट संग बललेउ पराक्रम प्रबलयो ॥ रण प्राङ्गण अवतरतु बच्छ उच्छाहते। परहां। शीतल करिये हीय रिपुनके दाहते २१ ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ कुम्भकरण साक्षेप, यथारथ तिहिविधि कीन्हो। उरसि अमित उत्साह, समरवर मारग लीन्हो ॥ जिन भाजहु कपिमल्ल, समय हुइकै संगरते। कुम्भकरण नहिं भिरत, कदाचितहू बानरते ॥ जउ लघु जलधरको पात तउ, स्वल्प सरित नहिं संचरत। पुनि मशककुटुम्बन केशरी, कबहुँनिकन्दन नहिं करत ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेकुम्भकर्ण रणाङ्गणावतरणंनामपञ्चत्रिंशोल्लासः ॥ ३५ ॥

कुम्भकर्णउवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ नहिं बाली न सुबाहु, न खर त्रिशिरा अरु दूषन। नहिं ताटक अभिधान, तथा ताला वह रूषन ॥ नाकछु सेतु समुद्र, रुद्रधनु ना मुहिंमानो। कुम्भकर्ण ममनाम, काल मूरति पहिंचानो ॥ रे रामप्रतापानलकवल, बीर मौलि नरशल्य सम। संग्राम भूमि बिचरत फिरत, कोपि तुलत नहिं तुल्यमम १ ॥

कविरुवाच ॥ तदनन्तरउत्पत्य, गगनमधि अविलम्बित अति । बाहु मूल गहिलियो,लपकि सुग्रीव प्लवगपती ॥ पुनि भुजकरि रविकण्ठ देश दृढ़ पीड़ित कीन्हो । कुम्भकरण सानन्द, लङ्कपुर मारगलीन्हो ॥ कपिराज तूर्ण भक्षण किये, कर्णघ्राण अतिहरषिहिय । कूर्पर प्रहार करि उदरमधि, पुनरागमनिज शिबिरकिय २ ॥ दोहाछन्द ॥ रखत नि-रन्तर शूरपन, शूर्पणखा भलभ्रात । भगिनीसम अब इतउतै, आवत जातलजात ३ आनन कहा बतायहौं, कपिलै नाक कटाय । जग मधि जीवनते जबहिं,लीन्हों हियो हटाय ४ कुम्भकर्ण बिन कर्णको, बहुरिभयो बिन नाक । अब जीवन नहिं उचित है, उचरत गदगद बाक५ ॥ षट्पदछन्द ॥ लम्बनिसासे डारि, बिलोचन बारि बहतहै । स्वा-त्मजलांजलिदेय, चपलचित मरण चहतहै ॥ छैलोकियो मिलाप, होय सकरुण लङ्काते । गहि त्रिशूलकर चल्यो, समर विरहित शङ्का ते ॥ क्रोधान्ध कालमूर्त्तीनयन, प्रलयानल अङ्गारगण । संछिन्नघ्राण अरु कर्णयुग, कुम्भकर्ण अवतीर्णरण ६ तिहिं बिलोकि संत्रस्त, चित्त करि भूरि भये हैं । जीवितआश धियधारि, कितक गिरि कुहर गये हैं ॥ केते प्रचलित चरण, बात आकाश उड़े हैं । भ्रमरचण्ड दोर्दण्ड, परस पुनि पुहमि पड़े हैं ॥ मुखघ्राण रुचिर चय बमत, तित प्राण धरत संकष्ट है । फूत्कार करत अति बारबहु,मनो महा अहिदष्ट है ७ ॥ कविरुवाच ॥ त्रिनयनदत्त त्रिशूल, तड़ित कोटी प्रभुपूरण । मनो केतु संहार, कियो उच्छेपन तूरण ॥ घोर प्रज्वलित महाताकि तित उर तारापति । चपलचलायो चण्ड, प्राणहारक अद्भुतगति ॥ जानकीकन्त जानत सबै,शरकरि छेद्यो बीचते । सुग्रीवसखा निज प्राणसम, बचो निशाचर नीचते ८ गहि मुद्गर कपिकटक, बीच घट-करण महातुर । क्रोधानल अरु जाठराग्नि करि भयो क्षुधातुर ॥ एक

कमलमधि लिये, कोटि बानर अति उतकट। बदन मध्यरखि सद्य, अदन कृतभट अति उद्भट॥ कपिचरण पीसिडारे अमित, कर्णरन्ध्र केते कढ़े। पुनि पकरि पकरि चर्बितकरत, दाबि दाबि दशननबढ़े६ सव्य स्वकर करि सान्द्र, शिबिर कपिकटक बिदारन। बिद्यमान बर बिपुल, बीर बानर बनवारन॥ प्राणकरनको हरन, हार सुग्रीव बिलोक्यो। कुम्भकर्ण अतितूर्ण, ताहि उत्तरकर तोक्यो॥ मम बपु बिरूप करता, यहै महाबैर मनलायकै। लेचल्यो चपललखि, गगन मग महाभूत धुवधायकै १० अङ्गदलखि निज तात, दुष्ट लेजात लपटिकै। कुम्भकरण प्रतिगयो, बीरबर झटिति झपटिकै॥ गरुड़पास करि भुवि, निपात किय अरि अति तूरन। कछु सचेत सुग्रीव, होत उतनै उहि पूरन॥ पापिष्ठ तनक बिसरत नहीं, खलु खिसानपन बीजको। नरसिंह पास बांधे युगल, काका अवर भतीज को ११ दुहुँन बद्ध लखि नील, प्लवँग निज अनलरूप करि। कुम्भकरण मुख कन्ध, मौलि श्रुति घ्राण उदरभरि॥ तीव्र ज्वाल किय दाह, कुपित ह्वै सकल अङ्ग जिहिं। बिकल भयो क्रब्याद, कुटिल खल कुम्भकरण तिहिं॥ सुग्रीव अवर अङ्गद उभय, बानरेन्द्र प्रोत्थित तदा। कपि कटक बीच आनन्द अति, युगल जोय छायो यदा१२॥ कविरुवाच॥ लङ्कावर शिखरस्थ, निहारत रावण रनको। भ्रात जरत लखि सुधा, बारि बरसाये घनको॥ शीतल भयो शरीर, सचेतन कुम्भकरन है। भक्षण चह नलनील, यथा अहि युग सुपरन है॥ गहि लिये लपकि दुइ कपिन को, सब बानर देखतरये। जब जाम्बवान जर्जर जरठ, उग्रबेग आवतभये १३ जाम्बवान अति उग्र, बेप बिपदा बिदरन है। निज भुज गुरु मदयुक्त, निरन्तर कुम्भकरन है॥ जानु बन्ध किय कएठ, गाढ़ रचि असुर गिरायो।

जिमि गिरीन्द्र दम्भोलि, नील नल युगल छुटायो ॥ तब ऋक्ष-
राज शिर ऊपरे, सुमन बृष्टि किय मरुतगन। करि क्रोध निशा-
चर तूर्णतिहिं, कियो गुल्फ आघात तन १४ आलच्छित रघु-
बीर, सलक्ष्मण चले मरुतसुत। कालान्तक सम शत्रु, विशङ्कित
उरजाउतउत॥ समरथान अवतीर्य, चार्य बहु धैर्य धुरन्धर। रम्य
रुद्र अवतार, उग्र कपि कटक पुरन्दर॥ अति अरुण अक्ष नरसिंह
सम, निजकर पर गिरिवर लिये। किल कलश करण बिकरण नि-
कट, विकट सुभट हरपत हिये १५ पवनपुत्र पटुपाणि, पञ्च पर्वत
छबि कैसे। मेरु शिखर पर सरस, शोभ मैनाकजु जैसे॥ कुम्भक-
रण के करण, मञ्जु मुद्गर सोहतहै। मनु मन्दरगिरि अग्र, अजनजन
मोहतहै॥ कलपान्त समरमधि मरुतसुत, गिरिगिराय शिर ऊपरे।
मुद्गर प्रहार क्रव्याद करि, भूधर पटक्यो भूपरे १६ ॥ दोहाछन्द ॥
आञ्जनेय करिकोप उत, अद्भुत दई चपेट। द्रुत मुद्गर क्रव्याद को,
लिय लंगूर लपेट १७ ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ इहि अन्तर मधि
राम, बिशिख संधान किये हैं। इन्द्रदत्त शर युगल, तीक्ष्ण तिहिं
समय लिये हैं॥ कुम्भकरण के निधन, काज रण बीच चलाये।
एक हृदय अरु द्वितिय, बिशिख शिर छिन्न कराये॥ नभ नमोनमो
जयजय धुनी, सब सज्जनजन शरनभो। लङ्केश बाहुबल हरण
भो, कुम्भकरणको मरणभो १८ मारुति चएड चपेट, गिस्यो मस्तक
तुहिनाचल। जिहिं कपाल जलमध्य, डूबिहै भीम महाबल॥ पुनि
क्रव्याद कबन्ध, पुच्छ गहि गगन उड़ायो। चल्यो गयो आकाश,
पेख पार न कोउ पायो॥ आनन्द भयो कपि कटक मधि, दुसह दु-
रित दुख दरणभो। लङ्केश बाहुबल हरणभो, कुम्भकरण को मरण
भो १९ ॥ दोहाछन्द ॥ राम बीर्य अविलम्बि उर, बरणत लक्ष्मणभ्रात।

उच्चस्वर गम्भीर गिर, कह कबन्धबलुरुयात २०॥लक्ष्मणउवाच॥ पट्पदछन्द ॥ बाजू बिबुध बिमान, दूर लीजे रविस्यन्दन। असुराधम अघराङ्ग, उछास्यो अञ्जनिनन्दन॥ रे रे बानर बीर!, असुरत्रय सुनहु बचन मम। रण प्राङ्गण परिहरहु, रहहु एकान्त चहत हम॥ जनु अञ्जनाद्रि प्रतिनिधि अवधि, बिस्मापक जु अबन्ध है। आतङ्क हेतु लङ्का गिरत, कुम्भकरण कुकबन्धहै २१ ॥कविरुवाच॥ तनुतेभो उत्क्रान्त, प्रबर सुरबधु लिय भुज भरि। नारदादि संगीत, मधुर मृदु सुर जनरवकरि॥ नहिं बिमान आरोह, करत जउ कृष्यमाण है। अभिलाषा उर रही, भर्तृ परित्राण प्राण है॥ जिहिं पुनरपि समरच्छालसत, ध्रुव सङ्गर मधि धीर है। किमि शिव शिव शिव बर्णन करैं, कुम्भकर्ण बड़ बीर है २२ लखि लङ्का शिखरस्थ, बदत रावण बिस्मय सह। मरुत चन्द्र आदित्य, इन्द्रमुख कृतभुज जहँरह॥ उपसर्पत अनुदिवस, भये संतत जिहिं मोपर। सकल सुरासुर करि, अजेय अबिरत लङ्कापुर॥ किय कोप बिकम्पित अधर तट, पुट बानर भट बिकटकरि। अति समाक्रान्त त्रासित भई, शिव शिव शिव दशमुख नगरि॥ २३॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे कुम्भकर्णवधोनामषट्त्रिंशोल्लासः॥ ३६॥

अत्रहनुमन्नाटकेएकादशोङ्कः॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ रावण भयो सकोप, तूर्ण सम्पूर्ण सेनसह। समरयज्ञ अध्वर्यु, इन्द्रजित अङ्गज किय वह॥ कुम्भकर्ण बध श्रकनि, भयो आमर्ष बिमूर्च्छित। सीतापति बधबद्ध, लक्ष अवतीर्ण समरजित॥ इत लक्ष्मण धनु गुण सजकरि, टणत्कार धरणी गगन। आपूरित कोपानल प्रबल, ज्वाला बलिमाला मगन १ सुनासीरजित तितै, लषण नासीर

अग्रहत। लङ्का लङ्कापाल, सहित किय करण कवल चित॥ मेघ-नाद लखि लक्ष,बचन मुख उचरत ऐसे। अल्पहु कारण नाहिं, कोप करियत इत कैसे॥ थिर शुद्ध बुद्धि बिन हेतु नहिं, कृपाक्रोध किलकरतकव। कृत संचित चञ्चल चितै नर, नेह कोह बिन काज सब २ हरि बिजहत संत्रास, भिन्न शक्रेभ कुम्भथल। लज्जा पावत विशिख, तिहारे बपुष क्षुद्रबल॥ तिष्ठ तिष्ठ सौमित्रि, त्वमपि नहिं क्रोधपात्र है। मेघनाद मम नाम, बज्रसम अखिल गात्र है॥ भ्रूभङ्ग-मात्र नियमित जलधि, रामचन्द्र रघुबीर हैं। अति तूर्ण ताहि ढूँढ़त फिरत, वह मम संगर धीर है ३ अञ्जनिसुत सुग्रीव, नलाङ्गद नील प्रमुख कपि। घन घमण्ड थित मेघनाद नहिं लखत किंचिदपि॥ दियो बरफ बर्षाय, बिपुल किय अन्धकार है। करत घोर शरघात, निरन्तर बारबारहै॥ अधिरुह्य महद माया सुरथ,नभ थल थित गम्भीर गति। करि काल जलधि धुनि गर्जना, रावण बाल करालअति ४॥ दोहाछन्द॥ यथामेरु मन्दरगिरी, वासव बज्र निपात। नागपाश शर बद्ध तिमि, राम लषण युगभ्रात ५॥ समस्या॥ चन्द्रउदित चित च-कित, मुदित मन निर्तत चकई॥ रोलाछन्द॥ इहि अन्तर मधि पूर्व, बैर सुमिरण किय कोकी। सरवर थित वह दशा, भ्रात युग नयन बिलोकी॥ शापतहौ मम दयित, राम रावनि हततकई। चन्द्र उदित चित चकित, मुदित मन निर्तत चकई ६॥ षट्पदछन्द॥ बन्धन दश-रथ नन्द, अकनि रावण आयसुदिय। सुमन बिमान बिठाय, बता-बहु पिय देवरसिय॥ कहि तथास्तु लेगई, निशाचारि शरमा तित को। राम लषण युग बन्धुवध थित रण मधिजितको॥ द्रुत देखि दुर्दशा दुहुँनकी, जानकि जिय शोचनलगी। बर बारिज से युग नयन ते, नीर निचय मोचन लगी ७ भार्गव गौतम च्यवन, शिष्ट

कश्यप बशिष्ठ मुनि। लोमश कौशिकप्रमुख, गिरामुख ज्योतिष मत चुनि ॥ सुनि समीप आपके, मग्न चूचुका जिहिं तियतन। संतत सधवा रहैगईं, कबहुँ न बिधवापन ॥ ते त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ ऋषि, सत्य बचन बक्ता सबै। तिन आशिष किमि मिथ्या भये, उर अचरज आवत अबै ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ हा प्राणेश्वर राम फुरत सब अङ्गहे। बाहु नयन नहिं अनृत अशेष अभङ्गहे ॥ तनक नाहिं सुखदेत माधुरी दृष्टिमें। परहां। भुजबिलास लुकि रह्यो कहौ किहि सृष्टि में ९ मात तात अनुजातरु अग्रज मानिता। मनसि तनक मुदलेत सकल सन्मानिता ॥ पावत परमप्रमोद किंचिदाश्वासिता। परहां। जिमि रमणीय रमणीय रमण बिश्वासिता १० ॥ षट्पदछन्द ॥ प्रत्युत्तर नहिं पटल, प्राणपति पीतम प्यारो। हाहा लक्ष्मण बच्छ, मोर अपनयन निहारो॥ रुष्ट भयेहौ कहा, कछुक उत्तर चाहत हम। भूरि भूभ्रमण कीन, कज्ज मम भयो भूरिश्रम ॥ अब स्वर्ग सकल अवलोकिबे, सिद्ध करत किमि भ्रात युग। दुर्दशा देखि दुहि बीरकी, उर अन्दर अतिशय तरुग ११ लखि हैं नहिं दिविलोक, मोहिं बिधिलोक सिधैहैं। बिना किये मम शोध, उभय कितहुँ न थितिपैहैं॥ कीजै प्राणप्रयान, स्वर्ग मधि संगम दीजै। कहा निहारत राह, प्राणपति मारग लीजै ॥ लखि इमि अचेत अति जानकी, शरमा समझावत तबै। बैदेहि बदत कह बावरी, युग मूर्छित जागहि अबै १२ ॥ दोहाछन्द ॥ सुनि शरमा शुचि बचन सिय, पुनि निज नाह निहार। शोच बिमोचन कीन कछु, लम्ब निशासे डार १३ रावण के भयभीत ह्वै, शरमा परम सुजान। बन अशोक मधि लेगई, सियसह सुमन बिमान ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेजानक्यशोकवन
पुनरागमनंनामसप्तत्रिंशोल्लासः ॥ ३७ ॥

कविरुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है । सुन्यो है सुपर्ण शोर जाको बिभु भौनबीच, क्रोधानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है ॥ पक्षन पवन बृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि त्रसायो है । स्वामिहि जिवायो सुधा बारि बरसायो सद्य, बिनताको जायो बेग धामधाय आयो है १ ॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते, भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन ताप तनुत्रस्त २ ॥ षट्पदछन्द ॥ बिरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । बिलपत मुख हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ भो प्रबीर पश्यन्तु, पठत प्रबचन मुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश गिरि निकुम्भिल, वटमूला बटथित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन निरख्यो मायासिय । उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूर्च्छालिय ॥ रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम, स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो श्रवणन धरिलीजिये ४ बिकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौमित्री पुनि पठत, कछू निश्चय न निहास्यो । जामदग्नि मुनि शाप, मुग्धपन प्रकट प्रचास्यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप सकल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख । इमि करिकै आलाप कछु, बिलपत लषण बिशेख ६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै । अपर अक्षि प्रक्षेप

बिरह पति स्वान्तहै ॥ अस्त समय रबि पेखि चकई गति असभई। परहां। रुद्र करुण रस युगलरूप चख छबिछई ७ ॥ षट्पदछन्द ॥ तत्र निकुम्भिल अद्रि, मूल निग्रोध अवट में। अति सत्वर घननाद, बिभीतक समिध सुथरमें ॥ अर्द्धचन्द्र आकार, कुण्ड निजपल आहुति दिय। शत्रुञ्जय रथ अर्द्ध, कढ़यो लखि भो हरषित हिय ॥ हनुमन्त तूर्ण तित जायकै, असुर यज्ञ भञ्जन कियो। भो मुधा मनोरथ दुष्टको, सिद्ध काज कछु ना लियो ८ रण प्राङ्गण मधि अक्ष, लगायो लक्ष स्वच्छमन। शनिते लिय दशरत्थ, नृपति ते लियो लक्ष्मन ॥ स्मरण कियो संहार, अस्त्र सानन्द बचन कह। रे रे माया रथारूढ़ सुन मेघनाद यह ॥ करि छिन्नभिन्न माया बिपुल, तोहिं पठैहौं शमनपुर। ह्वै सावधान संगर सजउ, असुर हूजिये गाढ़उर ९ दोस्तम्भन आस्फाल, केलि फुट बिकट ध्वानकरि। ध्वस्त महातम घोर, प्रबल संहार अस्त्र करि ॥ धनु संयोजन केलि, पानि आहत पुहुमीतल। धीर बीर क्रोधान्ध, उदगिरत अनल दृगञ्चल ॥ सौमित्रि छेदि घननाद, शिर हीरक मण्डित मुकुट्युत। लङ्केश पाणिपुट युगल मधि, अर्पण कीन्हो आपउत ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्री.वरविलासेइन्द्रजीतवधोनामाष्टत्रिंशोल्लासः ॥ ३८ ॥

अत्र श्रीहनुमन्नाटकेद्वादशोङ्कः। षट्पदछन्द ॥ सुत निज निधन निहार, निशाचरनाथ कुपित अति। अरुण बरण दशबदन, बदनदश नयन बिंशतति ॥ एक बीरघातिनी, शक्ति प्रक्षेप कियो है। ललित लक्ष्मण वच्छ, स्वच्छ लखि लच्छ लियो है ॥ हनुमन्त गहि लई बीचमें, जलनिधि मधि छेपनकरी। रावण सकोह ह्वै सद्य तब, बध बिरञ्चि इच्छाभरी १ शक्ति ग्रहण बिलोकि, महामन कोप छयो है।

चतुरानन बधकरन, दशानन उदित भयो है ॥ सभय भयो परमेष्ठि, सुवन नारद सुमिस्यो तब । सुर ऋषि हाजिर होय, हत्थ दोनों जोरे जब ॥ विधि बदत बच्छ यह मरुतसुत, जबलौं सङ्कर है थित । इक बीरघातिनी शक्ति की, शक्ति कछू नहिं चलत तित २ शक्ती भये अशक्त, यहै रावण मुहिं मारत । इहि दुखकरि भो बच्छ, हेरयो अतिशय आरत ॥ स्थानान्तर ले जाउ, मरुतसुतको सुत सत्वर । करिलेहैं निज काज, इतै रावण रण चत्वर ॥ निज जनक मरण भयमानि, मन मुनि नारद रण थलगये । पटु पवनपुत्र तिहिं थान ते, तूरन ले जावत भये ३ करि कृतान्त सम क्रोध, ज्वलित हृदयानल रावन । राक्षसेन्द्र अति उग्र, बेष बैरी बिद्रावन ॥ शक्ति ग्रहण करि याद, अधिक उर भयो अमर्षित । उग्रमन्त्र अभिमन्त्रि, निधन सौमित्रि चहत चित ॥ गहि चपल चलाई सांग, सो लक्ष बच्छ बेधतगई । पुनि भेदि भूमिमण्डल सकल, कूर्मराज भेदतभई ४ प्रौढ़ उग्र नर तेज, प्रलय समुदित अति कोपित । रावण भुज ते चली, चपल गर्जत तर्जत तित ॥ दीपित किय दश दिशा, लक्षवर बच्छ बिदारत । हाहाकार प्रलाप, सकल जनबदत उचारत ॥ कृतकम्प देव दैत्येन्द्र सब, स्तूयमान ब्रह्मादिसुर । इक बीरघातिनी शक्ति वह, प्रविशत पती भुजङ्गपुर ५ ॥ दोहाछन्द ॥ इहि अन्तर आये उतै, स्थानान्तरते तूर्ण । हनूमान हेरतभये, करुण मगन सम्पूर्ण ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ पूरण पश्चात्ताप, बिभीषण बलकृत पेखत । क्षीणतेज सुग्रीव, ऋक्षपति मूढ़ बिशेषत ॥ भये अगोचर सदृश, सकल शाखामृग भासत । शक्तीप्रौढ़ प्रहार, लषण मूरछा बिकासत ॥ रघुराज राम बिलपत बिबिध, अतिछायो करुणाकटक । थिरहोय सबैथित रीजिये, इमि उचरत हनुमत हटक ७ भये शर्बरी समय, बिभीषण

चले समर महि। कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुलमुक्रगहि॥ शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्छितलये सकलकपि। जाम्बवान उपविष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि धीरज बूझतभयो। हनुमन्त बिपुल बानरप्रवर, कहहु कुशल जीवतरयो ८॥ दोहाछन्द॥ सुप्रज प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये जगजोय। कुशल सुनत कपिप्रवरको, ममहिय हर्षित होय ९॥ बिभीषणउवाच॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह। हनुमत मधि दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १०॥ जाम्बवानुवाच॥ जो जीवत दुर्धर्ष वह, हतबल अहतप्रमान। अरुण होय हनुमान तो, जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत बिभीषण, तूरण पहुँचे तत्र। पृष्ठभाग थित मरुतसुत, बिलपत रघुपतियत्र॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेविभीषण जाम्बवान्संवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः॥ ३९॥

कविरुवाच॥ दोहाछन्द॥ राम निरखि लङ्केश चप, अति तीक्षण हुवपीर। क्षण क्षण क्षण बिलखत अधिक, धरत न किहुँबिधि धीर १ श्रीरामउवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहैं। सो सुनि करिहैं सीय सुत्रिदिव प्रयाण है॥ गहिहैं गिरि कपि कटक खटक हिय हायहै। परहां। यहै बिभीषणबीर कहो कित जाय है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है। तदनन्तर तुम गहे अनुजकी गेल है॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहै। अरिहां। किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहै ३ मोको प्रथम सुवाय फेर सोवत रहे। क्रम न तज्यो किहि ठौर सुमग जोवतरहे॥ अबै स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये। अरिहां। हम इत अगलीराह चित्त चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिबिष्टप जाय हैं।

इतै बिनशि है राम भयो असहाय है॥ तुम्हरी गति विपरीत पेखि सन्ताप है। परहां। प्रकट कियो सापत्न भाव किमि आप है ५ तार सुरन करि सबै तबै रोवन लगे। रामचन्द्र मुखचन्द्र सकल जोवन लगे॥ भये बिपुल बेहाल कछू नहिं अटक है। परहां। छाय रह्यो कपि कटक करुण रस कटक है ६॥ षट्पदछन्द॥ पुनि पुनि रोवत राम, कहत हा वच्छ लच्छमन। सेवन कियो सदैव, अहर्निश मोर स्वच्छमन॥ पवनपुत्र धिक्कार, तोहिं तजि भयो पराङ्मुख। तेहि ते संगरमध्य, प्रापभो अति दारुण दुख॥ मम अनुजभ्रात उद्धरत धनुष, इहिरण होतो जो भरत। तो शक्तिपात घनघाततें, सौमित्री कबहुँन मरत ७॥ दोहाछन्द॥ मुधा जुधारण शस्त्रभर, यौवन बृथा हमार। तजन चहत सबिशिख धनुष, हिय निर्बेद निहार ८॥ कविरुवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ निज अपराध निहारि त्रपा करुणा छये। साभ्यसूय भुज भरत सबल सुनिके भये॥ कियो गारुड़स्थान हुमसि हनुमन्त है। परहां। पुरोभाग थितहोयबचन उचरन्तहै६॥ हनुमानुवाच॥ षट्पदछन्द॥ सात अम्बुनिधि दिशा, दशों गिरिगोत्र सप्तमित। भुवन चतुर्दश पृथिवि, आदि नभमण्डल इकइत॥ एतावत परिमाण, मात्र ब्रह्माण्ड कटक है। इनमें तौ कितजाय, निशाचर नीच अटक है॥ बिभु बिनय करत करजोरि युग, अधिक वदत अनुचर लजत। जित जाय तितै तकि मारि है, आप कहा कार्मुक तजत १०॥ कविरुवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ बचन प्रभञ्जन सुनत सुनत रघुबीर है। गदतगिरा गम्भीर महारणधीर है॥ श्रीराम उवाच॥ मारुति कथन यथार्थ, यदपि सब तथ्य है। परहां। यातुधान जागर्त्ति मोहिं उन्मथ्य है ११॥ कविरुवाच॥ मारुति कह यह बात, सदा स्मरणीयहै। नाहिं नीच नर नेह, कदा करणीयहै॥ दुष्ट

करत दुरवृत्त, साधु ह्वै नद्ध है। परहां। हरी दशानन सीय, वारि-
निधि बद्ध है॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित कविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामसमीरसूनु-
संवादोनामचत्वारिंशोल्लासः॥ ४०॥

श्रीहनुमानुवाच॥ षट्पदछन्द॥ पाय कछू प्रारब्ध, योग जग मधि
दुर्जन इत। हरत महज्जन मान, कथंचित क्वचित कदाचित॥
पै उनके अनुज नित, गुण न धावत पामर नाहि। पावहि किमि
अधिकत्व, बिलोकहु बिपुल सकलमहि॥ स्वर्भानु रश्मि शशि
भानु की, समय पाय यद्यपि गहत। ब्रह्माण्ड खण्ड मण्डल बिषे,
नहिं ग्रहेश कोऊ कहत १॥ चन्द्रायणछन्द॥ रावण किय उन्म-
थित रावरो मान है। दैवयोग जड़ तऊ होय किसमान है॥ बिनय
करत करजोरि सुबारम्बारहै। परहां। धीरज धरिबो सार सकल
संसारहै २॥ कविरुवाच॥ राम कहत पुनि बचन समीरनसुत रहौ।
कालान्तरगत सिया कहा कारज कहौ॥ बन्धु करत उपभोग नाहिं
सुख लेतहै। परहां। अरु अरिगण आतङ्क दुसह नहिं देतहै ३ ब-
च्छल लक्षण बच्छ बच्छथल भिन्न है। कृतप्रतिज्ञ हनुमन्त सविस्मय
खिन्न है॥ सुनहु नाथ पणमोर सुरीति सदैव है। हरिहां। अय-
महोयमराजरुदेव अदेव है ४॥ षट्पदछन्द॥ करि प्रवेश पाताल,
सुधारस सत्वर लाऊं। अथवा चन्द्रनिचोप, प्रचुर पीयूष पिवाऊं॥
चन्द्र किरण उद्दण्ड, अखिल ब्रह्माण्ड निवारों। करि चूरणकी
नाश, पाश शासन यम टारों॥ जो होय हुकमसोही करौं, कीजै
नाहिं बिलम्ब अब। रघुराज रावरी मेहरते, मोको है आसान सब५॥
कविरुवाच॥ सुनि समीरसुत बचन, राम शोचन लागे उर। बदत
बदन महबीर, तथा तैसे करिहै तुर॥ महाप्रलय ह्वै जाय, अनवसर

इमि करिवेते। इमि उर अन्दर शोधि, बचन उचरत हरवेते॥ ल्या-वहु सुखेन अभिधा भिषक, असुर ईश अनुचर यदपि। करिहैं न कपट है बैद्य वह, लखिहि चिकित्सावर तदपि ६॥ कविरुवाच॥ कहि तथास्तु हनुमान, लङ्कपुर जाय त्वरित है। पटु परियङ्क समेत, भिषक भललयाय अतित है॥ सुप्तोत्थित लखि भिषक, राम सकरुण बचबोले। कहहु तरुण उपचार बैद्य, सुनि हिय निज लोले॥ जीविहै भ्रात रघुराज तब, यह उपाय करिये अचिर। बल्ली बिशल्लिबर द्रोणगिरि, चन्द्ररश्मि रजनी रुचिर ७॥ कविरुवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥ राम बुलाये दूत बेगको आयहै। अपनो अपनो बेग बदहु मनलाय है॥ सुनि रघुबर बरहुकम हुमसि बोले तबै। हरिहां। निज निज बल अनुरूप अवधि उचरत सबै ८ जावत आवत नलकहँ लगत त्रिरात्र है। तथा मैंद अरु द्विविद कपिन्द द्विरात्रहै॥ एकरात्र सुग्रीव नील किय कौल है। परहां। यामचार युवराज बदत करि तौल है ९॥ कविरुवाच॥ समय आर्त्त श्रीराम सुनत कपि बैन है। संकोचित मुख जलज सजल युगनैन है॥ संगर संकट बिकट बीच भाशङ्क है। हरिहां। लखत रुद्र अवतार सुबदन मयङ्कहै १० सत्वर सकरुण गह्यो, गारुड़स्थानहै। युग अञ्जलि पुटजोरि बदत हनुमान है॥ क्षणक धारिये धीर सकल भञ्ज होनहै। अरिहां। आवत हौं पहुंचाय भिषकबर मौन है ११ इमिकहि तिहि पहुँचाय तितै इत प्राप है। आञ्जनेय उचरत बिमल बच आप है॥ प्रभु हितकारक प्रचुर प्लवङ्गम पूरहै। हरिहां। दीजै आयसु अद्य अद्रि-मग दूर है॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेवानरवृन्द बेगवर्णननामैकचत्वारिंशोल्लासः॥ ४१॥

श्रीहनुमानुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ साठलाख योजन तो जावन जहां पै बेग, साठलाख योजन को आवन जरूर है। मारुति बदत नाथ रावर प्रताप पुञ्ज, उच्चरत ऐसे नाहिं मनमगरूर है॥ अग्नितप्ततैल थित सरसों अवाज बीच, आवो उत जायले विशल्य बल्लिमूर है। कौन मगदूर द्रोण गौन मगदूर नहीं, पौन मगदूर पौनपुत्र मग-दूर है १ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनत मरुतसुत बैन, हिय हर्षित रघुबर भये॥ अवध कुशलपन लैन, अपर अमल आयसु दई २ करि बन्दन रघुनन्द, कियो चन्द उद्दीत कपि॥ द्रुहिण अद्रि सानन्द, अञ्जनिनन्दन गवन कृत ३ ॥ कविरुवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ अब सुनिये बृत्तान्त, अवधपुर बरत्यो तितको। भयो सुमित्रा स्वप्न, बाम भुज भुजग ग्रसितको ॥ कौशल्या प्रति कह्यो, तुरत उठि उहि बशिष्ठ मुनि। शांति करावत भरत, स्वपन भयप्रद श्रवणनि सुनि॥ सब सामग्री मँगवाय शुचि, थल इकन्त कीन्हो गमन। ढिग सशर शरासन धारिध्रुव, आज्य आहुति कृतहवन ४ ॥ कविरुवाच ॥ जबै द्रोणगिरि गये, मरुतसुत तित अतिशयद्भुत। प्रभा सुधाकर सदृश, बल्लिमणि सब निहारउत॥ निश्चय नहिं ह्वै सकत, भ्रमण चहुँधावहु लीन्हो। तब गिरिवर लेजान, मनोरथ मनमें कीन्हो॥ जब उठ्यो न अद्री आपते, तबै तात सुमिरन्तयो। पटु पितापुत्र युग जोरकरि, धराधरन धारत भयो ५ ॥ कविरुवाच ॥ इतै अवधपुर बीच, भरत अरु मुनि बशिष्ठ हैं। शान्ती मण्डप कुण्ड, निकट बिलसत बरिष्ठ हैं॥ हवन करत श्रीखण्ड, काण्ड सतगर कुसुमा-दिक। जलजनाल कर्पूर, उसीराज्य प्रचुरादिक॥ कृत नारिकेल पुरणाहुति, एते पै अवलोकिनभ। द्रुत आञ्जनेय आवत उतै, कर गिरिवर ज्वलदनलप्रभ ६ करनलगे सब तर्क, कहा यह इतमें

आवत। असित सुमित्रा मात, बाम भुज वही लखावत॥ अथवा मख संहार, कार घंश्रसुर आयो। इमि भ्रम करिकै भरत, तुरत शर तितै चलायो॥ भो बाण भिन्न हनुमान जब, महाबीर धीरन धरत। हा राम लषण उच्चरत, प्रबलबली पुहुमीपरत ७॥ चन्द्रायणाछन्द॥ चिरजीवी यह बीर, रहै क्षिति स्वच्छ है। विधि लिखिताक्षर पंक्ति, लोप परतच्छ है॥ चण्ड भरत दोर्दण्ड काण्ड निर्मुक्त है। परहां। भये मारुती महा मूरछायुक्त है ८ लाग्यो पट्ट ललाट भरत भव्वान है। गिरिलिय लांगुल अग्रवीर हनुमान है॥ संमूर्च्छित महिपरे बहत अभिराम है। परहां। हा रघुवर हा लषण गिरा गुणग्राम है ९ राम लषण वरनाम अमल आनन कहा। तित बशिष्ठ भरतादि भयो बिस्मय महा॥ अति आतुर ह्वै अखिल तुरत गत तत्रहै। हरिहां। महद मूरछा सहित मारुती यत्र है १० गिरतभये तिंहि चरण शल्य किय दूर है। गिरिजौषध करि मुनि बशिष्ठ क्षतपूर है॥ गई मूरछा सावधान हनुमन्त है। अरिहां। तिंतको वर वृत्तान्त स्वल्प वर्णन्त है ११॥ कविरुवाच॥ शक्तिभेद उर लक्ष भयो हौ जा समै। राम बड़ाई भरतकरीही तासमै॥ वह करिकै इतयाद हीय हनुमन्तहै। अरिहां। साभ्यसूय करि रचन बचन उचरन्त है॥१२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाज्ञजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेहनुमन्नरत
समागमोनामद्विचत्वारिंशोल्लासः॥४२॥

श्रीहनुमानुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ चन्द्र चन्द्रिका चारु रहे रजनीय है। गिरि औषध गहि तुरत तत्र गमनीय है॥ हौं थकि गयो इहैव आप पहुँचाइये। परहां। ललित लक्षमण भ्रात जहां द्रुतजाइये १॥ कविरुवाच॥ सुनत समर संकष्ट राम अरुलक्ष हैं। स्वच्छ बच्छ भल भरत प्रबल परतक्ष है॥ भुजा ठोंकि टंकार शरासन शोरहै।

परहां। लङ्का ओर निहार सुमुच्छ मरोरहे २ ॥ षट्पदछन्द ॥ तितै समर मधि राम, बिबिध बिलपत उचरत हैं। बच्छ लच्छ उत्तिष्ठ, गहहु धनु रिपु प्रचरत है ॥ सैन्य हनत तव असुर, ताहि तनक न तुम जोवत। प्राप्त सीय रिपुजीति, तथा निर्भय किमि सोवत ॥ प्रति बचन देत नहिं भ्रातकस, प्रीति छिन्न नहिं कीजिये। केकयी मात पिय साहसे, होय कृतारथ रीजिये३॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ इतै सुनत कपि बचन भरत साटोप है। अद्रिसहित सुन मरुत बिशिख आरोप है ॥ कृत कुण्डलि कोदण्ड प्लवग बिस्मितभयो। परहां। लगे करन बरतवन गरब मनको गयो ४ उतरि बिशिखते भरत भुजन पूजनकियो। कुशललेय ततकाल लङ्कमारगलियो ॥ जिमि दरिद्र मन गमन दृशान्त दिगन्त है। परहां। पहुँचे अति अबिलम्ब बीर हनुमन्त है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ अद्रिरुद्र अवतार, प्रलय रबि द्वादश समुदित। सदृश द्रोण दोर्दण्ड, धारि अधनिशि आगत तित ॥ दत्तदृष्टि दिगभाग, पूर्ब सूर्योदय भ्रमबस। तीरतरल तरसिन्धु, तार सुरकिय रोदन तस ॥ पर्वत उदोत रबिउदय भ्रम, सरवरथित बिकसित कमल। कपि लखत अमित लज्जित स्रवत, अक्षिन मग आंशू अमल ६ ॥ कविरुवाच ॥ तदनु निरखि दिगभाग, प्रभाकर उदय न पेख्यो। गिरि प्रकाश करि जलज, युत्थ बिकसन्त बिशेख्यो॥ भोरहोन भ्रम भग्यो, भूरिहिय भयो सहर्षित। गये बाहिनी बीच, राम सुग्रीव हुते जित ॥ पटुपुत्र प्रभञ्जन अञ्जनी, रम्य रुद्र अवतार हे। गहि द्रोण अद्रि अबिलम्ब उत, आवत करी न बारहे ७ ॥ कविरुवाच ॥ मार्यो माय महर्षि, कालनेमी रजनीचर। ग्राहीरूप उदग्र, कन्द काली मारीत्वर ॥ राकस बल संमर्दि, सर्व रावण प्रेरितहरि। इन्द्रपठाये प्रबल, कोटिगन्धर्व बिजयकरि ॥

मणिज्वाल जटित आदाय गिरि, झटिति उतै आवत भये। श्री-हनुमान कपि कटकमधि, हिय सबही हर्षितभये ८ मैंद द्विविद कपि प्रमुख, चमूचय रक्षाकारक। गय गवाक्ष नल नील, प्रबल अरिदल संहारक॥ सीतातङ्क महान्धकार हारक परभाकर। पवनपुत्र संप्राप्त, हरीहर उत्सत्र आकर॥ कपि कटक सुभट संघटन में, यहै गल्लगोपालहै। हृतद्रिशतु बिशदबर लक्ष्मी, लक्ष वक्षथल हाल है ९॥ श्रीरामउवाच। दोहाछन्द॥ एकहि इहि उपकार पर, प्राण समर्पित तोहिं। अवर अखिल उपकृतिनको, मानहु ऋनियां मोहिं १० तुम उपकृत आपत्ति वह, जीरन ममतनु होहिं। पुनि प्रत्युपकारार्थ हित, है न आपदा तोहिं ११॥ षट्पदछन्द॥ हनुमत कृत आलेप, अद्रि औषध करितूरण। धरणि धरन आतमा, मूरछात्यज संपूरण॥ तरणि राम अरबिन्द, लङ्कपति कुपित कालसम। आददान धनुष शर, क्रोधकरि भये अरुणतम॥ प्रोत्फुल्लखदिर अङ्गारचप, टण-त्कार कोदण्ड किय। मुखमारमार उचरन्त उत, लक्षउठे प्रोच्छाह हिय १२॥ चन्द्रायणछन्द॥ सहरष सपुलक साश्रुभये श्रीराम हैं। लक्ष्मण हृदय लगाय गहे गुणधाम हैं॥ हावच्छल हावच्छ वच्छ-थल अङ्क है। परहां। तव परिश्रम परिहार हेतु पर्यङ्क है १३ शक्ति भेद खलु खेदभयो तव पूर है। शयन थान मम हृदय महा सुदसूरहै॥ मेघनाद कुलकमल बर्ष प्रालेय है। परहां। प्रबलभई बेदना न आनन गेय है १४॥ कविरुवाच॥ कह लक्ष्मण करजोरि कछुक मम खेद है। सम्पूरण श्रीराम बेदना भेद है॥ प्रभुउर पीड़ापरम प्रतक्ष प्रचारहै। परहां। किंकर केवल कथन मात्र छतधार है॥ १५॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि दीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीलक्ष्मणो-त्साहवर्णनंनामत्रिचत्वारिंशोल्लासः॥ ४३॥

अथ श्रीहनुमन्नाटकलक्ष्मणशक्तिभेदोनामत्रयोदशोङ्कः ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥

प्रात भये लङ्केश, बुलायो लोहितलोचन। कहहु राम प्रति जाय, करत तब मैथिलि मोचन॥ जामदग्नि निर्जित्य, परशु प्रमथाधिप लीन्हो। वहहै तुम्हरे निकट, चहै रावणको दीन्हो॥ कहि तथास्तु लोहितनयन, तूरण नभ मारग लियो। इत शिबिरबीच किय आगमन, रघुनन्दन बन्दन कियो १ ॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द ॥ रावण दूत निहार, रघुबर बतरावन लगे। तित अधिराज निहार, कहा करत लोहित नयन २॥ लोहिताक्षउवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ लङ्क निशङ्क जराय गयो अबिलम्बहै। लंघन कीन समुद्र प्रतक्ष प्रलम्बहै ॥ औषध आन बिशल्य जिवायो लक्ष है। हरिहां। मारुति ऊपर पीसत दन्त ततक्ष है ३ ॥ कविरुवाच। बरवैछन्द ॥ सुनि बिहँसत श्रीरघुपति बोलत बैन। किहि कारण आगत इत लोहितनैन॥ कर युगजोरि कहत तब लोहितअक्ष। देशदेश लङ्कापति पठव प्रतक्ष ४ हरप्रसाद परशा तुम भृगुपति जीत। वह रावण को दीजै राखि सुरीत ॥ करहिं समर्पण रावण रावरसीय। सब बिरोध मिटिजैहै निरखहुहीय ५॥ षट्पदछन्द ॥ बिहँसि बचन कहराम, दूत देखहु रत लोचन। पेखि प्रणय पौलस्त्य, सुमिरितव मति मोदत मन॥ हरप्रसाद यह परशु, तदपि नहिं देनयोग है। दिये गलानी गहहिं, लङ्कपति लखहिं लोगहै॥ सब दई बसुंधर द्विजनको, असुर रसातल रीजिये। निर्जित्य निशाचर लेय क्षिति, किमि बलभिद को दीजिये ६ ॥ दोहाछन्द॥ दूत दशानन असुरपति, मम बचनन इमि बाच्य। हरप्रसाद बर परशु यह, लङ्काधीश अयाच्य ७ ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ येते अन्तर बीच, पुरन्दर पट्ठु पठवायो। शत्रुञ्जय रथ प्रवर, मातुली सारथि लायो॥ रघुबरहू हनुमन्त, ध्वजाग्रारोपण दीन्हो। अति

उत्साह समेत, आप आरोहण कीन्हो ॥ तब लोहिताक्ष निष्क्रान्त तित, लङ्काधिप सन्निधि गयो । निज शिर नवाय कर जोरियुग, सब वृतान्त बरणत भयो ॥ ८ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रलोहिताक्ष
रावणदूतसंवादोनामचतुश्चत्वारिंशोल्लासः ॥ ४४ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ कह लङ्का शिखरत्थ लङ्कपुर कन्तहै । ध्वजपर सुतदशरत्थ कोन बिलसन्तहै ॥ यह सुनि लोहितअक्ष बचन उचरन्तहै । परहां । प्रबल पराक्रमपुञ्ज बीर हनुमन्त है १ ॥ षट्पद छन्द । लोहिताक्षउवाच ॥ हेलोल्लंघित सिन्धुग्रस्त, अंशुन मण्डलधर । सियबियोग सहराम, दैत्य उदघाटन पटुतर ॥ निशिचर नायक नगर, निखिल निरदग्ध अचलचित । संजीवित सौमित्रि, औषधी अद्रि आनि इत ॥ उपमा अनन्त हनुमन्त यह, जिहि मग अवर न अनुसरत । अतिप्रबल प्रभञ्जन पुत्र बर, रघुबरध्वज गज्जन क-रत २ ॥ कविरुवाच ॥ मन्दिर मन्दोदरी, गयो रावण अति तूरण । बूझन लग्यो बिचार, चारु मति नयसंपूरण ॥ बिनिहत राघव बि-शिख, बिबुधपुर करौं मैं । अथवा सीय समर्पि, राम संकष्ट हरौं मैं ॥ मम मात्ररह्यो अवशिष्ट बल, कौन पक्ष है तोर प्रिय । सो सपदि सुनावहु स्वामिनी, धारण करिहौं हर्षि हिय ३ ॥ दोहाछन्द ॥ बि-हँसि बदत मन्दोदरी, पहिले सुनी न एक । प्राणनाथ लङ्कापती, अब किमि भयो बिवेक ४ ॥ मन्दोदरिउवाच । षट्पदछन्द ॥ दैत्यभ-गिनिको देखि, खरादिक निधन श्रवण सुनि । मातुल लख्यो बिनाश, ताल भेदन श्रुतिगत पुनि ॥ कपिबर बालीदहन, बद्ध सुग्रीव सख्यसुत । जलधि तरन उद्यान, भङ्ग बध बिदित अक्षसुत ॥ पटु पुत्र पौत्र परिवार जन, नष्ट भये कुलके सबै । कृतसेतु बिनि-

गत नीरसम, उर बिवेक आयोअबै ५ ॥ रावणउवाच । मनोहरछन्द ॥
धिक धिक इन्द्रजीत जाग्यो कुम्भकर्ण बृथा, स्वर्ग ग्राम लुण्ठन बि-
त्रच्छ भुजवीशहै । लाखन धिकार मोहिं मेरे सुनि शत्रुहोय, तामें
तुच्छ तापस सहाय संग कीशहै ॥ सोहू अत्र आयकै प्रहारै कुल
राकसको, जीवतहै रावण निहारै नैन बीशहै। एक अङ्क शीशवार
पीसडारे यातुधान, बीसौंबिसा अधिक धिकार दश शीश है ६ ॥
कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ सकरुण मन्दोदरी कहत लङ्केश है।
नहिं पावहु कछु शोक स्वभान सलेश है ॥ त्रिया तदपि क्षत्रियाहु-
कमङ्गुन दीजिये। परहां। समर मध्य ममनाथ हाथ लखि लीजिये७
रावण बदत बिदीर्यमणिनु निज हीय है । तरुणय करुणानाहिं
किंचदपि तीय है ॥ प्राणरङ्क नहिं पीय तोर जिय होत है। परहां।
तज लङ्का निश्शङ्क समर उद्योत है ८ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥
गहि आयसु श्रीराम, सकल कपि भट निकसे हैं। लङ्का उत्तर मार्ग,
रुन्धि अति उर बिकसे हैं ॥ उल्लंखलत्प्लुत्य, करत दृढगढ़ आरोहन।
शैल शिखर कर धारि, छटा छाहत छबि सोहन॥ दिगपाल कुलाहल
बहलमद,उग्र अवग्रह तारत्रख। देदीप्यमान दिशि बिदिश,दिशि
दशग्रीव उदग्रीव लख ६ ॥ कविरुवाच ॥ रावण रामनियुद्ध, निहारत
रुद्र निरन्तर। संवेष्टित कपिकटक, लङ्क अवलोकि दिगन्तर॥ उच-
रत मरुदादित्य, शम्भु शतमख मुख सुरवर। अनुसर्पत अनुदिवस,
समय जिहिंपुर दुवारपर ॥ वह समाक्रान्त बानर भटनि, दशग्रीव
नगरी रुचिर। अति लखहु कालमहिमा प्रबल, उर आवत अच-
रज अचिर ॥ १० ॥

इति श्रीपिप्पलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रवानर
कटकलङ्कासंरोधोनामपञ्चचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४५ ॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ प्लवगाधिप सुग्रीवमुक्त बहुबृक्ष है। सपदि पाय संघट्ट लङ्कपति वक्ष है॥ प्रकटत पावकपुञ्ज भूमिरुह दहतहै। परहां। दिपत दवानल सदृश समरमधि महत है १ रावण निजगिरि शिखर उखारि प्रचार है। पिष्टपानि चयपरस कुण्डजल धार है॥ निर्भर पयजनु होत, पिण्ड जम्बाल है। परहां। लगत हृदय सुग्रीव सुमन मनु माल है २ उतपाटित कैलासभये भवतुष्ट है। इहि उतपाटन किये तथा सन्तुष्ट है॥ रणमधि रक्षा करहिं देव करिकै दया। परहां। इहि कारण लङ्केश शिखरगिरि करलिया ३॥ षट्पदछन्द॥ रावण होय सक्रोध, रथारोहण किलकीनो। भेरी मर्दल शेप, ताल निकरस्वनमीनो॥ काहलखनिस्सान, श्वान परिपूर्ण कर्णकिय। दशकन्धर युद्धार्थ, नगर निकसत बिकसतहिय॥ माणिक्य मौलि मञ्जुल महा, यशोदीप दीपित द्युशत। बिधि कर्म वशयजु अवश्य उत, लङ्कपाल अति उल्लसत ४॥ चन्द्रायणाछन्द॥ परिमिति पवन प्रचार मन्द रबिताप है। निकस्यो जब मग गगन निशाचर आप है॥ प्रणमत सब सुरसंघ नम्रहुइ अङ्ग है। परहां। थगित सरित गति भङ्ग उतङ्ग तरङ्ग है ५॥ षट्पदछन्द॥ जब लङ्का भट सुभट, शरासन शिखर नील थित। क्रोध आशुगिरि प्रस्रव, सहित पर्वतकर बिलसित॥ मृगतृष्णा जलयुक्त, अचल अविलोकि चकित चित। दिग मण्डल जुपदेव, सुमति उत्प्रेक्ष करत तित॥ बहु बृन्द बृन्द बृन्दारका, वाणी बिपुल बदन्त है। धनुभृङ्ग तदुपरिगिरी, तत्र जलधि बिलसन्त है ६ राम मध्य साश्चर्य, सपदु भट सुख अवलोकत। व्यथा सहित सुर तौर्य, शान्तरस तत्र बिलोकत॥ रघुबर युधि साशङ्क, कपिन मधि सबिनय सरसत। साश्रुपूर सौमित्रि, सभय अनिलज मधि दरशत॥ लखिभ्रात कृत्य

सासूयहुव, आत्मकृत्य सत्रप लखत। दशवक्त्र बक्र चयचक्र सब, भिन्न भिन्न भावन रखत ७ दृढ़ बांधे दशतूर्ण, शक्रहय सटाकेश करि। धुनत बाम दोर्दण्ड, धनुष दश बिपुल बेगधरि॥ दक्षिण भुज दश बिशिख, सुतीक्षण आददानहै। छोड़त क्रीड़ा करत, प्रकुप्यत यातुधान है॥ अभिभवत भूरि प्रसरत अमित, गर्जत तर्जत ओघअति। खिद्यन्त निरन्तर बदन श्री, रणप्राङ्गण मधि अवतरति ८॥ चन्द्रायणाछन्द॥ समराङ्गण श्रीराम निशाचर कन्त है। तरुण कुण्डली भिन्न बपुष अगिनन्त है॥ करीकुम्भ संलग्न ललति बिलसन्त है। पवै हेकामिनि कुचयुग परस यथा सोवन्त है ९॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द॥ गगन गगन परमान, सागर सम सागर लसत। रावण राम समान, संगर रावण रामकौ १०॥ षट्पदछन्द॥ सारनाम क्रव्याद, बीर हयचढ़ि उत आवत। अश्वमध्य हुव खण्ड, चढ़्यो पूर्वार्द्ध सिधावत॥ पश्चिमार्द्ध युवराज, तुरङ्गम गह्यो क्रोध कर। कीनो प्रबल प्रहार, असुर शिर ऊपर सत्वर॥ निज शिबिर बीच पहुँच्यो न वह, अङ्गद ताड़ित महि पर्यो। शिव शिव शिव अति संकट बिकट, चमू निशाचर उच्चर्यो॥ ११॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे ताराहृतमिचरवधोनामषट्चत्वारिंशोल्लासः॥ ४६॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ निशिचर महद शरीर, अल्प बपुवानर बिलसत। किहि प्रकार ह्वै बिजय, राम संशय हिय हुलसत॥ कह अङ्गद करजोरि, कलश शिशु पियो अम्बुनिधि। अद्री परम उतङ्ग, पुरन्दर पक्षछिद जिहिबिधि॥ अति प्रथुल बपुष किहि काजके, कोणपकुल असमर्थ उत। निजनाम धेय ध्रुवराम इत, लसत सकल सामर्थ्ययुत १॥ कविरुवाच॥ रावण रघुबर निरखि, बचन उचरत हैं

ऐसे। ताटक ननु तियमात्र, रामशुचि द्विजहौ तैसे ॥ भीति भवन मारीच, हिरनवालीहौ वानर। बृथा विकत्थन करत, काहि काकुत्थ अधिकतर ॥ कहु कौन बीर वर बिजय किय, रखत गर्व दोर्दण्डकर। कोदण्ड अबै आरोपिये, तोरमोर ह्वैहै समर २ ॥ कविरुवाच ॥ अङ्गद उत्तर देत, अरे सुन निशिचर नायक। वन्द्य महज्जन चरित, कछू नहिं संशय लायक ॥ सुन्दर तिया किय दमन, तौन दरशत कुण्ठितयस। अरु जिहिबिधिहो बालि, ताहि तुम जानत जियजस ॥ पुनि सुनिबो चाहत औरहू, बिदित बीर जयबिमलगिर। खरखण्डन दूषण दलन किय, त्रिशिर कियो रण भिन्न शिर ३ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि अङ्गद के बैन, वचन रावण पुनि उचरत। रे रे मानव राम, समर लङ्कापति प्रचरत ॥ शङ्करगिरि कैलास, किया कन्दुक क्रीड़ा इव। मानव निशि दिन दर्प, जासु देवेश्वरहू दिव ॥ असुरान्तत सुन्द सुन्दरिकदन, शाखामृगपति अन्त कृत। जाघोस करहु धिय धीरधरि, दोर्दण्ड कोदण्ड धृत ४ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ तदपि न रावण हनत सदपि श्रीराम है। आनन अम्बुज नम्र कियो अभिराम है॥ जब किंचित थित लज्ज सहित सियकन्त है। परहां। बिहँसि तबै लङ्केश वचन उचरन्त है ५ ॥ रावणउवाच ॥ तव पूर्वज अनरण्य हुतो बरजोरहै। कीन्हो ममकर कदन जंगमधि घोरहै ॥ तिहि सुमिरण करि व्यथित परम सन्ताप है। परहां। जिहिते लज्जावन्त होत अति आप है ६ ॥ श्रीरामउवाच । षट्पदछन्द ॥ कहत राम निश्शङ्क, निशाचर नीच निहारहु। कहा लज्ज अनरण्य, भूप निज जिय निरधारहु ॥ जय अथवा है मरन, शूरवीरन को रनमें। तिहिको हरषरु शोक, तनक लावत नहिं मनमें ॥ बन्धनागार अर्जुन नृपति, बहुवासर रावण रये। बड व्यथा होत इहि हेत तित,

मुनि पुलस्त्य भिक्षुकभये ७ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ ममभुज भृगुपति बिजित जासु बध कीन है। तिहि हैहय के हाथ बन्ध तुम लीन है॥ सङ्कट कारागार सहे अगिनन्त है। परहां। तव सन्मुख धरि शस्त्र सुलज्जावन्त है ८ ॥ कविरुवाच ॥ रावणहिया बसन्त सुसन्तत सीय है। मोर निरन्तर ध्यान जानकी जीय है॥ मम उर निबसत सकल सृष्टि संघात है। परहां। हनत न शरहिय असुर हरत जग घात है ९ ॥ षट्पदछन्द ॥ रावण रोष निहारि, बिहित अहंकार आपउर। द्रुतद्वन्द संगर बद्ध, दिश बिभु सज्ज भये तुर॥ शरणागत भयहरण, बिरदबर बिलसत अविरत। आयो बिपुल उछाह, प्राण तृण तुलित बिशेषत॥ रघुबंश राज महाराज सुर, अवध नगर अधिराज है। बधकरन काज असुरेश को, रणमधि बिबिन बिराज है १० ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ प्रिया बिरह अर्दितप्रभू, लहत नाहिं रति तत्र। सत्यरम्यरमनीयता, थिरमन बिलसत यत्र ११ ॥ कविरुवाच। मनोहरछन्द ॥ बाण इहि ताटकाके शोणित सनान कियो, भगिनी के कानन प्राण प्राणायाम कीन्हो है। दूषण त्रिशिरखर आहुति अशेशदई, हिरनमारीच बलिदान बेग दीन्हो है॥ आचमन आन्योहै अनन्त अम्बु अम्बुनिधि, भोजनावकाश अबै चारु चितचीन्हो है। मार्गण क्षुधित मोर मार्गन करत तोर, आमिष असुर लङ्कनाथ चहै लीन्हो है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ चितचाहत जो संचितौ, सीय समर्पहु सद्य। नातर ममनाराच तव, आमिष भखिहैं अद्य॥ १३ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्र रावणसंवादोनामसप्तचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४७ ॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ तउरावण सावज्ञ बचन उचरन्तहै।

प्रकट प्राण परित्राण हेतु वर्णन्तहै॥ मूर्खनको मूकत्व सभा मधिहै यथा। परहां। क्लीबन को रणबीच संधि बच है तथा १ ॥षट्पदछन्द॥ इमिकहि गगन बिलोकि, दशानन बदत बचन है। रे रे काल अकाल, लब्धतव बिभव रचन है॥ ह्वै स्वैरसकाम, शम्भु भूपय तू तन तव। शिरोमाल्य निज अङ्ग, भूरि भूषित भ्राजहु भव॥ रचिये बिरञ्चि सृष्टि अपर, लङ्केश्वर कटिबद्ध है। करबाल गही भीषन भुजन, युद्धकाज सन्नद्धहै २ ॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ पुनि करि रामाच्छेर सुनावत बोल है। मन्दिर मधि मैथिली अलाप अमोल है॥ रण दारुण मधि होय पलायन प्रान है। परहां। मधुर अधर मम गिद्ध करहिंगे पान है ३॥ कविरुवाच॥ त्रिजटा शरमा दोय विमान बिठायके। बैदेही लेगई चतुर चितचायकै॥ रघुबर रावण युद्ध बतावत सीयको। हरिहां। निमिनृपनन्दिनि नीक निहारत पीयको ४ चढ़ि लङ्काचल शिखर उच्च मन्दोदरी। निरखत सङ्गर शोभ निशाचर सुन्दरी॥ एकचरणथितभये अगाध समुद्र है। परहां। शोभा समिति समग्र निहारत रुद्र है ५ बरविमान आरूढ़ बिबुध बहुबृन्दहै। अवलोकत संग्राम सकलसानन्द है॥ कालरुद्र सम रामकियो अतिकोप है। परहां। जनु भैरव संहार सुअद्भुत ओपहै ६॥ श्रीरामउवाच। षट्पदछन्द॥ रे निशिचरपति नीच, करत अब तेरो चूरन। बाणासन शिर त्रिदश, दर्पहर गहिये तूरन॥ बेग बुझावत मोर, प्रिया बिरहागि बिलोकत। मन्दोदरि युगनयन, नीर करि तव अवलोकत॥ जो करनहोय करिलेहु सो, मनकी मन रह-जायगी। लङ्केश रिंदगी ज़िंदगी, एकहि सङ्ग नशायगी ७॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ इमि कहिकै श्रीराम लिये कर बान है। सो लखि मन्दोदरी लगी घबरान है॥ मन्दोदरिउवाच॥ हुते बालतर

रूप तबै ताटकहती। परहां। अबै तरुणतम लखत कितक मेरो पती ८॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ आकर्षण किय धनुष, जबै रणमधि श्रीरघुबर। तबै बामभुज बदत, अहो सुनिये दक्षिणकर॥ दानदेन अरु लेन, मिलै मनभावन भोजन। अग्रहोत उहिं ठौर, अबै कृत पृष्ठ नियोजन॥ तबदाहन कह मोको न भय, बूझत निजस्वामी श्रवन। दशबदन बदनसब सहकदन, किमि इक इक करुणाभवन ६॥ कविरुवाच॥ दृष्टमन्त्र दिव्यास्त्र कुशिक, सुत शुचि सेवनकर। योद्धा भृगुपति बीर, भुजगपति भोग द्विभुजबर॥ विभु दिनकर कुलकेतु, कुतक उत्तान दृगञ्चल। बहुमत रिपुकृत कर्म, कौतुकी राम अचंचल॥ जो कर्मबश्य कर करिकरत, रावण रणमधि अचलचित। सो कर्म दोष दोर्दण्ड द्रुत, दाशरथी दरशात तित १० रावन करी प्रतिज्ञ, समरमुर्द्धनि ऐसी उत। रे रावण तव सहित, होयगो अर्क अस्तद्रुत॥ अस्तअचल अवलम्बि, भयो आदित्य समय जिहि। मन्दोदरी चकोर, बधू समहुइ औसर तिहि॥ जानकी चितचकई सदृश, समय भङ्गभयजानि जिय। अरुनिशाबीच निशिचरनको, प्रबल होत बल हेरि हिय॥ ११॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेसीतामन्दोदरी वचनवर्णनंनामाष्टचत्वारिंशोल्लासः॥ ४८॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ कहत राम लङ्केश, तोर शिर बहुत बिलोकत। मिलत महामुद मोय, एकबध इक अवलोकत॥ बिनिपातित इकमाथ, कोप उपशान्ति कहौ किमि। निरखत नहिं निज निधन, भिन्न उच्छिन्न होत जिमि॥ निज छिन्न छिन्न मस्तक निरखि, बिलखत दुर्नय निखिल फल। जग एकमत्थ के शत्रुते, दश मत्थनको शत्रुभल १॥ चन्द्रायणाछन्द॥ इकशिर लखि उच्छिन्न अपर

इमि बदत है । माछिंधी माछिंधि गिरा मुख गदत है ॥ एकमत्थ अरिहनै यहै नहिं लेख है । परहां । दुर्नयफल दशमत्थ परत सब पेखहै २॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ अति दुनतर श्रीराम, बाण संघात वातहुत । रावण ताड़न व्यग्र, ग्रीव नहिं गिरनदेत भुत ॥ छिन्न धनुष निस्त्रिंश, आदि प्रहरण करि कोपित । निज मूरध दशवदन, रामशर व्रात दलित तित ॥ कर इकइक शिर गहि गगन मधि, उच्छरत भ्रूट भुजबीस भट । जनु अतिशय नरसंघटन में, बटा उछारत सुघर नट ३ बाण शाण उत्तीर्ण, समर प्राङ्गण मधि रघुबर । सम कलपान्त कृतान्त, लिये नव एक संगकर ॥ नवमूरध उच्छिन्न, किये पुनरपि नवीन लखि । ह्वै मुहूर्त्त चित चकित, बिपुल बिस्मय बिचहियरखि ॥ बिधि दियो वाहि बरदान यह, जब लौं छिन्न न मध्यशिर । उच्छिन्न कियेहू अन्यमथ, पुनि पुनि प्रकटहिंगे अचिर ४ कुम्भज मुनि संदत्त, बिदित ब्रह्मास्त्र प्रबलतर । अभिमन्त्रितकरि बाण, प्रहास्यो हृदि दशकन्धर ॥ शोणित शोण शरीर, बिशिख बर पञ्चबाण गहि । अतिशय सत्वर तीक्ष्ण, धार शर भो प्रबिष्ट महि ॥ रण रावण बिद्रावण बिबुध, सकल लोक रावण रहा । भो पतन तास पुहुमी प्रबल, भयो मोद मङ्गल महा ५ सब सुन्दर सुन्दरी, सहित मन्दोदरि परिवृत । गलदबिल जलधार, नयननीरज पुनिस्तृत ॥ सियपति निजपति बिरह, प्रतापानलहि बुझावत । त्रिकुटचलते चपल, समरभूमी मधि आवत ॥ अतिकरत घोर फुत्कारयुत, हाहाकार पुकार मुख । संप्राप्त महा निद्रापती, गिरिचरण चित अमित दुख ६ ॥ मन्दोदरिरुवाच ॥ सुर सिन्धुर बर बधू, कुम्भ प्रस्फोटन निस्त । बिलिखन बिजय प्रशस्त, बिशद मञ्जुल मौक्तिक कृत ॥ वर्णावली बिचित्र, लसित ले-

खक लङ्कापति। नाकान्तःपुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति॥ बर बिरचित तित काश्मीरका, पत्रांकुर शोभा अमित। तिहि नाशक भुज भीषन प्रबल, भो किहिं बिधि संगर शमित ७ हा लङ्केश्वर प्राण,नाथ जिय जीवन मेरे। मन्दोदरि पतिब्रता, बदन बहु चुम्बत तेरे॥ आलिङ्गन भुज भूरि, करत एकान्त कान्त जब। कहतहुते करिकौल, वहै सब बिसरिगये अब॥ बर लम्बोदर कल कुम्भथल, मौक्तिक मणि एकावली। करिदेहुँ तोहिं आवत अबै, करजंदार निद्राभली ८ इककर करि कैलास, धस्यो दूसर त्रिभुवन जित। अष्टादश अवशिष्ट, नाहिं आयो अवसर कित॥ भूरिभव्य क्रव्याद, बीर रणधीर महाबल। रिपु यह द्विभुज मनुष्य, तिया बिरहित बानरदल॥ अतिप्रबल देखिये देवगति, वह बिनिहत निज नगररन। बहु बृथा होत सामग्रि सब, उलटि जात जब नियतिजंन॥ ९॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमन्दोदरी
विलापोनामैकोनपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ४९॥

कविरुवाच। मनोहरछन्द॥ बृष्णिकुल जाति जासु अग्रज कुबेर कैसो, कुम्भकर्ण भ्रात पुत्र इन्द्रजीत पायो है। आप दशमत्थ समत्थ हत्थ बिंशति है, काम चार दैत्य रथ बिजयी बतायो है॥ लङ्क जैसो गढ़ दृढ़ परिखा पयोधि पूर, गोबिन्दजू दैव दैव दुर्बल दिखायो है। खोसि खोसि खायो खूब खीझि खीझि सारो जग, कोशलकिशोर ताहि क्षणमें खपायो है १ एक काल बीच जाने बिश्व को बिजय कियो, जाही भुजबीस ईश अद्रि को उठायो है। ताको अग्निदाह संसकार समै आयो अब, राम बिन आयसु सो कपिन करायो है॥ गावत गोबिंद अति आचरज आवतहै, अद्भुत अवश्य

काल महिमा बतायो है। खोसि खोसि खायो खूब खीझि खीझि सारो जग, कोशलकिशोर ताहि क्षण में खपायो है २ दुरग त्रिकूट तासु परिखा पयोधिपूर, योधयातुधान धन धनद धरायो है। संजीविनी बिद्या हृद्य जाकेहि मुखाग्रगत, कालबश ताकोहू बिनाश दरशायो है॥ जन्तुनको पूर्वकृत कर्मविपाक महा, बिषम बिबश बिश्वबीच बिलसायो है। जोई शिवशीश दशशीश शीशमेघ हुतो, शिव शिव सोई गिद्धपायन लुठायो है ३ ॥ कविरुवाच। लक्ष्मीधरछन्द ॥ लक्ष औ अक्षहन्ता जहां जायकै। मानतैंयानमें जानकी लायकै॥ स्वामी श्रीरामके सामने सोरखी। लज्जमें मज्जसी सीय शोभालखी ४ ॥ मनोहरछन्द ॥ लङ्काते कलङ्कहीन मैथिली मँगायराम, मारिदशमत्थ दशरत्थ सूनु सरसे। बिपुल बियोग बह्नि ज्वाल जाल व्याकुलहै, बिग्रह बिशेष मैनबारि बुन्द बरसे॥ नाहिं अध ऊरध औ तिरछे निहारत हैं, मुकुलित दृगम्भो द्वन्द दिव्य दरसे। थितहै समाहित से चित में चकितभये, नहिं जित तित में बिलोकत स्वपर से ५ ॥ कविरुवाच। बरवैछन्द ॥ निजकुल परिजन लज्जामज्जित होय। सजल जलज इव लोयन दरशत दोय ६ जकित थकितसम सजन गहत गलान। उहि अवसर मधि उचरत बच हनुमान ७॥ हनुमानुवाच॥ मात मैथिली करिये ललित ललाम। प्रभु पुनीत पदपङ्कज पहुलप्रणाम ८॥ मनोहरछन्द॥ भंगुरभयो है अङ्ग चापके अलिङ्गनते, उपमा अनङ्गकी अभङ्ग सरसतहै। न्यस्त एकहस्त अक्ष अम्बुज ललितलसै, दूजैकर बीच शरपञ्च दरसत है॥ बाणव्रण अङ्कित बिराजै बीर राम बपु, मनौ बिजैलक्षि के नखच्छत लसत है। लङ्काभट मथिकै भये हैं थित प्राणनाथ, एरी मात क्यों न पदपद्म परसत है ९॥ कविरुवाच। बरवैछन्द॥ बायुतनय सुन्दर

बच सुनि सुनि सीय। चहचितही मधि चुनि चुनि पुनि पुनि पीय १०॥ अथ मैथिलीमानसविचारः। मनोहरछन्द॥ तनुभृत तीनताप छेदन छपाकरसो, क्रोधानल अम्भोधर उपमा अनूप है। सार औ असारके बिवेककौरु शोकहूको, भ्राजतभवन हर्ष बीजाश्रय कूप है॥ कालव्याल बिषको गोबिन्दहै गरुड़मणि, धैर्य बृक्षबनभूमि मोक्षप्रद रूप है। सुकृत समूहते समागम घटत राम, बिना पुण्य मिले नाहिं औधपुर भूप है ११॥ दोहाछन्द। कविरुवाच॥ इमि उर अन्दर आनिकै, मैथिलिमत्थमलिन्द। रघुनन्दनपद द्वन्द्व को, गहन चहत मकरन्द॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमैथिलीमानस विचारवर्णनंनामपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५०॥

कविरुवाच। चन्द्रायणछन्द॥ अलग होय श्रीराम बचन उचरन्तहैं। सुनहु महज्जन सकल सुसन्त महन्तहैं॥ श्रीरामउवाच॥ यद्यपि प्रिया पतिब्रता बिदित बिन दोष है। परहां। दिव्य शपथ बिन तदपि न मन संतोषहै १ पर मन्दिर मधि सिया रही चिरकाल है। दिव्य शपथ बिन परस करत किमि हाल है॥ यह निश्चय बच सुनत बिरञ्चादिक सबै। अरिहां। अम्बर ते अवतरत त्रिदशततिते तबै २॥ दोहाछन्द॥ प्रिया बिरह अर्दित यदपि, तउन लहत रतिराम। रम्यन की रमनीयता, सत्य स्वच्छधिय धाम ३॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ जलदि जाय जानकी, ज्वलित अति जातवेदजित। पावक पावक परम, बिनन्ती बर बितरत वित॥ मन बच तनु करि मोर, स्वपन जाग्रत मधि अबिरत। भयो होय पतिभाव, राम बिन अन्य पुरुषप्रत॥ तो दह दह दह मम देह द्रुत, दहन दुसह द्युति दाप है। सब सुललित फल भागीन के, कर्म साखि इक आप है ४॥

दोहाछन्द ॥ दुहिता दिव्य बिदेह की, इमिवनि बचन बिशेश । कीन्हो पूरण प्रज्वलित, पावक पुञ्ज प्रवेश ५ ॥ मनोहरछन्द ॥ कालानल जोहज्वाल सहितहै लीलासर, शोभित सरोजसीय बदन बिशुद्ध है । हर्ष औ अमर्षसने बानरके बृन्दबहु, फूफूत्कार शब्द सर्ब अम्बर निरुद्ध है ॥ परमप्रबुद्ध महाराज राज रामचन्द्र, बुद्धिके निधान जियजानी अविरुद्ध है । चारहू बदनते उचारतहैं चारमुख, पतिब्रत सीय शुद्धशुद्ध शुद्धशुद्ध है ६ ॥ श्रीरामउवाच । दोधकछन्द ॥ शुद्ध सिया मन कायक वायक । देवनते बरणै रघुनायक ॥ आननकौ उपमान अतुल्लित । पङ्कज पावक पुञ्ज प्रफुल्लित ७ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ दिव्य शपथ करि सिया, प्रबल पावकते निकसी । बहुल बरानन बिभा, बिदित बारिजवत बिकसी ॥ बनिता बिपुल बिनोद प्रीति प्रकटित प्रसेदकन । आवृतास्य श्रीराम, निकट निवसी समोद मन ॥ भलभक्ति भाव भ्राजित हृदय, करत न पद पङ्कज परस । करकङ्कण मणि पुनिरमणि, सममत प्रकटहु सुन्दरिसरस ८ ॥ मल्लिकाछन्द ॥ गौतमांगना प्रकार । चारु चित्तमें चिहार ॥ जानकी रही निहार । बार बार बार बारह हीय होत है सहर्स । पै न कीन पादपर्स ॥ भाव भाम हेरि राम । चित्तभो अनन्द धाम ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेमैथिली दिव्यशपथवर्णनंनामैकपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५१ ॥

कविरुवाच । मल्लिकाछन्द ॥ आइकै इतेकबीच । नाथ रामके नगीच ॥ हाथ जोरि होय दीन । बीनती सुकण्ठ कीन १ ॥ सुग्रीवउवाच । हरिगीतिकाछन्द ॥ लङ्केश कामिनि नेकनामिनि देह दामिनिसी दिपै । जननी पुरन्दरजीतकी निधिनीतिकी क्षितिनाछिपै ॥ बृन्दारकावलि बन्दिता मयनन्दिनी बन्दनकरैं । सेवित सुरासुर सुन्दरी

मन्दोदरी विनतीरैं २ ॥ बरवैछन्द ॥ मन्दोदरी निहोरत युगकरजोर। बिनयकरत गतकरिये अवधकिशोर ३ ॥ कविरुवाच ॥ सुनिसुग्रीव सखाके बचन रसाल। बोले दिनकर कुलमणि दीनदयाल ४ नम्रानन ह्वै रघुबर बचन बदन्त। महभागिनि मन्दोदरि कहा कहन्त ५ धन्य जनक रघुबर तव जननी धन्य। धन्यबंश नहिं निरखत नारी अन्य ६ साधु साधु सीताबर बिनवत तोय। अब आगे बिभु मेरी कसगतिहोय ७ देखि दशा अतिदुर्बल भरिजलनैन। कृपासिन्धु करुणाकरि बोलत बैन ८ ॥ श्रीरामउवाच ॥ पतिसँग सती न होनो निजकुल धर्म्य। भव्य बिभीषण भर्त्ता हरहर रर्म्य ९ अचल राज लङ्काचल करु चिरकाल। प्रबल बिभीषण भर्त्ता तव प्रतिपाल १० ॥ कविरुवाच। पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर रघुबर चित्तचीन। असुरेश बिभीषण भक्तिलीन ॥ किल कृपासिन्धु बिभु बन्धुदीन। लङ्काधिपत्य अभिषेक कीन ११ तदनन्तर बर पुष्पकबिमान। जानकी युक्त चढ़ि किय पयान ॥ संग्रामभूमि लागे दिखान। पेखहु मम प्यारी पञ्चप्रान १२ इहि ठांह भयो फणि पाशबन्ध। पुनि अत्र नचे कैयक कवन्ध ॥ बिधिशक्ति बक्षलक्ष्मण बिदार। इत आयो हनुगिरि द्रोणधार १३ शर दिव्य लषण हरकरि सभीत। प्रापत लोकान्तर इन्द्रजीत ॥ कीन्हो इत कण्ठाटविनिकृन्त। केनापि रात्रिचरपति असन्त १४ उपकृति हनुमत बरणत अशेष। जिहिकरि रावण भो भय बिशेष ॥ प्रहरत यह सुनि प्रज्वलत पाप। कृश कपि इत लज्जितभयो आप १५ लीलालङ्घित वह बाहिनीश। यह सुनत घुमावन लग्यो शीश ॥ सुनि रामदूत तनु छयो ताप। कलुषत ईर्षायुत भयो आप १६ भोप्रिये तोरहित हनूमन्त। प्रापतकिय दशमुख दुख अनन्त ॥ असुरेश अवस्था कौन कौन। क्षण क्षण मधि

पत जौन जौन १७ ॥ कविरुवाच ॥ सह बिस्मय सिय बूझत सु-गाथ। इतआये किमि तुम प्राणनाथ॥ तब राम सहर्षित हीय होय। बृत्तान्त सुनावनलगे सोय १८॥ श्रीरामउवाच॥ उपकार सकल सुग्रीव केर। हरषत हौं निज हिय हेरहेर॥ कान्ते निवास कान्तार कूर। प्रियजन बियोग उर आधिभूर १९ धनुमात्र त्राणरिपु मनुज भक्ष। तसबास सिन्धु दाहिने कक्ष॥ घन अघटित अघटित हुती घात। इत अरिप्रतिकृति की कहा बात २० रावण हरिगो बनराम तीय। इतनी रहिजाती कथा सीय॥ सुग्रीव सखा मम नाहिं होय। मिलतौ किमि बदला लैन मोय॥ २१॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीबूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि बैकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतारामचन्द्र संवादोनामद्विपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५२॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ इहि अन्तर मधि इन्दु, उदय लखि राम कहतबच। देविदोष दिनमणी, बियोगी मनुजयहै सच॥ दीक्षा-मणि शृङ्गार, मदन अहिमस्तक मणिवर। चूड़ामणि चण्डीश, कामतिय काञ्चिमणीरर॥ तिमितारा मौक्तिकहार मधि, नायक-मणि बिलसन्त है। तरुणीचकोर चिन्तामणी, उपमा याहि अ-नन्तहै १॥ कविरुवाच। पद्धरीछन्द॥ इकटक निरखत निशिनाथ शीत। प्राचीन बिरह बिभु व्यथा भीत॥ करयुग मूंदें दुइदृग स-लील। कीन्ही लीला कुतुकाक्षिमील २॥ प्रश्न॥ मैथिली के नयन श्रीरामचन्द्र ने क्यों मूंदे॥ ताको उत्तर॥ पहले तितदण्डक बिपिन बीच। मांग्यो हो मैथिलि मृग मरीच॥ मांगहि मृगाङ्कमृग लखि अयान। ताको करिहौं का समाधान ३॥ कविरुवाच॥ इहि अवसर सबजन निशाजान। सुखपूर्बक सोये यथाथान॥ परभात बिभी-षण उतै आय। अभिवन्दन कीन्हो शीश नाय ४॥ विभीषणउवाच।

षट्पदछन्द ॥ उपकारक अम्बुधी, सदा सेवित आरामगृह। बरबिक्रम रघुबंश, कथा तिहिबीच थली यह॥ देवछिन्न दशमस्त, मस्थदश अवलि अत्र है। शतमख दशशत नयन, मुदित अतिहोत यत्र है॥ इमि इकइक शिर शत शत नयन, प्रभु प्रमुदित कीन्हे परम। लङ्कानिवास किमि सुखद है, जहां अमित आसुरधरम ५॥ कविरुवाच।

पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर बिभु ततकालयोग। चामरछत्रादिक राज-भोग॥ संभान्य बिभीषण प्रेमठान। पुरअवध सिधावन किय पयान ६ सुग्रीव बदत भो सुनहु देव। रणभूमि दिपत यह दारि तेव॥ बहु बाजिब्रात खरखुर प्रहार। इत भये भूरि बिभु बारबार ७ जिहिं रज करि छायो आसमान। कलकण्ठ कबूतर जासमान॥ करिकुम्भ निकर भो मदस्राव। घनवृष्टि सदृश अति दुसहद्राव ८ बहु ठौर ठौर महँ मची कीच। सन्तत इहि संगर अवनि बीच॥ मन्दानिल परिमल मिलितजास। अद्यापि सद्यइव रण प्रकास ९ इमि सुनत बिमल सुग्रीव बैन। चितमधि रघुनन्दन चढ़्यो चैन॥ शुभ सेतु-बन्ध किय कज्ज उत्त। बैदेहि बदतभो अज्ज उत्त १० प्रिय प्राण-नाथ रघुबंशकेतु। तुम कित करवायो वहै सेतु॥ चित चकित होय इत उत चिहार। इतकिय उतकिय इति कह निहार ११ कित किय कित किय कहि बारबार। बूझत बैदेही बहुप्रकार॥ पट तानि लियो मुसकाय मन्द। तब सेतु बतायो रामचन्द १२ आनन बैदेही पूर्ण चन्द। लखि सिन्धु भयो आनन्द बृन्द॥ शुभ सेतु दाबिआयो उफान। इहि हेतु भई नहिं तासभान १३ घुंघटपट मुख शशि छिप्यो अत्र। अम्बुधि आयो निज थान यत्र॥ इहि हेतु सिन्धु मधि बहे सेतु। नहिं लख्यो लख्यो रघुबंशकेतु १४ ते दीसत हैं सिय सेतु शैल। औषध प्रकाशा जित नाहिं तैल॥ बिन्यस्त प्रथम

निशि निशि समूह। वानरन लगहि कपि बिमल व्यूह १५ गिरि सिन्धु सलिल मधि किय समान। सुखदरी कियो कीलालपान॥ द्रुत द्विगुणित निर्झर झरतजात। पयकरि पयोधि पूरत पिखात १६ मैनाक बन्धुते भो मिलाप। चुव प्रौढ़प्रीति चष अश्रुआप॥ कपि शिबिर नीर थित निरखि मोय। अगली सब बातैं स्मरण होय १७॥ शिखरणीछन्द॥ जबै दूरापाती बिबुध युवती नैन सुगहा। सरिद्वर्त्ताहारावलि बलय शोभा किय महा॥ तबैये माणिक्य स्फटिक कङ्काश्मनिसनो। अशून्यात्मासेतू बिलसत महानाटक मनो॥ १८॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनिमिनन्दिनी रामचन्द्रसंवादोनामत्रिपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५३॥

कविरुवाच। पद्धरीछन्द॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु। पहुँचे निजपुर रबिबंशकेतु॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत। मग मग मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय। अभिबन्दि अंघ्रि लीन्हे बँधाय॥ मुनिराज पट्ट अभिषेक कीन। सिय संयुत श्रीबर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला एक। सब लोकपाल अवली अनेक॥ उन उत्तमंगिबर अलङ्कार। मणिगण बटोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान। सिंजित मञ्जुल गिर करत गान॥ बिक्रम आडम्बर हेर हेर। लज्जत नहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छज्जत प्रताप। अरु भुवन चतुर्दश बिदित आप॥ यश जूह जासु जानत जनेश। अस राम अमल अभिधान वेश ५॥ कविरुवाच। तोमरछन्द॥ करिकोप अङ्गद आय। कपि ओघते अलगाय॥ उचस्यो बकारि बकारि। निज बालधी फटकारि ६ तिहुँलोक के तुम नाथ। रघुनाथ तव बच

नाथ ॥ मुहिं आप आयसु दीन। तस सबै कारज कीन ७ नित हीयमें लिय हेर। नहिं छांड़िये पितु बेर ॥ सुनि लेहु श्रीरघुबीर। अब हूजिये रणधीर ८ ॥ षट्पदछन्द ॥ सह सुकण्ठ सौमित्रि, श्वसनसुत आदि सुभटयुत। आवहु यह रणरङ्ग, रसा दरशावत बल उत ॥ निरपराध मम जनक, हन्यो तुम ताको फल अब। प्राप होहुगे आप यहां अविलम्ब सपदि सब ॥ करि याद बापको बैर बड़, इकक्षण धिय धीर न धरौं। दोर्दण्ड दूसरो लाउँ ना, इक कर करि मन्थन करौं ९ समर प्रतिज्ञा परम, महत सुनि अङ्गद आनन। क्षोभित अति कपि चमू, राम लक्ष्मण सहसानन ॥ अनपराध बध समझि, अखिल अनुकम्पा आई। ह्वैगइ गदगद गिरा, प्रचुर पुलकावलि छाई ॥ सौमित्रि तबै करजोरि युग, तारासुत सन्मुख गये। अपराध क्षमहु इमि उचरि बच, उर अनुकम्पांकित भये १० भई गिरा आकास, दास ह्वैहै बाली वह। राम होहिं मथुरावतार, निज सब परिकर सह ॥ सो हनिहैं उत इन्हैं, आप निज बदला लैहैं। अनुचित कृत जो कर्म, प्रभू ताको फल पैहैं ॥ असबाणी सुनि अम्बर उदित, उर अङ्गद प्रमुदित भयो। पुनि सकरुण लखि रामादि सब, अविनय तजि सविनय रयो ११ ॥ पद्धरीछन्द ॥ होयगो पितृबध प्रतीकार। सानन्द भयो ताराकुमार ॥ युग हाथ जोरि तजि कोप तत्र। आयो इतमें रघुराज यत्र १२ अति ह्वै सविनय नुति करत राम। सुनिलेउ दयानिधि धर्मधाम ॥ जिन जिनके तव गुण परत कान। तिन तिनके मस्तक डुलागान १३ चतुरानन चित मधि यह बिचार। इक शिरप्रति युग श्रुति किये सार ॥ अहिराजबरानन सहस चीन। चहिये द्विसहस तित इकन कीन १४ गुणग्राम राम सुनिहै जु शेष। डुलिहै तब उहि आनन अशेष ॥ मस्तक जिहि सब ब्रह्माण्ड भार। शिर कम्प भये ह्वै भंगसार १५

यह अभिप्राय विधि उरसि अस्ति । संसार रहौ सब सदा स्वस्ति ॥
इहि हेत विधाता बुद्धिमान । सहसानन किय नहिं एक कान ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेताराराततनय
स्तवनवर्णनोनामचतुःपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५४ ॥

कविरुवाच । पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर नुति किय हनूमान । सुनि लेहु राम करुणानिधान ॥ बरबिनय बदत बिभुयुत बिनोद । त्रय टूक होतहै पीलसोद १ आनहु उहि कच्छप अधोपात्र । अरु मध्य दण्ड अहिराज गात्र ॥ ऊपर भाजन भलभूत धात्रि । मच्छर मोहादिक महारात्रि २ शुभ सिन्धु सकल तित तैलपूर । बरमेरु बर्ति काहे जरूर ॥ चण्डांशुरोचि उहिं अर्चिआन । कज्जल अम्बर श्यामतामान ३ अरिओघ अमित उपमा पतङ्ग । इत आय करत निज अङ्गभङ्ग ॥ रावर प्रताप प्रभु पटु प्रदीप । बिख्यात निरन्तर सकल द्वीप ४ ॥ अथ कीर्तिवर्णनम् ॥ कैलासनिलय शिव सखा स्वच्छ । उपवेशन थल हिमिगिरि प्रतच्छ ॥ स्वर्नदि जिहिं गृह वापिका रूप । चन्द्रोपल दर्पण अति अनूप ५ क्षीराब्धी नवपूर्त्तक निहार । शुचि शेष देह दीपति विहार ॥ करि तितंटाककिल कोशलेश । बिस्तार जासु बहु देश देश ६ दशवदन दमन सिय रमण राम । कीरति हंसी तव धाम धाम ॥ भ्रम भूरि सकल पाई न थाप । सब लोक होय बिधि लोक प्राप ७ तित ब्रह्महंस को भयो सङ्ग । गर्भिणि ह्वै आई व्योम गङ्ग ॥ बिश अंकुर बर कुन्दावदात । जायो सुत हिमकर नभ दिखात ८ श्रीराम राम शृणु महाबीर । हम किमि गुण बर्णन करैं धीर ॥ कलकित्ति कामिनी मध्य भार । कस्तूरि तिलक सम नभ बिसार ९ निवसति नित प्रति नव निलय लच्छ । पुनि वचन बीच सरसुती स्वच्छ ॥ किहि कारण कीरति कुपित कन्त । नित भ्रमत

रहत दशहूँ दिगन्त १० दोर्दण्ड शुण्डि डिम डमतकार। जिहियुक्त प्रतापानिलज्वार॥ जर्जर कीरति पारद घटीजु। फुटि बुन्द बृन्द अवली अटीजु ११ भोगेन्द्रकितक तारक कितेक। कति क्षीरसिन्धु प्रालेय केक॥ कति पाञ्चजन्य कति करक कुन्द। कर्पूर कितक शशि कितक बुन्द १२ अत्युक्ति अकनि जिन कुपित होहु। मत मानहु मिथ्या बचन सोहु॥ तव तरुण प्रतापानलज्वाल। सोखित सबसागर जल बिशाल १३ पुनि पूरित अरि तिय नयन धार। अति खार सलिल भो इहि प्रकार॥ कोशलकिशोर को यश अपार। बहुबिबुधबृन्द पावैं न पार १४ सबिता खद्योतद्युतिमातनोति। जीर्णोर्णनाभि गृहशशी ज्योति॥ मच्छरसम तारागण अपार। इमि बरणत नभ तव यश बिहार १५ अम्बरअनेक भ्रमरायमान। इहिबिधि अनन्तयश जूहजान॥ मुद्रित मुखबाणी रही मोर। रघुबर बर महिमा महत तोर १६ सानन्द होय दिगबधू बृन्द। गिरि मेरु उलूखल किय स्वछन्द॥ सुरगङ्गा मञ्जुल मुसललीन। तव कीरति शाली निचयचीन १७ क्रीड़ित कीन्हो बहु बार बार। तिहि राशि यहै है गिरि तुषार॥ ताकेगण तारागण अनन्त। प्रद्योत सुधांशु प्रांशूभनन्त॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ इहि प्रकार निज हिय हुलसि, तवन कियो हनुमन्त। अङ्गद अमित अनन्दयुत, रघुबर भुज वर्णन्त॥ १८॥

इति श्रीकविगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीमद्धनुमत्कृतश्रीरामचन्द्र स्तवनवर्णनोनामपञ्चपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५५॥

अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ रावण यश शशि रवि, प्रताप धनु शिवमद अहिपति। चारहु थित एकत्र, प्रलयकारक अरिष्टअति॥ तासु शान्ति शुचिहेतु, खड्ग तव तीरथ सुन्दर। सकल भये ते नष्ट, जबै धाय्योकर रघुबर॥ मद धनुष तृतिय परतापं ये, भङ्गभये अरि

अङ्गसह। अवशिष्ट सुयश सो प्रथमही, सीय हरत भो नष्ट वह १ किञ्चित कोपकला, बिलास बहु बिभव बिभूषित। मञ्जुल मूरति राम, भवद्भुज भ्राज अदूषित ॥ रावण इन्द्रजिदादि, हनन करि कियो असुरबल। क्रन्दत फेरु शिवा, कफेरु कंक रटत बिचरंत बिटपभल॥ फुर प्रकट गुग्गुलू धूपधुत्र, क्रीड़त कपिफणि निश्वसत। आक्रोशत कोणप कुलबधू, भ्रमत द्वीपि रणभू हसत २ जामधि मिहिर मयूख, शिशिरसम सैन रेणु करि। बृत्रबैरि बाहिनी, बिलोकन कीन धीर धरि ॥ बासव जय जिन कियो, रावणादिक न भयोरुज। तेपि भये भयभीत, रावरे निरखत युग भुज ॥ जिन आश्रय पाय प्लवंग वर, सरितनाथ उत्तीर्ण तित। दोर्दण्डप्रचण्ड खण्डनठयो, अरि उद्दण्ड परचण्ड जित ३ ॥ कविरुवाच। पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर रघुबर मुदितहोय। आभरण यथोचित जोय जोय॥सुग्रीव सुग्रीवाभरण दीन। अङ्गद भुज अङ्गद चारु चीन॥हनुमन्त हीय दिय हीरहार। इमि यथायुक्त जिय धार धार ॥ सत्कार कियो सब कपिन केर। करि याद सकल हिय हेर हेर ४ बहु बिलसत बर बानर अनीक। किष्किन्धा जावन दई सीक ॥ सिय लषण युक्त बिभु यथायोग। उपभोग करत सम्राज भोग ५ ॥ कविरुवाच। मनोहरछन्द ॥ दाशरथी राम रबिबंशमें उदय भये, बनिता बिदेहसुता जासु योग जानी है। छद्मकरि बनते लेगयो लङ्क लङ्काधीश, करिकै कपीन्द्र सख्य पूर्ण प्रीति ठानी है॥ पर्बत के पुञ्जकरि कीन्हो सिन्धु सेतुबन्ध, असुर सँहारि औधपुरी वाहि आनी है। निज महारानी निकलङ्क पहिंचानी प्रभू, तदपि कलङ्ककी कहानी ना सुहानी है ६ ॥ कविरुवाच। बरवैछन्द ॥ वाल्मीकि मुनि आश्रम लषण निहार। सीय रखी श्रीरघुबर आयसु धार ७ तजि सिय

लक्ष्मण बिलपत बारम्बार। नैननिबहत निरन्तर अँसुअन धार ८ जो रण मधि न जिवावत मारुति मोय। लखते नहिं दारुण दुख लोय न दोय ६ कियो वैरबड़ हनुमत मोहिं जिवाय। हेरत हिय हहरत है हर हरहाय १० मृगपति गज्ज चकित चित मृगपशु जाति। प्रसव समय निज प्रमदा छिन न जहाति ११ अस निर्दय हिय रघुकुल भयो न होय। अरघुराम अस उर निज आवत मोय १२ रघुबर बिरह भयेहू जीवत सीय। नाहिं जनक जायेहू जानतजीय १३ जो न जियत उत रघुबर सीय बियोग। तबै बिधाता निर्दय निन्दायोग॥ १४॥

इति श्रीकविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेलक्ष्मण परितापवर्णनोनामषट्पञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५६॥

कविरुवाच। रोलाछन्द॥ भङ्ग कियो भवधनुष, समर किय जामदग्नि जय। गुरुगिर तजि बसुमती, सेतु कीन्हो पयोधि पय॥ दशकन्धर क्षयकार, रामको कोकहियो गुन। बर्णन करियो देव, कियो उहिं कथा शेषचुन १॥ षट्पदछन्द॥ श्रीरघुबर भुज प्रबल, बृहत ताण्डव सुन्दरबर। कारडसौरड ब्रह्मारड, भारड मरिडत प्रचरडपर॥ रण शिरनाटक महा, पाटवाम्बुधि पावन अति। आञ्जनेय प्रबिरचित, सुनत नर ह्वै निर्मल मति॥ वह सकल पापनिर्मुक्त ह्वै, पटुल पुरय पद प्रापहै। प्रामोति अखिल अरिभट बिजय, श्रीरघुबर जिमि आपहै २॥ दोहाछन्द॥ यह नाटक हनुमतरचित, निर्मल ब्रह्म निहार। अङ्क चतुर्दश कलित करि, भुवन चतुर्दश धार ३॥ षट्पदछन्द॥ पवनपुत्र यह चरित, नखर करि लिखित शिलन पर। बाल्मीकि लखि कह्यो, रत्नसम रखहु सिन्धुबर॥ आञ्जनेय तसकीन, यथा मुनि द्रुत आयसु दिय। तदवतार नृप भोज, कियो उद्धृत हर्षित हिय॥ अरु द्विज दामोदर मिश्र शुभ, ग्रथित कियो क्रमकरि

कलित। श्रीहनूमान नाटक महा, करहु बिश्वरक्षा ललित ४ ॥ अत्र श्रीहनुमन्नाटकेचतुर्दशोऽङ्कः १४ ॥ अर्धपद्धरीछन्द ॥ सोहत सुहिन्द। दूलह महिन्द ॥ राज पिपलोद। मानस प्रमोद ५ धीवर धरेश। रावत नरेश ॥ आयसु उचार। आशय निहार ६ जाहर जहान। नाटक महान ॥ हेरि हनुमान। हीय करिमान ७ पन्थ चितचीन। ग्रन्थ जु नवीन ॥ होइ इकत्यार। सो शिरसिधार ८ टीकम क-बिन्द। अङ्गज गोबिन्द ॥ नागर सुबिप्र। धीय धरिक्षिप्र ९ ये रचित ग्रन्थ। प्रेमिन सुपन्थ ॥ हे हियहुल्लास। श्रीबर बिलास १० संशय-बिलोपि। जो पढ़ै कोपि ॥ चेतसि चहन्त। बांछित लहन्त ११ श्रीरमण राम। धूलसत धाम ॥ पावत सुप्रेम। ह्वै सकल क्षेम १२ श्रीबर बिलास। अभिधान जास ॥ कीन्हे प्रकाश। सतपन उलाश १३ सतपन बिशेष। मेटत अशेष ॥ सतपन रखन्त। सतपन पिखन्त १४ ॥ सोरठाछन्द ॥ अति उदार गम्भीर, ललित लसत लखलूटमन। धर्मधुरन्धर धीर, दिन दूलह दूलह नृपति १५ दूलह नृप अभिराम, प्रतिपल पालक पुण्यपथ। निशिदिन राताराम, गुणज्ञाता दातार तरि १६ ॥ मनोहरछन्द ॥ पुर पिपलोद प्रजापुञ्ज प्रतिपाल प्रभु, दूलहनरेन्द परताप हिन्द छायो है। थोरे बयबीच जाने जोरहे सुयशजूह, सुगुण समूह स्वच्छ सुख सर-सायो है ॥ रावरो दरशपाय अमित अनन्द भयो, बुद्धि अनुसार यों गोबिन्द गुण गायो है। ऐसो और तेरे जोड़तोड़ को मरोड़-वारो, ठौर ठौर ठाकुर करोड़ में न पायो है १७ छायो है प्रताप पर-चण्ड खण्ड खण्डन में, सुयश समूह दूना स्वच्छ छबिछायो है। ऐसे गुण ज्ञान धिय ध्यान दिलजान जैसे, आरमान खानपान सुख सरसायो है ॥ गावत गोबिन्द सुनो दूलह नरेन्द आप, याहि

हेत डोड़िया सुबंश मनभायो है। ऐसो और तेरी जोड़ तोड़की मरोड़वारो, ठौर २ ठाकुर करोड़ में न पायो है १८ ॥ सवैयाछन्द ॥ तीरथ तोमतमाम किये जगदीश सुदर्शन काज सिधावत। ठौरन ठौर सनान किये बहुदान दिये निगमागम गावत ॥ ठाट मिलाप भयो भलठाट निराट बिनोद बिशेष बढ़ावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत १९ हाकम हुक्क उठाय दियो द्रुत काज समस्त स्वहस्त करावत। लन्दनलौं खलुख्यात बिख्यात रुसावधता अँगरेज सरावत ॥ गावत है गुण गोबिंद यों तित तस्करनाकित में सतरावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २० आमदको अवलोकत नित्य निहारि बिलोचन खर्च करावत। नीति बिहाय रखे नहिं पायँ सहायक सङ्कट में सरसावत ॥ याचकको लखिकै रखिकै गुण हेरि हमेश हिये हरसावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २१ मङ्गल सङ्ग उमङ्ग भरे जिहि अङ्गन अङ्गन में नित आवत। दान सुतोय तरङ्गनते निशिबासर ओघ अरिष्ट बहावत॥ गावतहै गुण गोबिंद यों जित याचक जे उर इच्छित पावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २२ गाहकहै गुणके गणको द्रुत दाहक दारिद दर्श दिखावत। बारिद सों बरसावत बित्त कबित्तनपै चुनि चित्त लगावत ॥ गावत है गुण गोबिंद त्यों कबि परिडत पेखि महामुद पावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २३ आवतही अति आदर अर्पि सुनावत मिष्ट गिरावत रावत। खानरुपान सबै सनमानदरावत मोद महा मनपावत ॥ गावतहै गुण गोबिंद यों जिहि के चितको कित पार न पावत। रावत साहब दूलहसिंह

समान जहान न आन लखावत २४ कोष कुबेर सुमेरु परैं करत-च्छिन बेर करैं न लुटावत । उच्चनते अति उच्च उदार गँभीरनते गहरो दरशावत ॥ गावत है गुण गोविंद यों जिहि के चितको कित पार न पावत । रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २५ ॥ मनोहरछन्द ॥ मञ्जुल मन्दील मनोरञ्जन समर्प्यो शीश, पुरट पटासो दिव्य दुपटा दिवायो है । गावत गोबिन्द बिप्र पावत महान मोद, रावत धरेश धीय पार ना हिं पायो है ॥ रोकरुपैचारसै विचार से रखेहैं गोद, दूलह नरेन्द्र चित्त बारि बरसायो है । हीय हरसायो सर्बसुख सरसायो प्रेमपुञ्ज परसायो उर अछक छकायो है १ दिल दरियाव दिव्य दूल दुलहसिंह, राजनीति रीतिमध्य सुमति सनीरहौ । साम दाम भेद दण्ड चारहु उपायनते, र्य्यत तमामहु गरीबरु गनीरहौ ॥ गावत गोबिन्द गिरा कीरति सुधाकरसी, देश देश दिपत दिगन्तलौं घनी रहौ । वाह वाह वाह गिरिनाद बादशाह तेरी, जौलौं शशि सूर तौलौं साहिबी बनी रहौ २ ॥ सोरठाछन्द ॥ पुर पिपलोद अधीश, पन्द्रह बीघा प्रेमकरि । क्षिति कीन्ही बखशीश, अति मञ्जुल मालोत्तरू १ श्रीबर श्रीहरि हेत, पुण्यारथ पुहुमी प्रवर । द्विज गहि आशिष देत, मनबांछित ह्वै सर्वदा २ शतगुनीस पैंतीस सह, आश्विन सित दल स्वच्छ । सौरि वार दशमी दिवस, पूरणभयो प्रतच्छ ३ ॥ इति ग्रन्थ पारितोषिक वर्णनम् ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थपरिपूर्ति वर्णनंनामसप्तपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५७ ॥

श्लोकः । श्रीरस्तु मङ्गलं चास्तु प्रशस्तं शस्तमस्तु ते ।
मनोभिलषितं चास्तु ह्यविच्छिन्नास्तु संततिः ॥ १ ॥

इति श्रीहनुमन्नाटकोऽर्थात्श्रीवरविलासः सम्पूर्णतामगादितिशम् ॥
